www.thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष - ६ | अंक-३ | मासिक-हिन्दी | जनवरी-२०१७ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४४

बोध दिवस पर पुण्यात्मा को शत-शत नमन्

वेद, धर्म, मानव जाति, महिला, शोषित-पीड़ित वर्ग, मूक प्राणी उद्धारक
राष्ट्र की स्वतन्त्रता के प्रमुख सूत्रधार, राष्ट्र पितामह

महर्षि दयानन्द सरस्वती

एक बार नहीं बार बार पढ़ें

इस अंक में

- मेरा ऋषि बोध प्राप्त कर्ता नहीं बोध प्रदाता था
- हमारी महान विभूतियां... हितैषी ऋषि ऋषि विश्वकर्मा
- स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं वेद विषयक विचार गुरु-शिष्य मिलन
- दयानन्द का आह्वान- वेदों की ओर लौटो, वेदों का सन्देश-मनुर्भव
- अद्भुत गुरु विरजानन्द सरस्वती जी अद्भुत शिष्य दयानन्द जी
- ऋषि बोध से बोध वैदिक शरीर विज्ञान वेदवाणी के ज्ञान से लाभ
- अनर्थों से बोझिल मानसिकता सरदार पटेल का हास्य विनोद
- होली के स्वरूप को जानकर विवेकपूर्ण मनाना समीचीन

... और भी बहुत कुछ

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज पिपलिया मण्डी द्वारा आयोजित अष्ट दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक सत्संग सम्पन्न की चित्रावली

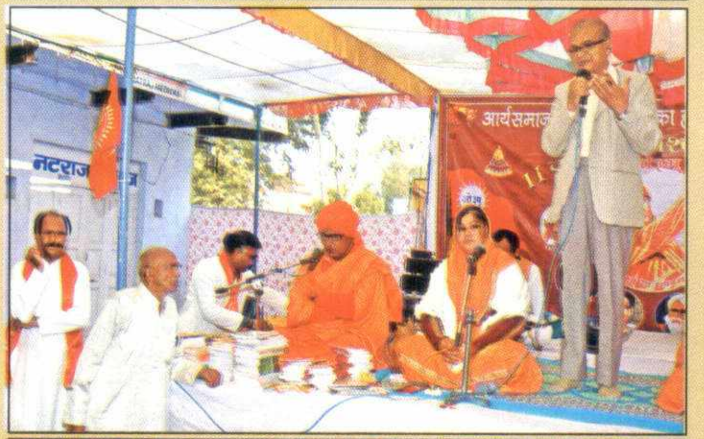

www.thearyasamaj.org

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-६, अंक-३
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ जनवरी, २०१७
आर्ष तिथि-माघ मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, ११८
कलि संवत्- ५,११८
विक्रम संवत्- २०७३, दयानन्दाब्द-१९३

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति	२५/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
करंट खाता क्रमांक- ३२८५९५९२४७९
आईएफएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
मेरा एक विनम् निवेदन	खुशहालचन्द्र आर्य	०४
मेरा ऋषि बोध प्राप्त कर्ता नहीं, बोध प्रदाता...	सम्पादकीय	०५
हमारी महान् विभूतियां- हितैषी ऋषि	अम्बालाल विश्वकर्मा	०७
- ऋषि विश्वकर्मा	शिवनारायण उपाध्याय	०९
स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं वेद विषयक...	शिवनारायण उपाध्याय	११
दयानन्द का आह्वान-वेदों की ओर लौटो...	डोंगरलाल वर्मा	१२
देव दयानन्द शरणम् गच्छामि	अभिमन्यु खुल्लर	१४
गुरु-शिष्य मिलन	देवनारायण भारद्वाज	१६
अद्भुत गुरु विरजानन्द सरस्वती जी अद्भुत...	उम्मेदसिंह विशारद	१७
ऋषि बोध से बोध	नरेन्द्र आहूजा	१९
वैदिक शरीर विज्ञान	कृपालसिंह वर्मा	२०
वेदवाणी के ज्ञान से लाभ	मृदुला अग्रवाल	२१
तब और अब	ओमप्रकाश बजाज	२२
अनर्थों से बोझिल मानसिकता	रामफलसिंह आर्य	२३
सरदार पटेल का हास्य विनोद	देशराज आर्य	२५
वासन्ती होली नव शस्येष्टि	आ. रामज्ञानी आर्य	२६
होली के स्वरूप को जानकर विवेकपूर्ण...	मनमोहन कुमार आर्य	२७
मिलकर होली पर्व मनाओ	पं. नन्दलाल निर्भय	२९
भारत बदल रहा है आगे बढ़ रहा है	नरसिंह सोलंकी	३०
देवपीयु नष्ट हो जाते हैं	महात्मा चैतन्य मुनि	३१
देश का १३वां राज्य उत्तरप्रदेश	इन्द्रदेव गुलाटी	३२
विश्व की प्रमुख समस्या आतंकवाद	नरसिंह सोनी	३३
बढ़ो जवानों तुम्हारे पीछे सारा हिन्दुस्तान है	डॉ. लक्ष्मीनिधि	३३
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियां	संकलित	३४
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	३६
वैदिक संसार को आप महानुभावों का सहयोग	वैदिक संसार	४०
शोक-सूचनाएं	संकलित	४२

www.thearyasamaj.org

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

वीलु चिदारूजत्नु भिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः
अविन्द्र उस्त्रिया अनु।। ऋ. १.६.५

भावार्थ -इस मन्त्र में उपमालंकार है। जैसे बलवान् पवन अपने वेग से भारी-भारी दृढ़ वृक्षों को तोड़-फोड़ डालते और उनको उपर नीचे गिराते रहते हैं, वैसे ही सूर्य्य भी अपनी किरणों से उनका छेदन करता रहता है, इससे वे ऊपर नीचे गिरते रहते हैं। इसी प्रकार ईश्वर के नियम से सब पदार्थ उत्पत्ति और विनाश को भी प्राप्त होते रहते हैं।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना।

"मेरा एक विनम्र निवेदन"

- खुशहालचन्द्र आर्य -
कोलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
चलभाष - ०९८३०१६५७९४

बहुत समय हो गया हमें, अपने स्वार्थवश परस्पर लड़ते-लड़ते।
प्रसन्नता है, ईश्वर की अपार कृपा से, अब तो सभी आर्य नेता चेते।।

"खुशहाल" कहना चाहता है, आर्य जागत् के सभी नेताओं को एक बात।
जो आर्य समाज की बिगड़ी हालत देख, रोता है दिन-रात।।

यदि आप चाहते हो करना आर्य समाज का कल्याण व भला।
तो फूट मिटाकर, एक हो जाओ, यही है मेरी नेक सलाह।।

जब तक नहीं होगा सच्चे आर्यों का एक महान सार्वदेशिक संगठन।
तब तक कितना ही कर लो, नहीं चलेगा आपका अलग-अलग गठबन्धन।।

आखिर इसका एक ही ईलाज है, अच्छे आर्यो की एक सार्वदेशिक का बन जाना।
मुझे पूर्ण विश्वास है, सफल होगा हैदराबाद में सब नेताओं का एक हो जाना।।

ईश्वर नेताओं को सद्बुद्धि देवे, सीखें वे एक दूसरे को गले लगाना।
तभी महर्षि का स्वप्न साकार होगा और विश्व पुनः करने लगेगा हमारी सराहना।।

आप सभी आर्यों! जा रहे हो हैदराबाद, कर लो प्रतिज्ञा पूरी करेंगे बात आज की।
एक सार्वदेशिक बनाकर रहेंगे और पुरानी छबि बनायेंगे पुनः आर्य समाज की।।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के फरवरी २०१७ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

१३ गते	तपस्य मास १९३८ शक स.	फाल्गुन शुक्ल षष्ठी	२ फरवरी	स्वामी श्रद्धानन्द जयन्ती
१५ गते	तपस्य मास १९३८ शक स.	फाल्गुन शुक्ल अष्ठमी	४ फरवरी	सत्येन्द्रनाथ बोस पुण्यतिथि
१६ गते	तपस्य मास १९३८ शक स.	फाल्गुन शुक्ल नवमी	५ फरवरी	कृतिका-२७:०४
२० गते	तपस्य मास १९३८ शक स.	फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी	९ फरवरी	प्रदोष
२१ गते	तपस्य मास १९३८ शक स.	फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी	१० फरवरी	क्षयतिथि पूर्णिमा-३०:०५, नवान्न शस्येष्टि पर्व (होली)
२६ गते	तपस्य मास १९३८ शक स.	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी	१५ फरवरी	चित्रा-२५:१६, सरदार वल्लभभाई पटेल पुण्यतिथि
२७ गते	तपस्य मास १९३८ शक स.	फाल्गुन कृष्ण पंचमी	१६ फरवरी	डॉ. मेघनाद साहा पुण्यतिथि
२९ गते	तपस्य मास १९३८ शक स.	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी	१८ फरवरी	मीन सक्रान्ति- १७:०१, शहीद मदनलाल ढींगरा एवं स्वामी रामकृष्ण परमहंस जयन्ती
३० गते	तपस्य मास १९३८ शक स.	फाल्गुन कृष्ण अष्टमी	१९ फरवरी	छत्रपति शिवाजी जयन्ती, गोपालकृष्ण गोखले पुण्यतिथि

शेष विवरण नवीन पंचांग आने पर प्रकाशित किया जाएगा। आप भी नया श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् (पंचांग) मंगवाना चाहते हो तो आचार्य दार्शनेय जी लोकेश से सीधे सम्पर्क कर मंगवाये। अतिशीघ्र नया वैदिक पंचांग छपकर आ रहा है। सम्पादक

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

मेरा ऋषि बोध प्राप्तकर्ता नहीं, बोध प्रदाता था

महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग में उस महान अवतारी पुरुष का नाम है जिसने परतन्त्रता के काल में अज्ञानता के घोर अन्धकार के समय में इस धरा पर जन्म लिया। **जब धर्म के नाम पर अधर्म का साम्राज्य अपनी जड़ें जमा चुका था। परमपिता परमात्मा की वाणी वेद को लोग भूल चुके थे।** वेद के नाम पर महिधर, उव्वट, सायणाचार्य तथा मैक्समूलर जैसे आधे-अधूरे पण्डितों के वेद भाष्य वेदों के गूढ़ अर्थों के साथ अनर्थ कर वेदों की गरिमा को और रसातल में पहुंचाने का पापाचार कर रहे थे। धर्म के आधार पर समुद्री यात्रा वर्जित थी क्योंकि कहीं ऐसा न हो लोग समुद्री यात्रा कर बाहर जाकर बोध प्राप्त कर लें और हमारे धर्माधिकारियों की पोल खुल जावे। मनुष्य की उत्पन्नकर्ता तथा उसकी निर्माणकर्ता जिसे माता नाम का सर्वोच्च स्थान-सम्मान प्राप्त है कि अत्यन्त दयनीय दशा उस समय थी। उस **नारी शक्ति के साथ धर्म के नाम पर क्रूर अत्याचार-पापाचार धर्म के नाम पर किया जा रहा था। मातृशक्ति के लिए शिक्षा के दरवाजे बन्द थे। वेद मन्त्र पढ़ना-बोलना तो दूर उन्हें सुन लेना भी पाप की श्रेणी में आता था।** गलती से अगर वेद वाक्य उसके कानों पर पड़ जाए तो गरम पिघला हुआ सीसा उसके कानों में डाल देने का विधान था। उस मातृ शक्ति के जन्म लेते ही अपशगुन हो जाता था। उसे जन्मते ही भिन्न-भिन्न तरीकों से इस संसार से विदा कर मार दिया जाता था। इस कार्य हेतु इस मातृशक्ति वर्ग की ही बड़ी-बूढ़ी जिसमें उस नवागत अतिथि की दादी भी शामिल होती थी अत्यन्त पारंगत होती थी इस कार्य को कुशलता पूर्वक सम्पन्न कराने के लिए कुशल दाइयां होती थी जो इस घोर कुकर्म का पुरस्कार भी पाती थी। बाल विवाह प्रथा, सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, देवदासी प्रथा आदि कुप्रथाओं के द्वारा महिलाओं के साथ क्रूरतम् शोषण दुराचार उसके अपनों के द्वारा ही धर्म के नाम पर किया जाता था। खेलने-खाने की अबोध अवस्था में ही गुड्डे-गुड्डियों की तरह गोद में बैठाकर ब्याह दी जाती थी। संक्रमित महामारियों का युग था वह, जिसने अपने जीवन साथी का मुंह तक नहीं देखा, जिसे अपने जीवन साथी की शक्ल तक याद नहीं, फिर भी उसके मर जाने पर वह बाल विधवा का तमगा पाती थी, अनेक दशा में वह अपने पति को साथ जल मरने को धर्म के नाम पर महिमा मण्डन कर उकसा कर देवी बता मार दी जाती थी। बच भी जाती थी तो ठिकाना था उसका वृन्दावन, पिता-भाई भी मुंह फेर उसे पोपो के हवाले कर आते थे, क्योंकि घर में रहेगी तो विधवा का मुंह देखने से भी अपशगुन होता था। वृन्दावन में छोड़ी गई वे अभागी अबलाएं हो अथवा देवदासी के नाम पर दान में प्राप्त की गई अबोध कन्याए उन धूर्त-मक्कारों की काम-पिपासा शान्त करने का माध्यम होती थी, जो बड़े-बड़े तिलक लगाकर धर्माधिकारी बन जनसामान्य को धर्म-अधर्म का पाठ पढ़ाते थे, जिनके स्वयं के जीवन में धर्म नाम मात्र को भी नहीं होकर लोगों की खून-पसीने से कमाई गई धन-सम्पदा को धर्म के नाम पर हड़प कर जो मौज उड़ाते थे, जिन्हें **महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में 'पोप' नाम दिया है।**

घोर अन्धकारवादी मानव-मानव में भेदकारी जातिवादी युग था। ब्राह्मण के घर में पैदा होते ही ब्राह्मण का लाइसेन्स बगैर योग्यता अर्जित किए मिल जाता था। घोर सामन्तवादी युग की जड़ें अभी भी शेष थी, देश की बागडोर अंग्रेजों के हाथों में अवश्य थी किन्तु धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक व्यवस्था में सामन्तों-महन्तों का साम्राज्य था। ब्राह्मण-क्षत्रिय बनता नहीं था, पैदा होता था तथा ब्राह्मण का कहा गया वाक्य **'ब्रह्मवाक्य'** होता था, उसकी उपेक्षा करना किसी के वश में नहीं था, क्योंकि क्षत्रिय (शासक) उसका संरक्षक होता था। शूद्र (अज्ञानी) माता-पिता से जन्म लेना सबसे बड़ा अपराध था। उसका जीवन पशु से भी निम्न कोटी का होता था। पशु के आने-जाने के लिए गांव के सभी रास्ते खुले होते थे वे अपना सिर उठाकर भी चल सकते थे, मन में प्रसन्नता होने पर उछल-कूद भी कर सकते थे, किन्तु मनुष्य जाति में जन्में व्यक्ति जिन्हें पोपो द्वारा अछूत का पट्टा दे दिया जाता था की परछाई भी अगर अगड़ी वालों पर पड़ जाए तो वे संक्रमित हो जाते थे, उन्हें अपनी शुद्धि करना होती थी और कोप भाजन बनना पड़ता था। उस व्यक्ति को जो तथाकथित शूद्र है, अछूत है को, चाहे वह शरीर और आत्मा से कितना ही शुद्ध क्यों न हो। उसे अगड़ो (ठाकुर-ब्राह्मणों) के सामने गांव के मुख्य रास्तों पर, सर उठाकर चलने की अनुमती नहीं थी। वह चाहे जितना इन अगड़ों की सेवा करे, सुश्रुषा करे, इनकी शुद्धता-सफाई का जिम्मा उठाये, इनका मैला तक सर पर उठाये, इनके मरे जानवरों को उठाकर ठिकाने लगाये, इनके पाँवों को सुरक्षित रखने हेतु जूते बनाये, गली-मोहल्ले की साफ-सफाई करे, नालियों को साफ करें, किन्तु जब वह गली में से निकले तो उसके पाँवों के निशान मिट जाना चाहिए, क्योंकि वे पाँवों के निशान भी अछूत के पाँवों के निशान होने से अछूत है, इसके लिए उसे अपने पीछे झाड़ू बाँधकर चलना चाहिए जिससे उसके पाँवों के निशान भी मिटते जाएं। इतना सब कुछ होने पर भी उसके शिक्षा-दीक्षा के द्वार बन्द थे। उसे पढ़ाये कौन और वह पढ़कर करेगा भी क्या, रहेगा तो वह शूद्र का शूद्र ही, ब्राह्मण तो बनने से रहा? उसे गांव में मकान बनाकर रहने का अधिकार नहीं, गांव के बाहर सुविधाओं से दूर जैसे-तैसे घास-फूस की झोपड़ी बनाकर नारकीय जीवन जीने को वह विवश होता था। उदर पूर्ति हेतु भी श्रीमानों पर आश्रित होता था। श्रीमान बापजी होते, मालिक होते थे। और यह सब होता था धर्म

के नाम पर। धर्म को ढ़ाल बनाकर। मनुष्य द्वारा मनुख्य के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार तथाकथित जन्मना जाति व्यवस्था के नाम पर किया जाता था, तथाकथित शूद्र परिवार में जन्म होना सबसे बड़ा अपराध था उसे धार्मिक स्वतन्त्रता भी नहीं थी। परमपिता परमात्मा की वाणी वेद जिसे परमात्मा ने समस्त मानव जाति के कल्याण हेतु दिये हैं किन्तु वेदों को भी धर्म के नाम पर शूद्रों से विमुख कर दिए गए। अगड़ों द्वारा बनाई गई धर्म की दुकानों (मन्दिरों) में शूद्रों का प्रवेश भी वर्जित था। उन्हें अपने जीवन में प्रसन्नता व्यक्त करने, नाचने, गाने का अधिकार सार्वजनिक रूप से नहीं था। करना भी हो तो गुप-चुप करो अन्यथा दण्ड के भागीदार बनोगे, बारात आदि अगड़ों के मुहल्ले में से अगड़ों के सामने से नहीं निकलेगी, क्योंकि पिछड़ों (शूद्रों) को घोड़े आदि की सवारी करने का अधिकार नहीं होता था। घोड़ा तो परमात्मा ने सम्भवत: अगड़ों के लिए ही पैदा किया है। पेयजल स्त्रोतों पर भी तथाकथित जन्मना सवर्णों का अधिकार था। जन्मना जातिवाद के नाम सेवा कार्यों में लगे अनेक वर्गों जिनमें शिल्पकर्मी, सैनी (माली), नाई, कुम्हार आदि को भी अछूत व्यवहार कर उनका शोषण उत्पीड़न किया गया।

जिस वैदिक धर्म संस्कृति में तैतिस कोटी देवता में एक देवता प्रजापति अर्थात् '**यज्ञ**' है इस यज्ञ को '**यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म:**' अर्थात् संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा गया है। '**स्वर्ग कामो यज्ञेत**' अर्थात् - स्वर्गाभिलाषी लोग यज्ञ करे उस पवित्र प्राणी मात्र के हितकारी यज्ञ में मूक पशुओं को बलि शब्द का अर्थ के स्थान पर अनर्थ कर मारकर डाला जाने लगा। मनुष्य जाति के हितकारी गो आदि मूक प्राणियों के हितार्थ जिस वैदिक धर्म संस्कृति में बलि वैश्व देव यज्ञ का विधान है यहां बलि शब्द का अर्थ मूक पशु-पक्षियों का भी भाग (भोजन) निकालना है का अर्थ उन्हें मारकर यज्ञ में डालने से देवताओं का प्रसन्न करने का लगाया गया। धर्म के नाम पर अज्ञानी लोगों द्वारा कपोल-कल्पित पुस्तकें लिखकर हमारे महापुरुषों को कहीं का नहीं छोड़ा। योगिराज श्रीकृष्ण को भोगिराज बना दिया गया। रामायण में उत्तरकाण्ड प्रशिप्त कर राम को सीता के प्रति क्रूर व्यवहार का दोषी ठहरा दिया गया। जिसके आधार पर ही वरिष्ठ राजनेता एवं प्रखर बुद्धिजीवी ख्यातनाम वरिष्ठ अधिवक्ता श्रीराम जेठमलानी भी राम को बहुत बुरे पति तक कह गये तथा ख्यातनाम शुद्ध व्याकरण विद् वेदोक्त विद्वान महानीतिविज्ञ हनुमान जी जिनकी रामकाल में सर्वत्र पुछ थी जो वन्नर (वन में वास करने वाली) जाति के थे को बन्दर बना, बैल की पूंछ लगा दी गई।

ऊपर वर्णित कारणों से हम पतन की गर्त में गिरे और इस धरा पर निराकार ईश्वर पर आस्था रखने वाले एक वैदिक धर्म के स्थान पर अनिश्वरवादी मत-पन्थों का अभ्युदय हुआ। निराकार ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना- उपासना के स्थान पर मूर्ति पूजा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ, अब ईश्वर क्रय-विक्रय की वस्तु हो गया। प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखने वालों में घृणावादी जातिवाद का चलन होकर मनुष्यों को नारकीय जीवन जीने पर विवश कर दिया गया। मातृशक्ति को नर्क का द्वार, पैरों की जूती न जाने क्या-क्या बना दिया गया। जो आर्य चक्रवर्ती साम्राज्य के धनी थे, जिनसे अनार्य भयभीत रहते थे। उन अनार्य मतान्ध मुट्ठीभर विधार्मियों ने हम पर क्रूर अत्याचार, अनाचार, दूराचार किए। हमारी धन-सम्पदा यहां तक कि हमारी स्त्रियों को भी लूटा-खसोटा तथा गुलाम बनाया और हमें अपनी अधिनता में सैकड़ों वर्षों तक रखा। अमानवीय अपनी विचारधाराओं को हम पर बलात् थोंपा उन्हें येन-केन-प्रकारेण विस्तारित किया। हमें खण्ड-खण्ड किया। हमारे धर्म, ग्रन्थ, गौरव, सम्पत्ति, गरिमा, प्रतिष्ठा को हर प्रकार से नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रयास किया और कर रहे हैं और एक हम हैं कि महर्षि दयानन्द जैसी विभूति के अपने प्राणों को होम कर बोध करवा देने के उपरान्त भी हम आज उसे स्थिति से उबरने के स्थान पर गर्त में गिरने के कार्यों को कर रहे हैं।

और सबसे अधिक विडम्बना का विषय यह है कि यह सब उस वैदिक धर्म के अनुयायियों ने धर्म के नाम पर किया और कर रहे हैं, जो वैदिक धर्म वसुधैव कुटुम्बकं की धारणा धारी मानव मात्र को मनुष्य (मननशील) बनाता है। जो सत्य-असत्य अर्थात् वास्तविक धर्म-अधर्म का पाठ पढ़ाता है। घोर धर्मान्ध अन्धकारवादी युग में जन्मी दिव्यात्मा को बोध कैसे हो सकता है तथा कौन उसे बोझ करा सकता है? वे दो बोध (ज्ञान) की भण्डार थी। उन पर तो परमपिता परमात्मा की असीम कृपा थी तभी तो वह

महर्षि दयानन्द सरस्वती

दण्डी स्वामी को, श्रेष्ठ पात्र न पाया होता,
कलुषित साया, न भारत से मिटाया होता।

ज्ञान पाकर के, पाखण्ड सभी मिटा डाले,
राजा-महाराजाओं को, एक सूत्र कर डाले।
ज्ञान वेदों का, फिर से न बताया होता,
कलुषित साया, न भारत से मिटाया होता।

मिटा अविद्या, आर्ष ग्रन्थों का गुणगान किया,
हक शिक्षा का दिया, नारी का सम्मान किया।
न होता वेदारम्भ, न वेद पढ़ाया होता,
कलुषित साया, न भारत से मिटाया होता।

हो के निर्भिक वो, पाखण्ड-खण्ड करते गये।
विरोधा-स्वार्थी, षड्यन्त्र उनसे करते गये।
पन्द्रह बार गरल गर, न पचाया होता।
कलुषित साया, न भारत से मिटाया होता।

विद्व्ज्जन, त्यागी और सत्पुरुषों का सम्मान किया।
अहित चाहने वाले को, अभय दान दिया।
दयालु ऐसा, न भारत में जो आया होता।
कलुषित साया, न भारत से मिटाया होगा।

अल्प अवधि में बहुत कार्य कर गये स्वामी,
सो गये सुख की नींद, मगर राष्ट्र जगा गये स्वामी।
सत्यार्थ प्रकाश जो घर-घर न पढ़ाया होता।
कलुषित साया, न भारत से मिटाया होता।

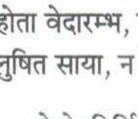

राधेश्याम गोयल 'श्याम'
न्यू कालोनी कोदरिया (महू)
चलभाष- ९६१७५९७९१०

www.thearyasamaj.org

दिव्यात्मा परमपिता परमात्मा के ज्ञान वेद को जग में पुनर्स्थापित करने की अधिकारी बनी।

अन्यथा शिवलिंग पूजा शैव मत के प्रारम्भ काल से ही हो रही है। और तभी से चूहे तो शिवलिंग पर चढ़ रहे है और वह सब तब से लगाकर आज तक कर रहे हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए। दयानन्द के पूर्व भी अनेको ने चूहों को शिवलिंग पर चढ़ते देखा होगा, उन्हें बोध (ज्ञान) क्यों नहीं हुआ कि यह चेतन कल्याणकारी शिव नहीं जड़ पत्थर है। और दयानन्द के पशचात तो इन शिवलिंगों की संख्या में कमी के स्थान पर वृद्धि ही हुई है और इनकी सेवा में इनके अनेक भक्त जो इन्हें रगड़-रगड़कर नहला रहे हैं। घंटे-घड़ियाल बजाकर इसे रिझा रहे हैं और श्मशान की भस्म तक से लेकर न जाने कौन-कौन से आर्तनाद (आरती) कर रहे हैं। उन्हें क्यों बोध नहीं हो रहा कि यह जड़ पत्थर है यह महमूद गजनवी से अपनी रक्षा नहीं कर पाया तो हमारी रक्षा क्या खाक करेगा? बोध का अधिकारी तो वही होगा जिसे परमपिता परमात्मा ने बोधाधिकारी बनाया हो। अज्ञानता के अन्धकार में पड़ी मानव जाति को बोध प्रदान करने हेतु उस दिव्यात्मा को परमपिता परमात्मा ने अथाह बोध (ज्ञान) के साथ इस संसार में भेजा तभी तो वह अबोध बाल्यावस्था में भी सामान्य सी चूहें वाली घटना को स्वीकार नहीं कर पाये और माता-पिता घर-परिवार त्याग कर सच्चे ईश्वर की प्राप्ति की ओर चल पड़े। जिनका एक मात्र साथी था सत्य। जिनका एक मात्र लक्ष्य था अज्ञानता के अन्धकार में पड़ी मानव जाति को उसके परमपिता परमात्मा के ज्ञान का बोध कराना, तभी उन्होंने सन्देश दिया **'आओ वेदों की ओर लौट चलें'** वे केवल अपनी मुक्ति से संतुष्ट न थे, उन्होंने सम्पूर्ण संसार को मुक्ति का बोध कराया। इसके लिए उन्होंने किंचित मात्र भी प्राणों की चिन्ता नहीं की। जिसके घर भी रुके उसी घर की सफाई की, किसी की चापलुसी नहीं की। सत्य स्पष्ट वक्ता के रूप में उनका कोई सानी नहीं। उन्होंने राजा-महाराजाओं और देश की जनता को बोध कराया जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि और उत्तम होता है। वे त्रिविध उन्नति के पक्षधर थे। महर्षि दयानन्द बालक मूलशंकर के रूप में घर से अकेले निकले थे। लक्ष्य मात्र था मैं कौन हूँ, कहां से आया हूँ, कहाँ जाना है और मुझे करना क्या है? आप अपने पथ से कभी नहीं डिगे

हितैषी ऋषि

एक ऋषि हितैषी आया था,
वह टंकारे में जाया था।
उसने नाम मूलजी पाया था,
निराकार प्रभु मन भाया था।।...

सत्य से सम्बन्ध बनाया था,
परिवार से मोह हटाया था।
त्यागी बन घर से धाया था,
वह ऋषि दयानन्द कहाया था।।...

विरजानन्द जी से पढ़ने आया था,
वेदों का धर्म बताया था।
सत्यार्थ प्रकाश मन भाया था,
सत्य से असत्य भगाया था।।...

धर्म का मर्म सिखाया था,
न्याय धर्म से कराया था।
धर्म से विज्ञान दिखाया था,
न्याय दया से जुड़ाया था।।...

शान्ति का मन्त्र पढ़ाया था,
मिलकर रहना सिखाया था।
ऋषियों का ज्ञान लुटाया था,
संस्कृत को सम्मान दिलाया था।।...

एक परमेश्वर विश्वास जगाया था,
निराकार ब्रह्म मन भाया था।
अन्धविश्वास मूल मिटाया था,
पाखण्ड का गढ़ ढाया था।।...

दुर्व्यसनों को दूरित बताया था,
बुराईयों से हमें बचाया था।
क्रान्ति राष्ट्र में लाया था,
वह समाज सुधारक कहाया था।।...

महर्षि आर्यों के मन भाया था,
दयालु ने हमें बचाया था।
स्वदेशी का पाठ पढ़ाया था,
भारत हित मन भाया था।।...

राष्ट्र गौरव बहुत बढ़ाया था,
हमें स्वाभिमान सिखाया था।
सन् सत्तावान में बिगुल बजाया,
स्वराज शंखनाद सुनाया था।।...

संगठन का पाठ पढ़ाया था,
फूट को दूर हटाया था।
पिछड़ों को आगे बढ़ाया था,
बिछुड़ों को गले लगाया था।।...

वसुधा को परिवार बताया था,
सबको मानव बन्धु बनाया था।
भारत नैया का खिवैया था,
गौ-अनाथों को बचाया था।।...

कई बार विष खिलाया था,
फिर भी बुरा नहीं मनाया था।
अपने घातक को भी बचाया था,
दे मार्ग व्यय दूर भगाया था।।...

ऋषि भारी हितकारी आया था,
पुजारी मानवता का कहाया था।
ऋषि विश्वगुरु कहलाया था,
सबको निस्वार्थी ज्ञान बताया था।।...

सत्य धर्म का मूल बताया था,
अधर्म को दूर हटाया था।
आर्य संस्कृति को बचाया था,
वेद ज्ञान विश्व को सुनाया था।।...

अम्बालाल जी विश्वकर्मा
सेवानिवृत शिक्षक
बरखेड़ा पन्थ, जनपद-मन्दसौर
चलभाष : ०८९८९५३२४१३

www.thearyasamaj.org

कोई मत-पन्थ सम्प्रदाय का प्रारम्भ नहीं किया, कोई चेले-चेली नहीं बनाए जो बात कहीं वेदानुकूल ही कहीं। उसे भी मानने के लिए किसी के साथ जोर-जबरदस्ती नहीं की। उनकी स्वैच्छा पर छोड़ दिया कि वेदानुकूल प्रतित हो तो मानें अन्यथा वेद से मिलान कर वेदानुकूल हो तो मानें अन्यथा मेरी भी बात मत मानो। महर्षि दयानन्द ने १८७५ में आर्य समाज की स्थापना शुभ चिन्तकों के आग्रह पर इस शंका के साथ की थी कि कहीं आर्य समाज भी आगे चलकर एक सम्प्रदाय न बन जाए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन के २०वर्षों के अल्प कार्यकाल में वैदिक धर्म तथा राष्ट्र की अनुपम सेवा अनेक कष्टों को सहकर की, जीवन में १७ बार प्राणघातक वार झेले और अन्त में भी विषपान कर हमें वेदवाणी का अमृत पान करा गए। उनके जीवन में ऐसे भी प्रसंग आए जब विधर्मी शासकों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में उन्होंने उनके मतों की पोल का बोध उनको निर्भिकता से करवाया और किसी अनिष्ट की आशंका शुभचिन्तकों द्वारा व्यक्त करने पर निर्भिकता से उत्तर दिया कि कोई चाहे मेरी उंगलियों को मोमबत्ती की तरह जला दे, किन्तु मुझे सत्य कहने से नहीं रोक सकता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती, उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द द्वारा रचयित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेद भाष्य भूमिका, गो करुणानिधि आदि से बोध प्राप्त कर अनेक विभूतियों के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया जो देश की स्वतन्त्रता का आधार बना। अनेक मत-पन्थों ने ऋषि के ग्रन्थों से अपने मतों की पोल का बोध प्राप्त कर विसंगतियों दूर करने के प्रयास किए।

महर्षि दयानन्द के पश्चात् महात्मा गांधी जैसे जो भी सुधारवादी विभूतियां हुई उनके कार्यों और वर्तमान में सरकार द्वारा चलाए जा रहे अनेक जनहित कार्यों के मूल में दयानन्द तथा आर्य समाज ही है। यह बात और है कि लोकेषणा-वितैषणा की भेंट चढ़े लोगों ने महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से बोध प्राप्त करने के उपरान्त भी आर्य समाज को पीछे धकेलने का पाप कर्म किया। एक तो ऐसे भी हुए जो तपोनिष्ठ वेदमूर्ति बन गये, जिन्होंने वर्षों आर्य समाज में बोध प्राप्त किया। ईश्वर की मूर्ति नहीं बनाई जा सकती और गायत्री छन्द का ईश्वर से अपनी बुद्धि को सन्मार्ग में चलाने की प्रार्थना का मन्त्र जिसे सावित्री मन्त्र भी कहा जाता है को तिलांजलि देकर जड़ मूर्ति पूजा का प्रचलन प्रारम्भ किया। ईश्वर से प्रार्थना तभी सार्थक होती है जब तदानुरूप पुरुषार्थ भी किया जावे, किन्तु इन्होंने जप मात्र से ही लोगों का कल्याण करना प्रारम्भ कर दिया। ऐसे कृतघ्नों के अनुयायियों ने उनको भी ईश्वर के अवतार के रूप में प्रचारित कर इनकी जड़ पूजा प्रारम्भ कर लोगों को वास्तविक वेद ज्ञान के बोध से विमुख कर वेद की गरिमा के विरुद्ध व्यवहार कर रहे हैं। आज महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज अन्तरराष्ट्रीय संगठन है। देश-विदेश में सैकड़ों आर्य समाज, हजारों उपदेशक, भजनोपदेशक, धर्म प्रचारक, वैदिक धर्म का बोध जन सामान्य को करवा रहे हैं। लाखों ऋषि भक्त वेद निष्ठ आर्य समाजी ऐसे हैं जो नित्य प्रतिदिन अपने जीवन का सदुपयोग अन्य लोगों से परस्पर वार्ताकर परमपिता, परमात्मा की वाणी वेद का बोध करा रहे हैं तथा अज्ञानता के तिमिर का नाश कर रहे हैं किन्तु वह सफलता नहीं प्राप्त कर रहे हैं जो महर्षि दयानन्द जी ने प्राप्त की थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती उस अन्धकारवादी युग में अकेले निकले थे और उन्होंने जिन कुरीतियों, कुप्रथाओं के शमन का शंखनाद किया तथा वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने के साथ देश की स्वतन्त्रता उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य थी। इन सब में ऋषि दयानन्द सफल हुए। उनके जीवन में न सही उनके जाने का बाद ही सही, वे सभी विसंगतियां समाप्त हुई। देश की स्वतन्त्रता में ऋषि दयानन्द का अहम् योगदान है। नारी शिक्षा का मार्ग प्रशस्त होकर नारी को पुरुषों के समकक्ष ही नहीं आगे निकलने का भी अधिकार मिला तथा वेदों की महत्ता भी पुनर्स्थापित हुई। महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा रचयित सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में तथा महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज के निरन्तर अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार तथा सुधारवादी गतिविधियों के कारण महर्षि के समय के लगभग समस्त समस्याएं समाप्त हो गई है किन्तु देश के स्वतन्त्र होने के उपरान्त भी इस देश के संविधान में इस देश की मूल संस्कृति-वैदिक संस्कृति जो कि मानव मात्र की हितैषी है के रक्षण-पोषण की व्यवस्था के स्थान पर छद्म लबादा ओढाकर मानव मात्र में विभेदकारी जातिगत आरक्षण तथा संकीर्णतावादी मत-पन्थों का रक्षण-पोषण किया गया तथा हमारी प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को पुनर्स्थापित करने के स्थान पर पाश्चात्य देशों के संविधान एवं शिक्षा प्रणाली की नकल करके स्व संस्कृति के स्थान पर विकृत एवं दूषित विधान एवं शिक्षा पद्धति के कारण वेदानुकूल शिक्षा के अभाव में एवं पाश्चात्य विकृत भाषा-भूषा, भोगवादी व्यवहार के कारण आज वर्तमान की समस्याएं तो नित नई उपजने वाली समस्याएं है जिसके जनक कोई और नहीं हम स्वयं हैं। आज वैदिक ज्ञान के अभाव में ईश्वर, जीवात्मा प्रकृति का ज्ञान ठीक-ठीक नहीं होने से सर्वाधिक अन्धविश्वास-पाखण्ड फैल रहा है तथा जीवात्मा (मानव) अपने लक्ष्य से भटक रहा है। ऋषि दयानन्द ने तो पूर्णरूपेण वेदोक्त अन्धकार पूर्ण युग में परतन्त्रता के काल में भी अकेले सब कुछ ठीक किया था उस तुलना में आज हम पराधीन नहीं है, महर्षि की कृपा से वेदोक्त ज्ञान का प्रकाश भी विद्यमान है, हमारा यह प्रदर्शन करने वाला महर्षि द्वारा रचयित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है, वसुधैव कुटुम्बकं अर्थात् सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अपने द्वार खोले, बगैर कोई किन्तु-परन्तु के प्राणी मात्र के हितकारी कार्य करने के लिए महर्षि दयानन्द से विरासत में प्राप्त अन्तरराष्ट्रीय संगठन आर्य समाज है जिसके बैनर तले दुनियाभर में हजारों-लाखों ऋषि भक्त परमपिता परमात्मा की वाणी वेद का ज्ञान जन-जन तक पहुंचाने हेतु तन-मन-धन से समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं इसके उपरान्त भी हम अगर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर पा रहे हैं तो इस आधार पर हम कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से बोध (ज्ञान) के भण्डार थे। वे बोध प्राप्त करने नहीं हमें बोध प्रदान करने आए थे। मानव जाति उनके उपकारों की सदैव ऋणी रहेगी। शिवरात्रि के दिवस, पर शिवलिंग पर चूहे चढ़े होने की घटना तो निमित्त मात्र थी। इस जगत् गुरु आर्यावर्त्त के पुनः भाग्योदय की।

शिवरात्रि के पावन अवसर पर
उस महान् दिव्यात्मा को शत् - शत् नमन् । ●

www.thearyasamaj.org

क्या हम अपने पुत्र का नाम राम रख ले तो वह दशरथनन्दन राम हो जाएगा? नहीं न, क्योंकि इस संसार में एक ही तरह के नाम अनेक व्यक्तियों के होते हैं। वेद शास्त्रों में जो श्रेष्ठ नाम होते हैं वे ही नाम हम अपनी सन्तानों के रखते आये हैं। वेद में विश्वकर्मा नाम परमपिता का गौणिक अर्थात् गुण वाचक नाम है, इसी नाम के कालान्तर में अनेक ऋषि-मुनि भी हुए हैं। इन सबको एक समझना हमारी अज्ञानता है। अथर्ववेद के उपवेद अर्थवेद (शिल्पशास्त्र) के रचयिता ऋषि विश्वकर्मा जिनकी जयन्ती माघ सुदी तेरस को कला कौशल में रत् लोग (विश्वकर्मा वंशी) मानते हैं इसी से स्पष्ट है कि वे मनुष्य थे न की परमात्मा क्योंकि परमात्मा जन्म-मृत्यु के बन्धन से परे है। ऋषि विश्वकर्मा वैदिक ऋषि थे उनका संक्षिप्त परिचय वैदिक विद्वान शिवनारायण जी प्रस्तुत कर रहे हैं। जानिए और मानिए... -सम्पादक

ऋषि विश्वकर्मा

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

विश्वकर्मा अपने युग के सर्वश्रेष्ठ कारीगर थे। वे वास्तु शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे। उन्होंने ही इन्द्रप्रस्थ शहर का इस प्रकार निर्माण किया था कि वह अपने युग का सर्वश्रेष्ठ और सुन्दरतम् शहर माना जाता था। उन्होंन मध्य अमेरिका तक अपने कार्य क्षेत्र का फैलाव किया था। पेरु, मेक्सिको आदि देशों में उनकी देख-रेख में कई शहरों का निर्माण हुआ था। उनके वास्तुकला ज्ञान के विषय में तो लोगों को बहुत कुछ ज्ञात है परन्तु वे एक वैदिक ऋषि भी थे और उन्होंने विश्व की सबसे प्राचीन ज्ञान की धरोहर ऋग्वेद पर भी गम्भीर अध्ययन कर कार्य किया था और वे ऋग्वेद के मण्डल १० सूक्त ८१, ८२ की ऋचाओं के दृष्टा भी थे यह कम लोग ही जानते हैं। आज हम इनके द्वारा रहस्योद्‌घाटित ऋचाओं पर भी विचार करते हैं-

य इमा विश्वा भुवनानि
जुहृदृषिर्होता न्यसीदत पिता नः।
सः आशिषा द्रविणमिच्छमानः
प्रथमच्छदवराँ आ विवेश।।
ऋग्वेद- १०.८१.१

पदार्थ- जो सब जगत् का द्रष्टा, सब जगत् का धारक हमारा पिता है वह प्रभु इन समस्त लोकों को **(जुहृत्)** शक्ति प्रदान करता हुआ अथवा आहुति देता हुआ **(निअसीदत्)** विराजता है। वह भावना मात्र से गतिशील जगत् को चाहता हुआ, प्रथम जगत् में व्यापक होता हुआ **(अवरान्)** पीछे उत्पन्न होने वाले जगत् में भी व्यापक होता है।

भावार्थ- यह सूक्त सर्वव्यापक परमात्मा के सृष्टि यज्ञ से सम्बन्धित है। इस सूक्त में सृष्टि रचना को यज्ञ रूप में व्यक्त किया गया है। जगत् का दृष्टा सम्पूर्ण जगत् को प्रलय के समय ऊर्जा रूप में बदलकर पी जाता है। फिर सृष्टि उत्पत्ति के समय समस्त जगत् को ऊर्जा प्रदान करता है। वह हमारा पिता है और भावना मात्र से इस गतिशील सृष्टि के अन्दर व्याप्त हो जाता है।

किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्क था सींत्।
यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा विद्यमौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः।।२।।

पदार्थ- इस जगत् का आश्रम कौन सा है? इस जगत् का मूल उपादान कारण कौन है? यह विश्व किस तरह उत्पन्न होता है, इसका प्रारम्भ कैसे होता है? कि जिसने सब जगत् का बनाने वाला, समस्त जगत् का दृष्टा परमेश्वर भूमि को उत्पन्न करता हुआ अपने ऐश्वर्य से भूमि और द्युलोक को आच्छादित करता है। इस ऋचा में सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी मूल प्रश्न पूछे गए हैं अगली ऋचाओं में इन प्रश्नों का उत्तर दिया जाएगा।

विश्वतश्चक्षुरत विश्वतोमुखो
विश्वातोबाहुरूप विश्वतस्पात्।
स बाहूभ्यां धमति स
पतत्रैर्धवाभूमि जनमन्देव
एकः।।३।।

पदार्थ-परमेश्वर सर्व दृष्टा, सर्ववक्ता, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक है। अकेला देव वह परमेश्वर। प्रकृति के परमाणुओं द्वारा द्यु और भूमि को उत्पन्न करता हुआ ज्ञान और क्रिया से सम्पूर्ण जगत्

परमात्मा का गौणिक नाम विश्वकर्मा

विश्वकर्मा विमना आद्विहायाद्याता विद्याता परमोत सन्दृक्।
तेषमिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऽऋषिन पर एकमाहुः।।
(ऋग्वेद १०-८२-२, यजु. १७-२६)

हे विश्वकर्मा भगवान तुम सर्वज्ञ व शक्तिमान हो,
सृष्टि बनाने वाले प्रभु, तुम सर्वत्र विद्यमान हो।
नाना विधि जगत् रचाया, कर्त्तव्य में तुम महान हो,
रक्षा सभी की करते, तुम माता-पिता समान हो।
ज्ञाता समस्त विज्ञान के, तुम श्रेष्ठ बुद्धिमान हो,
सब ऋद्धि सिद्धि के दाता, तुम धनियों के धनवान हो।
सद्‌मार्ग पर चलें सभी, हमें न कभी अभिमान हो,
भूलें नहीं कभी तुम्हें हम, तुम भक्तों के प्रतिमान हो।
व्याप्त सब लोकों में तुम सब बलियों से बलवान हो,
समस्त विद्या है तुम्ही से, तुम महान विद्यावान हो।
कर्ता, धर्ता त्राता हो, सब दुःखों के तुम त्राण हो,
रचना तुम्हारी अनुपम प्रभु तुम प्राणियों के प्राण हो।
उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय में तुम रहते सदा समान हो,
मरणासन्न को जीवन देते, तुम लुकमानों के लुकमान हो।
कैसे करूं बखान प्रभु, तुम महान हो सुखवान हो।।

देशराज आर्य, रेवाड़ी (हरियाणा)

www.thearyasamaj.org

को बनाता है।

किं स्विद्धनं क उस वृक्ष आसयतो धावा पृथिवी निष्टचक्षुः।
मनीषिणो मनसा पृच्छदेतु तद्यदध्यतिष्ठद् भुवनानि धारयन्।।४।।

पदार्थ- वह वृक्ष कौन सा है, वह वन कौन सा है, जिससे परमात्मा प्रेरित जगत् की रचना में लगी शक्तियां द्यु और पृथ्वी लोक को उत्पन्न करती है। हे विद्वानों ! अपने मन से पूछो उसको जो समस्त जगत् के कार्य रूप में परिणत होने वाले करणों को धारण कर उसका अधिष्ठाता हो रहा है।

या ते धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा।
शिक्षा सखिम्भे हविषि स्वधावः स्वयं यजस्वतन्वं वृधानः।।५।।

पदार्थ-हे विश्व के कर्ता प्रभो। आपके द्वारा निर्मित जो परम (उत्तम) नाम, रूप और स्थान है। जो मध्यम कोटि के हैं और जो अवर कोटि के हैं उन सब ज्ञानी जीवों को शिक्षा देते हुए और अन्नादि बढ़ाते हुए जीवों को शरीर प्रदान करते हो।

परमात्मा ही सब जीवों को उनके योग्य शरीर देता है और साथ ही अन्नादि की व्यवस्था भी करता है।

विश्वकर्मन् हविषावावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुन धाम्।
मुह्यन्तन्ये अभितो जनासद्हास्मकं मधवा सूरिरस्तु।।६।।

पदार्थ- हे समस्त जगत् के निर्माता प्रभु। आप अपनी प्रकृति शक्ति से प्रबल हुए पृथ्वी और द्युलोक की संगति लगते हैं। अन्य अज्ञानी जीव लोग यथार्थता को नहीं जान पाते हैं।हे समस्त ऐश्वर्य के स्वामी आप ही इस जगत् में हमारे ज्ञान दाता है।

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम।
स नो विश्वापि हवनानि जोषद्विश्वशम्मूख से साधुकर्मा।।७।।

पदार्थ - वेद वाणी के स्वामी, समस्त जगत् के कर्ता, मन के समान वेग वाले परमात्मा को अपनी रक्षा के लिए तथा ऐश्वर्य और ज्ञान के लिए हम स्तुति करते हैं। सब का कल्याणकारी, उत्तम कर्मों वाला वह परमेश्वर हमारे रक्षार्थ हमारी समस्त स्तुतियों और यज्ञादि को स्वीकार करता है।

इस सूक्त में सृष्टि निर्माता, सृष्टि का धारक, सब जीवों के शरीरों को बनाने वाले परमेश्वर से मुख्य रूप से ज्ञान और रक्षा की प्रार्थना की गई है।

अब हम अगले सूक्त पर विचार करते हैं।

चक्षुषा पिता मनसा हि धीरो धृत मेने अजनन्नम्नमाने।
यदेदन्ता अददृहन्त पूर्व आ दिद् घावा पृथिवी अप्रथेताम्।।

ऋग्वेद-१०.८२.१

पदार्थ- चक्षु आदि से युक्त शरीर संघात का अथवा प्रकाशमान् सूर्य आदि लोक का उत्पादक ज्ञान शक्ति से निश्चय धीर प्रकाश को पहले उत्पन्न करता है पुनः गतिशील द्यु और पृथ्वी को उत्पन्न करता है जब वह दिशाओं और आकाश को उत्पन्न करता है।

तब द्यु और पृथ्वी प्रसारण को प्राप्त होते हैं। यही सृष्टि उत्पत्ति का वैज्ञानिक क्रम है।

विश्वकर्मा विमला आद्विहाया धाता विधाता परमोत संदृक्।
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऋषीन्पर एकमाहुः।।२।।

पदार्थ - जगत् की रचना के विविध कर्मो को करने वाला, व्यापक ज्ञान वाला, आकाशवत् व्यापक, समस्त विश्व का धारक, पृथ्वी, सूर्य आदि पदार्थों का निर्माता, परमोत्कृष्ट और सर्व दृष्टा है। जिसके नियन्त्रण में और धारण में सात इन्द्रियों से सूक्ष्म एक आत्मा को ज्ञानी जन कहते हैं। इन इन्द्रयों के अभिलषित योग्य पदार्थ जिसको ज्ञान और प्रयत्न से भली प्रकार हर्ष आदि के कारण होते हैं।

योः न पिता जनिता योविधाता द्यामानिवेद भुवनानि विश्वा।
यो दावानां नामधा एकएव सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या।।३।।

पदार्थ- जो परमेश्वर हमारा पालक तथा उत्पन्न करने वाला, जो सब जगत् का रचयिता है, जो समस्त लोकों और स्थानों को जानता है। जो समस्त पदार्थों के नाम रखने वाला और अद्वितीय है उसे ही सभी प्रश्नों प्रश्न को दूसरे भुवन आदि प्राप्त होते हैं अर्थात् सभी समस्याओं का समाधान भी वहीं एक परमेश्वर है।

त आय जन्त द्रविणं समस्या ऋषयः पूर्वे जरितारो न भूना।
असूर्ते सूर्ते रजसि निषत्ते ये भूतानि समकृण्वनि मानि।।४।।

पदार्थ - पूर्व कल्प के समान इस कल्प में भी वे जगत् के बनाने वाले पदार्थ, स्मावकों के समान, द्रव्य, गति, संयोग और वियोग को संगत होते अथवा प्राप्त होते जो दृढ़ गति रहित रथावर, गति युक्त जंगम लोक में इन भूत समुदाय को उत्पन्न करते हैं।

परोदिवा पर एना पृथिव्या परो देवे भिरसुरैर्यदस्ति।
कं स्विद्गर्भ प्रथमं दध्र आपो यत्र देवाः समपश्यन्त विश्वे।।५।।

पदार्थ - वह परमेश्वर महान् आकाश से भी परे है। वह इस पृथ्वी से भी परे है। जो द्रव्य पदार्थों और मेघों से भी परे है कि श्रेष्ठ गर्भ **(विराट् रूपी हिरण्यगर्भ)** को प्रकृति के परमाणु धारण करते हैं जिसमें समस्त देव **(दिव्य पदार्थ)** और जीव गण अपने को देखते हैं।

मिद्गर्भ प्रथमं दध्र आपो यत्र देना। सम गच्छन्त विश्वे।
अजस्व नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थु।।६।।

पदार्थ-उस ही परमेश्वर को हिरण्य गर्भ के रूप में प्रकृति परमाणु अपने अन्दर धारण करते हैं। जिसमें सभी पदार्थ संगत रहते हैं, उस अजन्मा परमेश्वर के नाभि संग्रहण (धारक शक्ति) में एकवत् स्थापित है। जिसमें समस्त लोक लोकान्तर स्थित होते हैं।

म तं विदाथ य इमा जजानात्यद्युष्माकनन्तरं बभूव।
निद्रमेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप डक्थ शासश्चरन्ति।।७।।

पदार्थ - हे जीवों! तुम उस परमेश्वर को नहीं जानते हो जो इन समस्त लोक लोकान्तरों को उत्पन्न करता है तथा तुमसे दूसरा भिन्न होकर तुम्हारे ह्दय में विद्यमान है। अज्ञानान्धकार से आच्छादित जन बहुत बोलने वाले प्राणों की तृप्ति में ही संलग्न जन और केवल शब्दाडम्बर करने वाले घूमते हैं पर उसको नहीं जानते हैं।

यह सम्पूर्ण विवरण सिद्ध करता है कि विश्वकर्मा ऋषि ज्ञान वृद्ध थे। सृष्टि की उत्पत्ति आदि के क्रम और कारणों को जानते थे और परमपिता परमेश्वर के निष्ठावान् उपासक थे। इति शम् । ●

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द सरस्वती और वेद विषयक विचार

स्वामी दयानन्द सरस्वती के ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के चौथे अध्याय में वेद में मुख्य विषय कौन-कौन से हैं। इस पर अपने विचार रखे हैं। उनके अनुसार वेदों के अवयव रूप विषय तो अनेक हैं परन्तु उनमें से चार मुख्य हैं-

एक विज्ञान अर्थात् सब पदार्थों का यथार्थ जानना (२) दूसरा कर्म (३) तीसरा उपासना और (४) चौथा ज्ञान है।

विज्ञान उसको कहते हैं कि जो कर्म, उपासना और ज्ञान उन तीनों से यथावत् ज्ञान लेना और परमेश्वर से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध होना, इनसे यथावत् उपयोग का करना इससे यह विषय इन चारों में भी प्रधान है क्योंकि इसी से वेदों का मुख्य तात्पर्य है। वह भी दो प्रकार का है- एक परमेश्वर का यथावत् ज्ञान और उसकी आज्ञा का बराबर पालन करना और दूसरा यह है कि उसके रचे हुए सब पदार्थों के गुणों को यथावत विचार कर उनसे कार्य सिद्ध करना और इन दोनों में भी ईश्वर का जो प्रतिपादन है वही प्रधान है।

फिर मुण्डकोपनिषद् के आधार पर वे कहते हैं कि वेदों में दो विद्या हैं - एक अपरा और दूसरी परा। इनमें से अपरा वह है कि जिससे पृथ्वी और तृण से लेकर प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना होता है और दूसरी परा की जिससे सर्व शक्तिमान् ब्रह्म की यथावत प्राप्ति होती है। यह परा विद्या का ही उत्तर फल परा विद्या है।

वेदान्त स्पष्ट घोषणा करता है- **तन्तु समन्वयात्** अर्थात् सब वेद वाक्यों में ब्रह्म का ही विशेषकर प्रतिपादन है। इसी प्रकार यजुर्वेद का भी कथन है कि परमेश्वर ही वेदों का मुख्य विषय है और उससे पृथक जो जगत् है वह वेदों का गौण अर्थ है और इन दोनों में से प्रधान का ही ग्रहण होता है। इससे निश्चय हुआ कि वेदों का मुख्य तात्पर्य परमेश्वर ही की प्राप्ति कराने और प्रतिपादन करने में है। उस परमेश्वर ने उपदेश रूप वेदों से कर्म, उपासना और ज्ञान इन तीनों काण्डों का इस लोक और परलोक से व्यवहारों के फलों की सिद्धि और यथावत् उपकार करने के लिए सब मनुष्य इन चार विषयों के अनुष्ठानों में पुरुषार्थ करें। यही मनुष्य देह धारण करने के फल हैं।

उनमें से दूसरा कर्मकाण्ड विषय है सो सब क्रिया प्रधान ही होता है। जिसके बिना विद्याभ्यास और ज्ञान पूर्ण नहीं हो सकते हैं। क्योंकि मन का योग बाहर की क्रिया और भीतर के व्यवहार में सदा रहता है। यह अनेक प्रकार का है। परन्तु उसके दो भेद मुख्य हैं - एक परमार्थ और दूसरा लोक व्यवहार। पहले से परमार्थ और दूसरे से लोक व्यवहार की सिद्धि करनी होती है। प्रथम को परम पुरुषार्थ कहा स्तुति, उसमें परमेश्वर के गुणों का कीर्तन, उपदेश और श्रवण करना (प्रार्थना) अर्थात् जिसके द्वारा ईश्वर से सहायता की इच्छा करनी (उपासना) अर्थात् ईश्वर के स्वरूप में मग्न होकर उसकी सत्यभाषणादि आज्ञा का यथावत पालन करना। सो उपासना पातञ्जल योग शास्त्र की रीति से करना तथा धर्म का स्वरूप न्यायाचरण है। न्यायाचरण उसको कहते हैं जो पक्षपात को छोड़ कर सब प्रकार से सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करना।

इसी धर्म का जो ज्ञान और अनुष्ठान का यथावत् करना है। सो ही कर्मकाण्ड का प्रधान भाग है और दूसरा वह है जिससे अर्थ काम और उनकी सिद्धि करने वाले साधनों की प्राप्ति होती है। इस भेद को इस प्रकार जानना चाहिए कि जब मोक्ष अर्थात् सब दुःखों से छूटकर केवल परमेश्वर की ही प्राप्ति के लिए धर्म से युक्त सब कर्मों का यथावत करना यही निष्काम मार्ग कहलाता है, क्योंकि इसमें संसार के भोगों की कामना ही नहीं की जाती। इसका फल अक्षय है। और जिसमें संसार के भोगों की इच्छा से धर्मयुक्त काम किये जाते हैं उसको सकाम कहते हैं। इस हेतु से उसका फल नाशवान होता है, क्योंकि सब कर्मों को करके इन्द्रिय भोगों को प्राप्त होकर जन्म-मरण से नहीं छूट सकता है। अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेघ पर्यन्त जो कर्मकाण्ड है, उसमें चार प्रकार के द्रव्यों का होम करना होता है - एक सुगन्धगुणयुक्त, जो केसर, कस्तूरी आदि है, दूसरा मिष्ठगुण युक्त जो कि गुड़ और शहद आदि कहाते हैं, तीसरा पुष्टिकारक पदार्थ जो, घृत, दुग्ध अन्न आदि है और चौथा रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थ जो कि सोमलतादि औषधि आदि है। इन चारों का परस्पर शोधन, संस्कार और यथा योग्य मिलाकर अग्नि में युक्तिपूर्वक होम किया जाता है। यह वायु और वृष्टि जल की शुद्धि करने वाला होता है। इससे जगत् को सुख मिलता है। फिर वे शतपथ ब्राह्मण के कथन का प्रमाण देते हैं -

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार जो होम करने के द्रव्य अग्नि में डाले जाते हैं, उनसे धुंआ और भाप उत्पन्न होते हैं, फिर वे हलके होकर वायु के साथ ऊपर आकाश में चढ़ जाते हैं, उनमें जितना जल का अंश होता है वह भाप कहाता है और जो शुष्क है वह पृथ्वी का भाग है, इन दोनों के योग का नाम धूम है। नब ये परमाणु मेघमण्डल में वायु के आधार पर रहते हैं। फिर वे परस्पर मिलकर बादल होकर उनसे वृष्टि, वृष्टि से औषधि, औषधियों से अन्न-अन्न से धातु, धातुओं से शरीर और शरीर से कर्म होता है। क्योंकि सबके उपकार करने वाले यज्ञ को नहीं करने से मनुष्यों को दोष लगता है। जहां मनुष्य आदि समुदाय अधिक होते हैं, वहां उतनी ही दुर्गन्ध भी अधिक होता है। वह ईश्वर की सृष्टि से नहीं किन्तु मनुष्यादि प्राणियों से निमित्त से ही उत्पन्न होता है।

क्योंकि हस्ति आदि के समुदायों को मनुष्य अपने ही सुख के लिए पालते हैं, इससे उन पशुओं से भी जो अधिक दुर्गन्ध होता है सो मनुष्यों की सुख की इच्छा से होता है। तो उसका निवारण करना भी उनको ही योग्य है। क्योंकि जितने प्राणी देहधारी जगत् में हैं उनमें से मनुष्य ही उत्तम है, इससे वे ही उपकार व अनुपकार को जानने के योग्य हैं। मनन नाम विचार का है, जिसके होने से ही मनुष्य नाम होता है, अन्यथा नहीं। क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य के शरीर में परमाणु आदि के संयोग विशेष इस प्रकार रचे हैं कि जिनसे उनको ज्ञान की उन्नति होती है, इसी कारण से धर्म का अनुष्ठान आदि अधर्म का त्याग करने को भी वे ही योग्य होते हैं अन्य नहीं। इससे सबके उपकार के लिए यज्ञ का अनुष्ठान भी उन्हीं को करना है।स्वामी जी कहते हैं कि यज्ञ में किसी पदार्थ का नाश नहीं होता केवल वियोग होता है।

इसके उपरान्त वे ज्ञान प्राप्ति के लिए आठ प्रमाणों प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द प्रभाव, इतिहास, अर्थापत्ति, संभव, अभाव की आवश्यकता है। स्वामीजी के अनुसार केवल परमेश्वर ही कर्म, उपासना और ज्ञान काण्ड में सबका इष्ट देवस्तुति प्रार्थना पूजा और उपासना करने के योग्य है। निरुक्त का प्रमाण उपस्थित कर वे कहते हैं कि व्यवहार के देवताओं की उपासना कभी नहीं करनी चाहिए किन्तु एक परमेश्वर की ही करनी उचित है। इति।

- **शिवनारायण उपाध्याय, कोटा (राज.)**

दयानन्द का आह्वान-वेदों की लौटो, वेदों का सन्देश -मनुर्भव

- डोंगरलाल वर्मा -
कसरावद, जिला-खरगोन (म.प्र.)
चलभाष-०८९५९०५९०९९

हाँ, वृद्ध भारत वर्ष ही संसार का सिरमौर है।
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है।
ईश्वर की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यही विस्तार है।।
वे मानव ऐसे जो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिये जीते ही न थे। (गुप्तजी)

''मनुर्भव। जनया दैव्यं जनम्'' ऋग्वेद १०-५३-१६

मनु+भव = मनुष्य बनो। जन+या = जन्म दो + जो। दैव्य = देव सम्बन्धी भाग्य। जनम् = सन्तान को।

अर्थः - हे मनुष्य। तुम मनुष्य बनो और दिव्य, भाग्यवान सन्तान को पैदा करो।

व्याख्या :- प्रायः धरा पर इन्सान से ज्यादा हैवान और शैतानों की तादाद ज्यादा है। ''सब प्राणियों के जग में तूने बनाये जोड़े। दुर्जन अधिक बनाये, सज्जन बनाये थोड़े। थोड़े बनाये तूने सिंह, हाथी शक्तिशाली। चंदा बनाया शीतल, सूरज में आग डाली।

चाणक्यानुसार - पुनर्वित्त पुनर्मित्र पुनर्भार्या पुनर्मही।
एतत्सर्वं पुनर्लभ्यं न शरीर पुनः पुनः ।।

अर्थात् धन, मित्र, पत्नी, भू-सम्पत्ति ये बार-बार प्राप्त हो सकते हैं। किन्तु यह मनुष्य रूपी शरीर बार-बार प्राप्त नहीं हो सकता है।

अतः हे मनुष्य। तू मनुर्भव।

ये कर्म उत्तम जो नर तन पाया।
भोग विलासों में हीरा गंवाया।।
सौदा घाटे का कर हाथ माथे पर धर रोने लागा।
नर तन जीवन यूँ ही गंवाया।।

अतः वेदों की ओर लौटो और मनुर्भव। उक्त पंक्तियों में हीरा उपमानुसार हीरे के गुण हीरा प्रकाशवान होता है, अंधकार को भगाता है ऐसे ही मनुष्य ज्ञानवान होता है। अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, अधर्म आदि मनुष्य भगाता है। हीरा कीमती होता है, मनुष्य शरीर भी अनमोल होता है। हीरा संसार का कठोरतम पदार्थ होता है जो कठोर वस्तुओं को काटने के काम आता है। मनुष्य भी अनुशासन, संयम, संकल्प, तप से तपता कठोर होता है और सारी बुराईयों को काटने की क्षमता होती है। हीरा ताप का कुचालक होता है जो आसानी से आग में जल जाता है, ऐसे ही मनुष्य भी मांस-शराब, वैश्या, दुर्गुणों से मानव-जन्म भस्म हो जाता है। अतः मनुर्भव।

हिन्दू विश्व विद्यालय के निर्माता मदन मोहन मालवीय ने भारत में भ्रमण कर दान प्राप्त किया था। एक बार वह दान हेतु हैदराबाद के नवाब के पास गये। किन्तु नवाब ने दान देने से इन्कार कर लौटा दिया। किन्तु मालवीयजी ने हैदराबाद में जो भी शव यात्रा निकलती और शव पर फेंके गये पैसों को बटोरना शुरू कर दिया। कि नवाब से पैसा तो नहीं मिला किन्तु नवाब के राज्य के मुर्दों से तो पैसा मिल रहा है। ऐसी शर्मनाक खबर जब नवाब तक पहुंची तो नवाब ने शर्मसार होकर मालवीयजी को दान देना ही पड़ा। इस विश्वविद्यालय में एक मुस्लिम लड़की ने वेदों पर अध्ययन करते हुए शोध कर उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् एक पत्रकार ने बड़ी जिज्ञासावश पूछा - ''आप मुसलमान हो, आपका धर्म इस्लाम है। आपने तो इस्लाम, कुरान या मोहम्मद सा. पर शोध करना था, आपने वेदों पर शोध क्यों किया? लड़की ने बड़ा ही सटिक जवाब दिया। कि गीता का अध्ययन हिन्दू बनाता है, कुरान का अध्ययन मुसलमान बनाता है, बाईबिल का अध्ययन ईसाई बनाता है। किन्तु वेदों का अध्ययन केवल इंसान बनाता है। इसलिए वेदों का पैगाम ''इन्सान बनो'' मैने इन्सान बनने हेतु तालीम हासिल की है।

न्यायालयों में भी धर्मानुसार व्यक्तियों से गीता, कुरान, बाईबिल, गुरु ग्रन्थ सा. आदि पर हाथ रखकर शपथ दिलाई जाती है।

गुप्त जी के अनुसार- **विख्यात चारों वेद मानों मुख के सार हैं।**
चारों दिशाओं में हमारे ये जय ध्वज चार हैं।।
ये ज्ञान-गरिमागार है, विज्ञान के भण्डार हैं।
ये पुण्य पारावार है, आचार के आधार है।।

युक्त- ''वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'' अर्थात् वेद ही संपूर्ण संसार का मूल मुख्य धर्म है।

सतयुग के सत्यवादी हरिशचन्द्र, त्रेता के मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, द्वापर के योगिराज श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन वेदानुकूल व्यतीत हुआ। इनके द्वारा मूर्ति-पूजा नहीं वरन् **''यज्ञों वे श्रेष्ठतमं कर्मः''** अर्थात् संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ ही है। नित्य यज्ञ करते हुए तथा राक्षसों से रक्षा करते थे। तुलसीदासानुसार **''जेहि विधि चलेहि वेद प्रतिकूला। तेहि विधि कोई होई धर्म निमूला''** इस प्रकार महाभारत युद्ध पश्चात वैदिक धर्म से विमुख होकर, वाम मार्ग का अनुकरण करके, महावीर-बुद्ध की प्रतिमा का निर्माण व पूजा की नकल करते हुए ब्राह्मणों ने स्वार्थ, धनोपार्जन की लालसा में काल्पनिक तैतीस करोड़ देवी, देवताओं की मूर्तियां बनाकर मिथ्या प्राण-प्रतिष्ठा करके अज्ञान, अविद्या, ढोंग, पाखण्ड, धर्मान्धता का

www.thearyasamaj.org

श्रीगणेश किया। जो मुगल शासकों ने बुत परस्त काफिर, नास्तिक करार मानकर देश के अनेकों मंदिरों को विध्वंस कर करोड़ों की सम्पत्ति लूटी गई। जब सनातन काल से ऋषि-मुनि वनों में तप-साधना, शिक्षा, यज्ञ करते, ग्राम-नगरों में घर-परिवार में यज्ञ कार्य होता था। किन्तु तथाकथित ब्राह्मणों की पाखण्ड लीला अनुसार मंदिरों की मूर्तियों की पूजा, तीर्थों नदियों में स्नान, पिण्डदान आदि आडम्बरों का प्रादुर्भाव किया गया-

''धर्म वेदों का देखा न भाला। बेला अमृत गया न संभाला।।''
उल्टी हो गयी मति, करके अपनी क्षति, चोला त्यागा।।
मनुज बनकर अधर्म, अनिति में जीवन रमाया।।
वेद का पढ़ना-पढ़ाना ब्राह्मणों में अब दीखता नहीं।
यज्ञ को करना-कराना कोई इनसे अब सीखता नहीं।
अब इन अग्र-जन्म ब्राह्मणों की हीनता तो देख लो।
भू-देव थे कभी, आ इनकी दीनता तो देख लो। (गुप्तजी)
''अध्यायनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत।। मनु-८८''

अर्थात् वेदों का अध्ययन और अध्यापन, यज्ञ करना और कराना। दान देना और लेना इन षट्कर्म से ब्राह्मण की कल्पना होती है। तथा **''यो ब्रह्मं जानाति सः ब्राह्मणः''** जो ब्रह्म को जानता है वह ब्राह्मण होता है, किन्तु अब ब्राह्मण की कल्पना **''यो भ्रमं जानाति विसरति च सः ब्राह्मणः अस्ति''** अर्थात् जो भ्रम (ढोंग, पाखण्ड, धर्मान्धता) को जानता है और आस्था, अंधविश्वास के नाम पर आडम्बर को फैलाता है,वही ब्राह्मण है। भारत के मंदिरों, मठों, नदियों तीर्थों आदि में मौजूद जिनको ब्राह्मण, पण्डित, पण्डा कहते हैं हकीकत में तीर्थों के गुण्डे हैं। वर्ष के ३६५ दिन में इनके लिये कोई ऐसा दिन नहीं है इनके कर्म-काण्डों का दिन नहीं होता है। रात दिन अंधविश्वासों से ये लोगों को बलि का बकरा बनाते हैं। इसी कारण भारत के विकास में बाधक हमारे अंधविश्वासों में समय की बर्बादी मुख्य है। जबकि महान् आत्मा महामहिम राष्ट्रपति वैज्ञानिक, करोड़ों शिक्षकों में सच्चे, सर्वश्रेष्ठ शिक्षक अब्दुल कलाम सा. ने विश्व में एक अभूतपूर्व आदर्श प्रस्तुत किया, कि मेरे निधन पर राष्ट्र में कोई अवकाश न घोषित किया जाय। देश के विकास हेतु ऐसे चिन्तन के धनी, कर्म योगी, पुण्यात्मा को हृदय से शत्-शत् वन्दन और अभिनन्दन अर्पित। जबकि भारत के युवा, वृद्ध, महिला धर्मान्धता के नाम सावन का पूरा माह कावड़ यात्रा, दस दिन गणेशोत्सव, सोलह दिन मृतकों के पिण्डदान में बाकी अधिकांश अपने जीवित माता पिता को पानी तक तरसाया जाता है। नौ दिन देवी के नाम पर, जबकि नाबालिग, बालाओं, महिलाओं के साथ बलात्कार और हत्याओं के गुनाहगारों का ग्राफ बढ़ता जा रहा है और प्रति वर्ष रावण के पूतलों के कद बढ़ते हुए जश्न के साथ जलाये जाते हैं। समाज के रावणों को नहीं। ब्राह्मणों ने षट्कर्म का परित्याग, परोपकाराय परम धर्म को तिलांजलि देकर मिथ्या कर्म-काण्डों से न्यायिक व नैतिक पतन से इतिहास दहाड़ रहा है। कि यदि ब्राह्मणों के कर्म-काण्डों का शूद्र द्वारा देख लेने पर लोहे के सरिये को गर्म कर शूद्रों की आंखें फोड़ दी जाती थी। क्या ये ब्राह्मण है? नहीं, अस्तु मनुर्भव।

यदि शूद्र द्वारा कोई सूक्ति या श्लोक बोल देने पर उसकी जीभ काट दी जाती थी। क्या ब्राह्मण दयालु था,नहीं । अतः मनुर्भव और वेदों की ओर लोटो। अगर शूद्रों द्वारा सूक्त सुन लेने पर उन के कानों में सीसा गरम कर कानों में भर दिया जाता था। ग्राम नगर की गलियों में से शूद्र को निकलने से पूर्व उसके गले में हण्डी लटकाई जाती थी ताकि वह हण्डी में ही थूके। पीठ पर कांटों की भारी लगाई जाती थी ताकि शूद्र के पैरों के निशान मिटते जायें। यह कृत्य पशुओं से भी बद्तर होने पर क्या श्रेष्ठ कहलाने वाला ब्राह्मण इन्सान है या शैतान? अतः मनुर्भव। अनेकों अत्याचारों के कारण शूद्र समता, सम्मान के जीवन हेतु लाखों की तादाद में शूद्र से मुसलमान बनकर जब ब्राह्मणों को ढाई-ढाई रु. में नीलाम कर गजनी में मैला तक उठवाया। प्रसंगानुसार गुप्तजी ने महाकाव्य भारत भारती के पृष्ठ क्र. ४९ में लिखा - ''कुतुबुद्दिन ऐबक के जमाने में जब बिहार फतह हुआ तब एक लाख ब्राह्मणों को ढूंढ-ढूंढकर, कतल किया और इनके कार्मकाण्डों की किताबों को जलाया। शूद्रों पर अत्याचारों के साथ नारी जाति पर भी अत्याचार कर नारी जीवन को नरकीय बनाया।'' नारी को यज्ञ, शिक्षा, यज्ञोपवित से वंचित किया, सती प्रथा को खूब विकसित किया। राजा राममोहन राय के अनुसार ''पत्नी को सती हेतु जयकारों, बाजों गाजों से उत्साहित कर पति की चिता पर सती होने के बाद पति के साथ स्वर्ग में साढ़े तीन करोड़ वर्ष सुख भोगेगी। किन्तु यदि पत्नी की मृत्यु पश्चात् पति को साढ़े-तीन करोड़ वर्षों के सुख से वंचित क्यों रखा जाता है।

दोहा- **''पीर सभी की एक-सी, ब्राह्मण जानै नाहिं।**
पत्नी संग पति जलाई के, बैकुण्ठ बसै क्यूं नाहिं''

किन्तु नीति और न्याय को ताक पर रखकर शीघ्रातिशीघ्र विधुर का पुनर्विवाह किया जाता है। जो इन्सानियत नहीं है। अस्तु वेदों की ओर लौटो, मनुर्भव। इसलिए बेटे के माता पिता का दायित्व है एक पुरुष के पुनर्विवाह के भांति बहू को अपनी बेटी समझते हुए सास ससुर द्वारा बहू का पुनर्विवाह करना न्यायिक और नैतिक दायित्व है। तथा मनुर्भव। आगे यह है कि ब्राह्मणों ने अपने कर्मकाण्डों में नारी को ही अनेक व्रतों का ठेका दे रखा है। जैसे सावन में बहनें अपने भाई की लम्बी आयु हेतु **'वीरपोस'** का व्रत रखती हैं। भाईयों को अपनी बहनों के लिए कोई व्रत क्यों नहीं? भादों में माँ अपने बेटों के लिये हलछठ का व्रत रखती हैं तो बेटों को अपनी मां के लिए व्रत क्यों नहीं? पत्नी अपने पति के लिए करवा चौथ का व्रत रखती हैं तो पति को अपनी पत्नी के लिए कोई व्रत क्यों नहीं? अगर अधिकांश महिलाएं करवा चौथ व्रत नहीं रखती हैं तो क्या इन पत्नियों के पति अल्पायु में मर जाते हैं। उत्तर नहीं। ये सब ढोंग- पाखण्ड है। समय और धन की बर्बादी है। अतः दयानन्द का नारा-वेदों की ओर लौटो और वेदों का सन्देश - मनुर्भव। मानवता, समानता से बढ़कर धर्म नहीं है। अतः ब्राह्मण ही ऊँच-नीच, छूआछूत, जातपात की खोरापात का जनक है। ढोंग, अंधविश्वास का जहर फैलाया है। जबकि ऋग्वेद में ज्ञान का भण्डार है और ज्ञान से बुद्धि की शुद्धि होती है। यजुर्वेद में धार्मिक कर्म-काण्ड है, जो यज्ञ द्वारा संसार का परोपकार और पर्यावरण की शुद्धि होती है। सामवेद में ध्यान-साधना, उपासना और भक्ति निहित है, जिससे मुक्ति

www.thearyasamaj.org

की प्राप्ति होती है। अथर्ववेद में विज्ञान का भण्डार भरा है। वेद ही धार्मिक ग्रन्थ है, वेदानुसार जीवन-यापन करने वाला ही आर्य (श्रेष्ठ) कहलाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सैकड़ों ग्रन्थों का गहन अध्ययन करने उपरान्त मानव जाति के कल्याणार्थ, वाम-मार्ग के नाशार्थ- **''वेदों की ओर लौटो''** का नारा प्रदान करके मनुष्य बनों ताकि भारत में असमानता का जहर-ऊँच-नीच, छूआछूत जात-पात की दीवार को धराशाही करके सबसे महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व कार्य जो जातिवाद् के ठेकेदारों द्वारा सताये गये लाखों शूद्रों को जो मुसलमान ईसाई, बौद्ध बन गये, उनका शुद्धिकरण करके पुनः अपने स्वजन बनाकर धर्मान्तरित किया। ऐसे सकारात्मक और रचनात्मक कार्य के योगदान से दया के योगिराज के उपकारों से हम कभी ऋण-मुक्त कदापि नहीं हो सकते हैं, अस्तु-

सौ बार जनम लेंगे, हर बार फना होंगे।
अहसान दयानन्द के फिर भी न अदा होंगे।।

अनन्तः दयानन्द का नारा ''वेदों की ओर लौटो'' तथा वेदों का सन्देश '**मनुर्भव**' अनुसारः- **गर इन्सान, इन्सान बन जाये।**

सारे जहां के दर्द मिट जाये।
इन्सान, इन्सान नाम से मशहूर है।
हकीकत में इंसान, इंसानियत से बहुत दूर है।
गर इन्सान, फरिश्ता न बन पाये। यह कोई गम नहीं है।
काश! इंसान, इंसान ही बन जाये। यह कोई कम नहीं है।।
भूत से नाता अटूट हमारा। आज है सब कुछ हमारा।
गर जीवन में है पुरुषार्थ। सुन्दर-सुखद भविष्य हमारा।।
प्यास के लिये आब की आवश्यकता होती है।
श्वास के लिये हवा की आवश्यकता होती है।।
आबो-हवा पर चलते हैं जमाने के कारोबार।
आनन्द के लिये दया की आवश्यकता होती है।।
याद के लिये परोपकार की आवश्यकता होती है।
परोपकार के लिये यज्ञ की आवश्यकता होती है।।
यज्ञ के लिये वेदों की आवश्यकता होती है।
अस्तु वेदों की ओर लौटो, वेदों से मनुर्भव।।
यह संसार कहीं श्मशान न बन जाये, तनिक सोचिए।
अभिशाप को वरदान बनाने के लिए, चिन्तन कीजिए।।
सोचिए! ऐ धर्म- विज्ञान को भगवान् मानने वालों।
पहले! इन्सान, को इन्सान बनाने की, सोचिए।
जो बोले सो अभय ''वैदिक धर्म की जय''
महर्षि दयानन्द सरस्वती का आह्वान-वेदों की ओर 'लौटो'
वेदों का संदेश - ''मनुर्भव'' (जनया दैव्यं जनम्) (जय भारती)●

देव दयानन्द शरणम् गच्छामि (भाग-१)

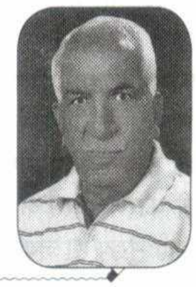

- अभिमन्यु कुमार खुल्लर -
२२, नगर निगम क्वार्टर्स जीवाजीगंज,
लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
चलभाष - ०९५१६६२२९८२

ब्रह्मानन्द, सच्चिदानन्द के सन्सर्ग में मोक्षानन्द रसपान करती हुई महर्षि दयानन्द की आत्मा से सम्पर्क करने की मेरी अभिलाषा दिन व दिन बलवंती होती गई। सम्पर्क करने का कोई उपाय न देखकर कम्प्यूटर का ध्यान आया। गुगल पर सब जानकारी मिल जाती है। पर वीडियो कान्फ्रेन्सिंग के लिये महर्षि दयानन्द उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। मैं तो उनसे आमने-सामने बात करना चाहता हूं। केवल उनसे ही। संकट में उन्हीं ने मुझे डाल रखा है।

कुछ समय परेशान रहा। **अचानक मास्तिष्क ने सूचना दी कि कल्पना लोक में ''महर्षि दयानन्द'' से बात की जा सकती है। क्षणभर में ही महर्षि और मैं आमने सामने। महर्षि से कहा आपने बड़े संकट में डाल दिया है?**

महर्षि ने कहा - कैसे?

मैं - आपके बताये ईश्वर के उन्नीस गुण-तत्वों। मानदण्डों में से केवल दो गुण तत्वों-निराकार और सर्वव्यापक से मुझे सर्वाधिक आपत्ति है।

महर्षि - इन दो गुणों से ही क्यों?

मैं - इन दो गुणों के कारण ही आप द्वारा समर्थित ईश्वर के लिये सम्भव हो पाया है कि वह इस पृथ्वी लोक में ही नहीं, अपितु अनन्त ब्रह्माण्ड के कण-कण में समाया हुआ है।

महर्षि - ठीक-ठीक समझा तुमने।

मैं - आपका ईश्वर समस्त चेतन जगत् में, मानव-जीवात्मा के कर्मों का ही नियामक है, अन्य जीवों का नहीं। कर्म के अनुसार ही पक्षपात रहित न्याय से फल-सुख-दुःख देता है। यह क्रम एक जन्म से दूसरे जन्म तक चलता रहता है। जब तक जीवात्मा मोक्ष को न प्राप्त कर ले। मोक्ष का रास्ता बड़ा कठिन-टेढ़ा है। आप यह भी मानते हैं कि ईश्वर की पूजा सर्वमान्य प्रचलित रूप में नहीं की जाती। उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना की जानी चाहिये। यही नहीं, उसके गुण कर्म और स्वभाव अपनाकर अपना चरित्र सुधारना चाहिये अन्यथा उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना का कोई लाभ नहीं।

महर्षि - बहुत ठीक समझा तुमने।

मैं - बस, बहुत हो चुका। बहुत कठिन है आपके ईश्वर को साधना।

www.thearyasamaj.org

मुझे आपका ईश्वर स्वीकार नहीं।

महर्षि - फिर किसे ईश्वर मानोगे?

मैं - किसी को भी। ब्रह्मा, विष्णु, शिव।

महर्षि - ठीक है। संस्कृत में 'धातु' से शब्दार्थ ग्रहण किया जाता है। अत: समस्त सृष्टि का निर्माण करने से 'ब्रह्मा', सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु', कल्याण अर्थात् सुख देने वाला होने से उस परमात्मा को 'शिव' कहते हैं। ये तीनों विशेषण एक ही परमात्मा के हैं। पुराण प्रतिपादित ब्रह्मा, विष्णु, शिव के ईश्वर परक अर्थ किये जाए तो तीन ईश्वर सिद्ध होते हैं जबकि ईश्वर एक ही है। ब्रह्मा की पूजा साधारणतया प्रचलन में नहीं है। पुष्कर-राजस्थान में उसका एक ही मंदिर है। शिव की पूजा नहीं होती। योनि आकार के पात्र में स्थापित शिवलिंग की पूजा होती है। क्या तुम शिवलिंग की पूजा ईश्वर मानकर करोगे?

मैं- मेरा दिमाग घूम गया। मैं चुप हो गया।

महर्षि - अधिकांशत: विष्णु की पूजा प्रचलन में नहीं है। उनके अवतारों की पूजा होती है। अवतार होने से ईश्वर 'अजन्मा' और 'अमर' नहीं हो सकता। सब जानते हैं अवतारों/महापुरुषों का जन्म हुआ ओर उनका स्वर्गवास भी हुआ। तुम उनके अवतारों की पूजा करोगे?

मैं - हाँ।

महर्षि - उनकी पत्नी, बच्चों और सेवक की भी?

मैं - आपका इशारा समझ रहा हूं। श्रीराम भगवान हैं, सीता माता हैं और दास भाव में सेवा करने वाले हनुमानजी हैं। इन तीनों की पूजा-अर्चना करुँगा।

महर्षि - क्या इनकी पूजा पृथक-पृथक ईश्वर मानकर करोगे या इनमें एक ही ईश्वर हैं, ऐसा मानकर करोगे।

मैं - जिसकी मूर्ति के सामने खड़े होकर पूजा करते हैं, उसी में ईश्वर भाव रखकर पूजा की जाती है।

महर्षि - भागवत् के माखन चुराने वाले, गोपियों के साथ रास-लीला करने वाले श्रीकृष्ण की भी तुम पूजा करोगे?

मैं - श्रीकृष्ण की पूजा का सर्वाधिक प्रचलित रूप यही तो है।

महर्षि - यह तो विष्णु के दो अवतारों की बात हुई। अभी बाईस अवतार और हैं। पौराणिक ३३ करोड़ देवता मानते हैं। उनकी पूजा के लिये तुम्हें करोड़ों बार जन्म लेना पड़ेगा और मरना पड़ेगा।

मैं - आप डरा रहे हैं।

महर्षि - नहीं। मैं तो तुम्हारे ईश्वरों-देवताओं का परिचय करा रहा हूं। अच्छा, यह बताओ कि इनमें से किसी एक ही ईश्वर की पूजा क्यों न करोगे?

मैं - इसलिए कि यदि एक देवता प्रसन्न न हो तो दूसरा और दूसरा नहीं तो तीसरा... कोई न कोई तो पिघलेगा। मेरा काम बन जाएगा।

महर्षि - क्या काम बन जाएगा?

मैं - मुकदमा जीत जाऊँगा।

महर्षि - किससे मुकदमा जीत जाओगे?

मैं - बड़े भाई से।

महर्षि- क्या दशरथ पुत्र भरत ने श्री रामचन्द्रजी के विरुद्ध मुकद्दमा जीतकर अयोध्या का राज्य प्राप्त किया था?

मैं - चकरा गया। कोई उत्तर नहीं था। मौन साध गया।

महर्षि - इन देवी देवताओं के अतिरिक्त पुट्टपार्थी के साँई बाबा (अब स्वर्गवासी) शिरडी के साँई, आसाराम और कबीर पंथी रामपाल (दोनों जेल में हैं, और उनकी जमानत भी नहीं हो रही।) इनकी भी पूजा ईश्वर मानकर करोगे यदि तुम्हारी मनोकामना पूर्ण नहीं हुई तो!

मैं - अवश्य ही करनी पड़ेगी। मुझे अपनी मनोकामना पूर्ति से मतलब है, कोई भी करे।

महर्षि - कब्र में मृत अवस्था में पड़ा कोई पीर-फकीर भी?

मैं - बिल्कुल

महर्षि - के इन प्रश्नों से मस्तिष्क में धुंधलका छाने लगा था। दिमाग गरम हो चला था। अन्दर ही अन्दर व्याकुलता बढ़ने लगी थी। इतने में ही महर्षि ने अगला प्रश्न दाग दिया - पता है पण्डे, पुजारी, महंत मनोकामना पूरी न होने पर क्या कहते हैं?

मैं - हाँ पता है। ज्योतिषियों के पास भेजते हैं जो ग्रह नक्षत्रों के विकट जाल में फंसा देते हैं। गृह-नक्षत्रों की बाधा पार करने के लिए व्रत, उपवास, पूजा आदि कराते हैं। जमकर दान-दक्षिणा लेते हैं। फिर भी यदि मनोकामना पूरी नहीं होती तो 'भाग्य' का लिखा बताते हैं।

महर्षि - इसके अतिरिक्त, परिवार में मृत्यु होने पर 'तेरही का भोज, गया (बिहार) में पिण्डदान, प्रतिवर्ष श्राद्ध आदि भी करना पड़ेगा।' अब तक मेरा धैर्य टूट चुका था।

मेरी मनोदशा को भाँपकर महर्षि ने कहा वत्स! सच्चे ईश्वर की खोज की कामना चौदह वर्ष की आयु में हुई। २१ वर्ष की आयु में गृहत्याग के पश्चात् चौदह वर्ष तक रात-दिन की सच्चे ईश्वर की खोज में, साधु सन्यासियों के पास समस्त भारत में भटकता रहा। तुम एक ही वार्तालाप में, थोड़े से उद्घाटन से ही घबरा गए। वेद सम्मत ईश्वर कोई उल्टी सीधी मनोकामना पूरी नहीं करता। मुकद्दमा नहीं जिताता। चोरी-चपाटी, अपहरण, बलात्कार, भ्रष्टाचार में सहायता नहीं करता। वह पुरुषार्थी - परिश्रमी, मेहनती सदाचारी मनुष्य बनने की प्रेरणा करता है। सत्कर्म करने की आज्ञा करता है। ऐसे मानव की वह पूरी-पूरी सहायता करता है। कष्ट पड़ने पर वह राह दिखाता है।

हे महर्षि! आपने सही कहा। देव दयानन्द शरणम् गच्छामि।●

www.thearyasamaj.org

गुरु-शिष्य मिलन

- देवनारायण भारद्वाज,
अलीगढ़ (उ.प्र.) चलभाष -०५७१-२७४२०६१

मथुरा नगरी मधुपुरी मही, पुरियों में पुरी पुरानी है। गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

यहीं कृष्ण की जन्मभूमि है, वह कारागार कठोर यहीं।
वासुदेव-देवकी बन्दीगृह, निर्दयी कंस का ठौर यहीं।।
कर दिया कृष्ण ने कंस-नाश, दैत्यों की मिटी निशानी है।
गुर-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

गोपालन भूमि सुरक्षा की, कालिया कन्हैया ने नाथा।
गोकुल गोवर्धन निधिवन का, चमकाया वृन्दावन माथा।।
नन्द यशोदा ग्वाल-बाल ने, बांसुरी सुनी सहगानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

रण-मरण छोड़ श्रीकृष्ण चले, गुजरात द्वारिका जा पहुँचे।
कुरु-पाण्डव युद्ध महाभारत, इस योगी ने इतिहास रचे।।
व्रजभूमि महा गमगीन हुई, छा गयी यहाँ सुनसानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

पंजाब प्रान्त से चला एक, सारस्वत किशोर चक्षु हीन।
जा पढ़ा-पढ़ाया काशी में, हो गया यात्री श्रुति प्रवीन।।
उसके व्रज में बस जाने से, मथुरा फिर से मुस्कानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गई कहानी है।।

करतार तीर गंगापुर की, कुटिया यमुना के तीर बनी।
व्रज विरजानन्द विराज गये, उनकी गरिमा गम्भीर बनी।।
गुरु की खुल गयी पाठशाला, अब उसकी कीर्ति सुनानी है।।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।

सैकड़ों पढ़ाये शिष्य यहाँ, जो पेट पालने वाले थे।
गुरु के संकल्प निभायें जो, वे ऐसेनहीं उजाले थे।।
सद् शिष्य शुभागम हित तकते, प्रज्ञान आँख अकुलानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

रीते दिन बीते बहुतेरे, हुयी द्वार पर सहसा दस्तक।
वह दस्तक ऐसी दस्तक थी,मानो खुलती कोई पुस्तक।।
सुनकर ही एक प्रश्न-उत्तर, गुरु ने आभा अनुमानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।

कुटी-द्वार पर सुनकर आहट, गुरुवर ने पूंछा कहो कौन?
आये गुरु-द्वारे दयानन्द, जानने यही मैं अहो-कौन।।
अभिलाषित शिष्य की गुरुवर ने, की कुटिया में अगवानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

व्रज छोड़ कृष्ण गुजरात गये, द्वारिकाधीश ये कहलाये।
गुजरात छोड़कर दयानन्द, बन परिभ्राट मथुरा आये।।
गुरु-शिष्य मिलन मन भावन क्षण, अनुपम उत्तम वरदानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

ठुकराये ग्रन्थ अनार्ष सभी, हर आर्ष ज्ञान अवदान किया।
व्याकरण वेद की विद्या दे, सद्शास्त्र शक्ति संधान किया।
गुरुवर से सतत स्नेह पाकर, उर में उमंग उमगानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

गुरुदेव पढ़ाते पाठ इन्हें, तत्काल कण्ठ कर लेते थे।
चाहे जा डूबे जमुना में, वे पाठ न फिर से देते थे।।
तप तीव्र साधना अनुशासन, गुरु-सेवा आज्ञा मानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

गुरु-प्यार दीक्षा देख-देख , कुछ सहपाठी जल जाते थे।
गुरुवर से कानाफूसी कर, वे इनको दण्ड दिलाते थे।।
निज तन पर सह कर गुरु-प्रहार, गुरु की काया सहलानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

इन दिनों पड़ा दुर्भिक्ष बड़ा, भोजन के लाले पड़े रहे।
ये सूखे चने चबाकर भी, स्वाध्याय लक्ष्य पर अड़े रहे।।
दुर्गाप्रसाद, श्री अमरलाल, इनके आहार प्रदानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

रात्रि दीप की तेल व्यवस्था, लाला गोवर्धन ने कर दी।
पत्थर वाले हरदेव धन्य, जो इनकी दुग्ध व्यवस्था की।।
मन्दिर की तंग कुठरिया वह, विश्राम घाट शयनानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

विद्यारत ढाई वर्ष गये, प्रिय देश-धर्म का प्यार पगा।
अब दयानन्द संन्यासी में, गुर का अनन्य उपकार जगा।।
दीक्षान्त दक्षिणा लौंग थाल, गुरुवर को नहीं सुहानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

ले जाओ अपना लौंगथाल, यह नहीं चाहिए मुझको, लो।
मैं माँग रहा दक्षिणा यही, तुम अपना जीवन मुझको दो।।
कर दिया समर्पित निज जीवन, भावुक नयनों में पानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

जाति-पाति या ऊँच-नीच के, तुमको अवरोध हटाने हैं।
श्रुति शिक्षा नारी रक्षा के, तुमको उपाय अपनाने हैं।।
शास्त्रार्थ, यज्ञ, गौ रक्षा से, रक्षित करना हर प्राणी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

हे दयानन्द लखते रहना, मानवकृत ग्रन्थों का फन्दा।
भर गये क्रूर श्रुति द्रोही हैं, इनमें ऋषि ईश्वर की निन्दा।।
विद्या की यह कसौटी है, जिससे हर क्रिया कसानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

रवि-मेघ ध्वंसवत वेदों का, तप से तथ्यार्थ प्रभाष किया।
संस्कार शीर्ष सद्धर्म ग्रन्थ, रचकर सत्यार्थ प्रकाश दिया।।
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" से, महर्षि महिमा पहचानी है।
गुरु-शिष्य मिलन की मथुरा में, अद्भुत बन गयी कहानी है।।

अद्भुत गुरु विरजानन्द सरस्वती जी व अद्भुत शिष्य दयानन्द जी

ऋत ज्ञान प्रकाश से गुरु व शिष्य ने संसार में वैचारिक चमत्कार कर दिया

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -
गढ़निवास, मोहक्कमपुर,
देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४११५१२०१९

जन साधारण का विचार है कि परमात्मा स्वयं अवतार धारण करके पृथ्वी पर जन्म लेते हैं यह महा अज्ञान है, क्योंकि ईश्वर अजन्मा अव्यय, निरंकार व सृष्टिकर्ता है वह साकार कैसे हो सकता है। यह अलग बात है कि मोक्ष से लौटकर मुक्त आत्मा संसार में अधर्म का नाश करने के लिए जन्म लेती है। जीवों का जन्म दो प्रकार से होता है एक कर्मवद्ध जीव दूसरा कर्मों के बन्धन से मुक्त जीव।

जैसे महाभारत के इतिहास में अर्जुन कर्मवद्ध जीव है और श्रीकृष्ण कर्म से मुक्त जीव हैं। आज हम ऐसे ही दो महापुरुषों का चिन्तन कर रहे हैं जो दोनों अर्थात् गुरु विरजानन्द सरस्वती जी व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी संसार के वित्तैषणा, लोकैषणा, व पुत्रैषणा से मुक्त जीव थे। वह ऋत सत्य ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर संसार का कल्याण करते -करते महाप्रयाण कर गये।

अद्भुत ऋत ज्ञान के पोषक गुरु विरजानन्द सरस्वती जी

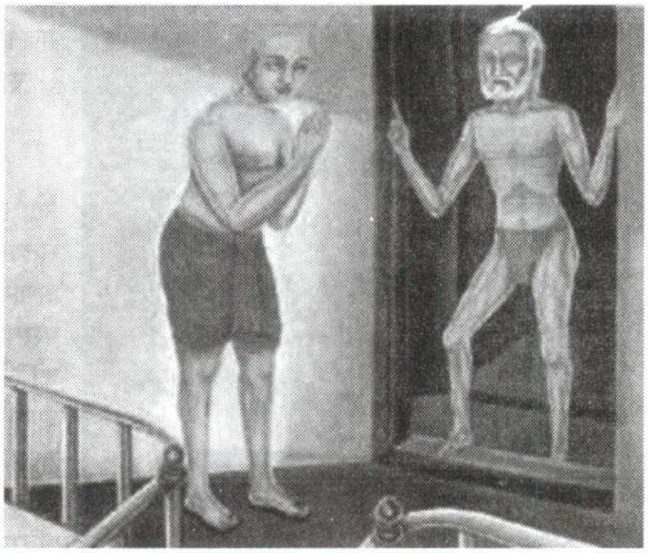

संसार में वैचारिक क्रान्ति द्वारा परिवर्तन करने वाले महापुरुषों के जीवन में विशेष परिस्थितियों में भी वह अपने विपरीत चुनौतियों के चैलेंजों से जूझते हुए प्राणों की बाजी लगा देते हैं। किन्तु वे संघर्ष में पीठ नहीं दिखाते हैं अपितु जमाने को बदल देते हैं। जमाने की गर्दन पकड़कर अपने पीछे चला देते हैं।

इतिहास गवाह है महाभारत काल के बाद सर्वप्रथम भारत की पवित्र भूमि में प्राचीन आर्ष ऋषियों की वेदानुकूल परम्परा द्वारा ऋत सत्य के मार्ग पर चलाने वाले गुर विरजानन्द जी का जन्म संवत् १८५४ में ब्राह्मण परिवार में ग्राम गंगापुर पंजाब में हुआ था। इनके पिता नारायण दत्त सारस्वत ब्राह्मण थे। पांच वर्ष की आयु में नेत्र रोग के कारण इनके नेत्रों की ज्योति चली गई थी। ११ वर्ष की आयु में माता-पिता दिवंगत हो गये थे और इनकी विलक्षण प्रतिभा होने के कारण सारस्वतादि संस्कृत का गम्भीर ज्ञान इनको हो गया था। इनके सिर से मातृत्व व पितृत्व का साया उठने के कारण इनको अपने ज्येष्ट भ्राता व भाभी के शरण में जाना पड़ा। किन्तु भाई व भाभी का क्रूर व शोषण के स्वभाव के कारण उनका संसार से चित्त उपराम हो गया और इन्होंने घर छोड़ दिया।

उत्तराखण्ड के तीर्थ ऋषिकेश के वनों में तप करने लगे तथा १८ वर्ष की अवस्था में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी ने सन्यास ग्रहण किया तभी से इनका नाम स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी हो गया। संन्यास लेने के पश्चात् भारत का भ्रमण करते हुए मथुरा को इन्होंने अपना शिक्षालय का केन्द्र बना लिया था।

इसको हम चमत्कार ही कहेंगे कि इनकी आर्ष ग्रन्थों में अटूट श्रद्धा होती चली गयी और इनको पुराण आदि मानुषी ग्रन्थों से बड़ी घृणा थी। इसी कारण वह कोमुदी और पुराण आदि अनार्ष ग्रन्थों के रचयिता को बड़ी तुच्छ दृष्टि से देखते थे और शिष्यों को शिक्षा देकर कहते थे कि इन मनुष्य कृत ग्रन्थों ने मानव समाज में अन्धविश्वास व भ्रम जाल फैला दिया है और ईश्वरीय ज्ञान वेदों से ऋषियों के ऋत ज्ञान के अभाव से संसार को पीछे ढकेल दिया है।

वह वेदों को स्वत: प्रमाण मानते थे और अपने शिष्यों को ऋषि कृत ग्रन्थ पढ़ाते थे वे व्याकरण के सूर्य कहलाते थे। अष्टाध्यायी महाभाष्य व्याकरण को मुख्य ग्रन्थ मानते थे तथा कौमुदी मनोरमादि मनुष्यकृत न्याय मुक्तावली भागवतादि पुराण व रघु वशांदि काव्य, वेदान्त के पंचदशी इत्यादि नवीन सम्प्रदायों के जितने ग्रन्थ थे उनको अशुद्ध व अनार्ष मानते थे।

अद्भुत स्वामी दयानन्द सरस्वती गुरु विरजानन्द जी के चरणों में -अब हम दूसरे महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जिन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हैं यद्यपि आर्य जगत् महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र से अवगत है यहां पर हम उनके वैचारिक क्रान्ति पर विचार करते हैं।

अट्ठारहवी व उन्नीसवी शताब्दी में भारत में अनेक विभूतियों ने जन्म लिया उनमें ऋषि दयानन्द ने सबको पीछे छोड़ दिया क्योंकि अनेक समकालीन विभूतियों ने एक विधा पर कार्य किया, किन्तु देव दयानन्द जी ने समाज की तमाम, धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक बुराइयों को जड़

www.thearyasamaj.org

से उखाड़ने का कार्य किया। दयानन्द समय का दास बनकर नहीं आये थे, किन्तु समय को अपना दास बनाने आये थे। साधारण लोग ललकार सुनकर जीवन संग्राम से भाग खड़े होते हैं और जमाने का रंग पकड़ लेते हैं।

ऋषि दयानन्द जब इस डूबते भारत देश के रणांगन में उतरे तब उन्हें चारों और ललकार ही ललकार सुनाई दी। सबसे बड़ा चैलेन्ज था विदेशी राज्य की। उन्होंने कहा मैं विदेशी राज्य को बरदास्त नहीं करूंगा। देश की परतन्त्रता ही ऋषि दयानन्द के सम्मुख सबसे बड़ा चैलेन्ज था। वह समाज की हर समस्या से अगम हर क्षेत्र में छाती तान खड़े रहे तथा अड़े रहे।

तीन वर्ष का चमत्कार

१४ नवम्बर १८६० के दिन स्वामी दयानन्द जी ने गुरुविरजानन्द का द्वार खटखटाया, अन्दर से आवाज आई कौन, इन्होंने उत्तर दिया यही तो पूछने आया हूं, मैं कौन हूं। अन्दर से आवाज आई अन्दर आ जाओ और जो अनार्ष ग्रन्थ बगल में दबाये हों उन्हें यमुना में फेंक आओ। अद्‌भुत गुरु के अद्‌भुत शिष्य स्वामी जी ने गुरु विरजानन्द जी से केवल ३ वर्ष व्याकरण पढ़ा था और पिछला सब कुछ भुला दिया था। रण क्षेत्र में उतरकर उन्होंने जो भी कार्य किये, वह सब इन वर्षों का चमत्कार था। तीन वर्षों में जो पाया वह बहुत ही मूल्यवान था। उन्होंने अपने गुरु से जो भेद पाया था, वह था आर्ष और अनार्ष का भेद करना इसी आर्ष क्राान्ति का मूल स्त्रोत सत्यार्थ प्रकाश वैचारिक आर्ष क्रान्ति का ग्रन्थ लिखा और उसमें ३७७ ग्रन्थों का उदाहरण,

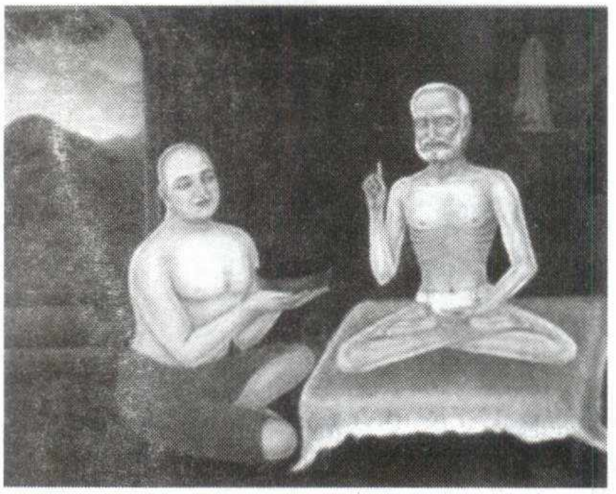

१५४२ वेद मन्त्रों का उद्धरण लिखा। ऐसे विचार उस युग में कोई सोच भी नहीं सकता था। और १८७४ में स्वराज्य सर्वोत्तम है इसे लिखने का साहस केवल महर्षि दयानन्द जी ही कर सके थे। उन्होंने पुनः हमें वेदों की ओर लौटाया। तीन वर्षों के अध्ययन ने संसार के रुढ़ी विचारधाराओं को परिवर्तन कर दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा मुख्य कार्य

सबसे प्रथम कार्य उन्होंने जो किया कि मैं विदेशी राज्य को बरदाश्त नहीं करूंगा और तीन वर्ष उनके अज्ञात जीवन में उन्होंने जगह-जगह घूमकर स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए प्रचार किया होगा। यही कारण है कि उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई थी और अस्सी प्रतिशत आर्यों ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपना बलिदान दिया था।

रुढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सदियों से परम्परागत रुढ़ीवाद पर कठोर प्रहार किया। उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में रुढ़िवाद को तिलांजलि देने का नारा लगाया। ऋषि दयानन्द के समय में भारत के हर क्षेत्र में हलचल मच गयी।

धार्मिक क्षेत्र में रुढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि ने सबसे पहला प्रहार वेदों के रुढ़ी अर्थों पर किया और निरुक्त शास्त्र के आधार पर उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में इतिहास नहीं है अर्थात् प्रत्येक मन्त्रों के योगिक ईश्वर परक अर्थ हैं। उन्होंने सायण, मेक्समूलर, महीधर जेकोबी विद्वानों के अर्थों को उलट दिया। इसी एक कार्य ने मूर्तिपूजा व अन्य धार्मिक आडम्बरों को बदल दिया।

सामाजिक क्षेत्र में रुढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि समझते थे कि एक तो भारतवासी विदेशियों के गुलाम हैं दूसरे सामाजिक अन्धविश्वासों से अपना अहित कर रहे हैं। उन्होंने तमाम सामाजिक बुराइयों का बहिष्कार किया। महर्षि ने समाज सुधार की रूपरेखा बना दी। उसी को लेकर २०वीं शताब्दी में सामाजिक व राजनैतिक नेताओं ने कार्य किया।

राजनैतिक क्षेत्र में रुढ़िवाद पर प्रहार

महर्षि दयानन्द ने धार्मिक व सामाजिक नेता होते हुए भी इस विचार पर प्रहार किया। सत्यार्थ प्रकाश के ८वें सम्मुलास में लिखा- अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यवर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है कोई कितना ही करे। परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। उक्त विचार विरजानन्द जी व महर्षि दयानन्द जी की बहुत बड़ी क्रान्ति थी।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज वैचारिक क्रान्ति का सूर्य है

आर्य समाज संगठन ने अपने जन्मकाल से संसार में प्रत्येक क्षेत्र में सुधारवादी वैचारिक क्रान्ति की कभी न बुझने वाली ज्योति जगा रखी है। भारत के इतिहास में अब तक किसी भी अन्य संगठन ने इतना बड़ा कार्य नहीं किया और न ही कर सकेगा। आज भी प्राचीन भारत की संस्कृति संस्कार यदि जिन्दा है तो आर्य समाज के कारण है। आर्य समाज से जुड़े संन्यासी, वानप्रस्थी, उपदेशक, कार्यकर्ता व सदस्यगण बहुत-बहुत धन्यवाद के पात्र हैं। सम्पूर्ण विश्व में जुड़े आर्य समाज के अनुयायी अपने लिये मोक्ष का मार्ग बना रहे हैं और संसार को श्रेय मार्ग का पथिक बनाने में अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।●

www.thearyasamaj.org

ऋषि बोध से बोध

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

प्रति वर्ष महाशिवरात्रि के पवित्र पावन अवसर पर समस्त आर्य जन ऋषि बोधोत्सव मनाते हैं। इसी दिवस बालक मूलशंकर के मन में शिवरात्रि की उस रात को जब अन्य सभी सो रहे थे तभी सही अर्थों में जागते बालक मूलशंकर ने जब चूहों को शिवलिंग पर उत्पात करते प्रसाद खाकर मल मूत्र विसर्जन करते देखा तो उस शुभरात्रि पर बालक मूलशंकर के मन में तीव्र उत्कंठा ने मूलशंकर के स्वामी दयानन्द बनने की यात्रा का शुभारंभ कर दिया और उसने ईश्वर के सत्यस्वरूप को वेदों की सही व्याख्या करते हुए रखा। देव दयानन्द द्वारा दिए गए ईश्वर के सत्यस्वरूप, वैदिक मान्यताओं, आर्य सिद्धांतों और नियमों को हम आर्य जन मानते हैं। अर्थात ऋषि बोध से हम सभी को बोध लेना चाहिए।

अब यक्ष प्रश्न उत्पन्न होता है क्या हम सही मायनों में ऋषि बोध से बोध लेकर अब सर्वथा सरल रूप में सुलभ आर्य मान्यताओं को सीख समझ कर अपने जीवन में उतार कर एक सच्चे आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बन पाए। **क्या हम देव दयानन्द के 'कृणवन्तों विश्वमार्यम्' के लक्ष्य की प्राप्ति के प्रथम सोपान कृण्वन्तो स्वयमार्यम् को भी पूरा सके? क्या हम सही अर्थों में ऋषि बोधोत्सव को मना रहे हैं या फिर बोधोत्सव मनाने के अधिकारी हैं? अब इन प्रश्नों पर विस्तार से विचार करते हैं।**

देव दयानन्द ने आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्यस्वरूप को हम सभी के लिए दिया था और जड़पूजा को आर्यावर्त के लिए घातक और लम्बी गुलामी का कारण बताया। परन्तु हम विचार करें क्या आज भी चेतन मानव जड़ के आगे माथा नहीं पीट रहा? क्या आज भी हमारी मातायें, बहनें, बेटियां तथाकथित मुस्लिम कब्रों, पीरों पर अज्ञानतावश सिर नहीं पटक रहीं? यदि यह स्थिति आज भी व्यापक है तो क्या हमने ऋषि बोध से कुछ बोध लिया?

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य देव दयानन्द ने संसार का उपकार करना बताया था। क्या आज हम आर्य समाज के सेवा कार्यों को इतना व्यापक कर पाए हैं कि लोग हमारा अनुसरण करने लगें। क्या आर्य समाजों में संसार का उपकार करने वाले सेवा कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है? **क्या हम दूसरों के दुःख से दुःखी होकर उसकी सहायता करने के लिए तत्पर होते हैं? यदि नहीं तो क्या हम कह सकते हैं कि हम अपने ऋषि के बोध से कुछ बोध लिया?**

आर्य समाज की स्थापना पाखंड खंडन, सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों, विषमताओं के विरूद्ध एक जन आन्दोलन के रूप में की गई थी। क्या आर्य समाज पाखंड खंडन और सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन कर पाया। आज भी समाज में डायन, भूत, प्रेत, बाधा, चमत्कार, नामदान जैसी बुराइयां हमारा शोषण नहीं कर रहीं? **क्या आज भी तथाकथित कथावाचक हमारी अबोधता और धर्मभीरूता का लाभ उठाकर ईश्वर के स्वयंभू ठेकेदार या स्वयं को ईश्वर घोषित करके हमारा शोषण नहीं कर रहे। यदि ऐसा है तो क्या हम सही मायनों में बोधोत्सव मनाने के अधिकारी हैं?**

देव दयानन्द ने जितना उपकार इस पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण सोच पर तीखा प्रहार करते हुए नारी जाति के उत्थान के लिए किया उसके लिए नारी जाति को सदैव उनका ऋणी बना दिया। देव दयानन्द ने बालविवाह, दहेजप्रथा, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, नारी उत्पीड़न पर चोट करते हुए नारी शिक्षा का द्वार खोला। परन्तु क्या आज भी नारी पर अत्याचार बन्द हो गया। क्या आज भी निर्भया जैसे सामूहिक रेपकाण्ड या फिर ऑनर किलिंग जैसी बुराइयां विद्यमान नहीं है? **क्या आज भी कोमल संवेदनशील ममतामयी माँ को उसके ही गर्भ में जन्म ले रहे उसके प्रतिरूप एक कन्या भ्रूण को उसके सर्वाधिक सुरक्षित स्थान पर मार देने के लिए विवश नहीं किया जाता? यदि ऐसा हो रहा है तो आर्य समाज और शेष समस्त मानव जाति ने देव दयानन्द के बताए आदर्शों पर चलकर बोध कहां लिया?**

देव दयानन्द ने आर्ष शिक्षा पद्धति पर बल दिया। उनके बताए मार्ग पर चलते हुए जहां महामानव स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की पुनः स्थापना गुरुकुल खोलते हुए की वहां त्यागमूर्ति श्वेतवस्त्रों में संन्यासी महात्मा हंसराज ने एक आन्दोलन के रूप में प्राचीन और नवीन को जोड़कर डी.ए.वी. आन्दोलन प्रारम्भ किया। परन्तु हमने देश की आजादी के उपरान्त गुलामी की मानसिकता वाली मैकाले की उस शिक्षा प्राणाली को अपना लिया जो हमारे देश के भावी नागरिकों को आज भी मानसिक दासता के बन्धन में जकड़ रही है। आज भी हमारी इस शिक्षा व्यवस्था में आर्य संस्कार देकर बच्चों को एक अच्छा मनुष्य सच्चा आर्य बनाने का सर्वथा अभाव है। ऐसे में क्या हम कह सकते हैं कि हम बोधोत्सव मनाने के हम सच्चे अधिकारी हैं या फिर हमने ऋषि बोध से कोई बोध नहीं लिया। एक सामान्य वाहन चालक भी अपने आगे चल रहे वाहन को देखकर किसी गड्ढे से बचने के लिए सही दिशा का चयन करके मार्ग परिवर्तन कर लेता है। परन्तु ना जाने क्यों हम आज भी आजमानसिक दासता के बंधन में बंधे तथाकथित विकास के नाम पर पाश्चात्य अन्धानुकरण करते हुए अपने साफ दिखाई दे रहे विनाश की ओर तीव्र गति से दौड़ रहे हैं। हमें गति के रोमांच में अपना विनाश और इतिहास की तलहटी में पड़ी सभ्यताओं के नरकंकाल दिखाई नहीं दे रहे जो अट्टाहस कर रहे हैं आओ तुम भी इतिहास की खाईयों में समा जाओ। यदि सही मायनों में ऋषि बोधोत्सव मनाना है तो आर्य सिद्धांतों मान्यताओं को जान मानकर स्वयं आर्य बनते हुए सबको आर्य बनाना पड़ेगा।●

www.thearyasamaj.org

वैदिक शरीर विज्ञान

- कृपालसिंह वर्मा -
डी. ५७५, गोविन्दपुरम
गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष- ९९२७८८७७८८

(१) हमारे शरीर में ५ ज्ञानेन्द्रियां हैं।

(१) श्रोत्र (२) त्वचा (३) चक्षु (४) रसना (५) नासिका

- श्रोत्र से शब्द (ध्वनि) का ज्ञान प्राप्त होता है। शब्द आकाश का गुण है।
- त्वक से स्पर्श का ज्ञान होता है। स्पर्श वायु का गुण है।
- चक्षु से रूप का ज्ञान होता है। रूप अग्नि का गुण है।
- रसना से रस का ज्ञान होता है। रस जल का गुण है।
- नासिका से गन्ध का ज्ञान होता है। गन्ध पृथ्वी का गुण है।

(२) हमारे शरीर में ५ कर्मेन्द्रियां हैं।

(१) वाक (२) हस्त (३) पाद (४) पायु (५) उपस्थ

- वाक से वाणी प्रकट होती है।
- हस्त से कर्म किया जाता है।
- पाद से गति की जाती है।
- पायु से मल का विसर्जन किया जाता है।
- उपस्थ से जनन क्रिया होती है, और मूत्र का त्याग किया जाता है।

(३) मन एक उभय इन्द्रिय है। जब मन ज्ञानेन्द्रिय से संयुक्त होता है, तो हम ज्ञान प्राप्त करते हैं, जब कर्मेन्द्रियों से संयुक्त होता है तब हम कर्म करते हैं।

(४) अन्तःकरण - अन्तःकरण ४ है।

(१) मन (२) बुद्धि (३) चित्त (४) अहंकार

- आत्मा मन से संकल्प विकल्प करता है।
- बुद्धि से सत्य-असत्यता, धर्म-सधर्म तथा कर्त्तव्य- अकर्त्तव्य का निश्चय करता है।
- चित्त से स्मरण करता है।
- अहंकार से अपने को जानता है।

(५) (१) शरीर में स्थित प्राणों का प्रकाशक मन है।

ब्रह्माण्ड में स्थित प्राणों का प्रकाशक चन्द्रमा है।

(२) शरीर में स्थित वाणी का प्रकाशक प्राण है।

ब्रह्माण्ड में स्थित वाणी का प्रकाशक अग्नि है।

(३) शरीर में स्थित मन का प्रकाशक ज्ञान है।

ब्रह्माण्ड में स्थित चन्द्रमा का प्रकाशक सूर्य है।

(४) हमारे शरीर को प्राण अन्न से मिलते हैं।

ब्रह्माण्ड के शरीर को प्राण सूर्य से मिलते हैं।

(६) ताप बढ़ाने की क्रिया को प्राण, ताप घटाने की क्रिया को अपान, ताप से कार्य करने की क्रिया को व्यान, परिणामी, ताप को उदान, तथा ताप सम व्यान रखने की क्रिया को समान कहते हैं।

ब्रह्माण्ड में सूर्य '**प्राण**' क्रिया करता है।

पृथ्वी '**अपान**' क्रिया करती है।

वायु **व्यान** क्रिया करती है।

आकाश **समान** क्रिया करता है।

तथा तेज **उदान** क्रिया करता है।

तेज को ही थर्मामीटर से मापा जाता है।

-हमारे शरीर में अन्न से प्राण क्रिया, विसर्जन से अपान क्रिया, ७२०० हिता नाड़ियों से व्यान क्रिया, तेज से उदान क्रिया तथा मध्य भाग से समान क्रिया होती है।

-आत्मा बुद्धि अथवा ज्ञान से प्रेरित होती है। मन बुद्धि से प्रेरित होता है। प्राण मन से प्रेरित होते हैं। शरीर प्राणों से प्रेरित होता है।

आत्मा आनन्द की कामना करती है। आनन्दमय कोष में ही निवास करती है। आनन्दमय कोष मनोमय कोष को प्रेरित करता है। मनोमय कोष प्राणमय कोष को प्रेरित करता है, तब कार्य होता है।

-आत्मा के मूल शरीर में पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रिय, मन तथा बुद्धि ये बारह तत्व होते हैं। आत्मा अपनी इन बारह नाड़ियों का प्रयोग केवल और केवल दो अवस्थाओं में करता है।

(१) जब प्रकृति की शक्तियों से युक्त होता है। अथवा

(२) जब परमात्मा की शक्ति से युक्त होता है। ●

दयानन्द चरितम्

छन्द-७८

जघर्षुः पाषाणे चिकुरमिह मुक्त्यै कतिपये
जुहुस्तोयं भूयः किमपि नदतोये जड़धियः।
परैर्भाग्यं दृष्टं नभसि विविधे तारकचये
विचारैः स्वैस्तीव्रैर्हरसि जड़तां वेदयसि च।।

इस देश में कुछ लोग
अपनी मुक्ति के लिए
पत्थरों पर सिर रगड़ते थे?
कुछ मूर्ख ऐसे भी थे जो
नदियों के जल में बार-बार
जल चढ़ाते थे।
कुछ अनन्त आकाश में घूमते
तारों और नक्षत्रों में
अपना भाग्य निहारा करते थे।
तुमने अपने तीव्र विचारों से
सारी जड़तायें दूर की ओर
देशवासियों को ज्ञान दिया।

आचार्य दीपंकर, मेरठ (उ.प्र.)
साभार-आर्य्य लोक वार्ता

www.thearyasamaj.org

वेदवाणी के ज्ञान से लाभ

- मृदुला अग्रवाल -
१९ सी, सरतबोस रोड, कोलकाता-
चलभाष- ९८३६८४१०५१

'वेदवाणी' ईश्वर ने वेदवेत्ताओं को संसार के सुख के लिये निधि के समान सौंपी है। मनुष्य उस वेद के द्वारा परमाणु से लेकर ईश्वर पर्यन्त खोज करके ज्ञान प्राप्त करे।

''वेदवाणी न्यायकारी परमेश्वर की प्राप्ति के लिये उस ज्ञान का प्रकाश करती हैं जो सर्वत्र विद्यमान है।'' - सामवेद, मन्त्र १४९१

''ऋषियों ने वेद को मनन करके माना है कि वेदविद्या के अभ्यास से संसार के सब मनुष्य और सन्तान उत्तम होते हैं।''- अथर्ववेद, काण्ड १२, सूक्त-४, गन्त्र-१

वैदिक उपदेश से सबके सर्वस्व की रक्षा होती है। वेदवाणी की प्रवृत्ति से संसार के सब प्राणी आनन्दित होते हैं। परोपकारी ब्रह्मजिज्ञासु लोग वेदवाणी को प्राप्त करके संसार का सुधार करते हैं।

जो वेदवाणी प्रयत्न के साथ तप (ब्रह्मचर्य आदि अनुष्ठान) के साथ उत्पन्न की गई है, जो सत्यज्ञान से एवं यथार्थ नियम से स्वीकार की गई है, वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) जिस वेदवाणी के प्राप्तियोग्य स्थान हैं, ब्रह्माण्ड को जानने वाला ईश्वर जिसका स्वामी है, जो वेदवाणी अपनी धारणशक्ति से सब ओर धारण की गई है, श्रद्धा एवं ईश्वर-विश्वास से अति दृढ़ की गई है, दीक्षा (नियम, व्रत, संस्कार) आदि से रक्षा की गई है, यज्ञ (विद्वानों का सत्कार, शिल्प विद्या, अग्निहोत्र और शुभ गुणों के दान) में प्रतिष्ठा की गई है, जिसका यह संसार स्थिति -स्थान है, उस वेदवाणी की प्राप्ति से और उसका सहारा लेकर जितेन्द्रिय पुरुष आनन्द भी पाते हैं एवं संसार में प्रतिष्ठित भी होते हैं। परन्तु जो ब्राह्मण व्रत से, ब्रह्मचर्य से वेदवाणी के लाभों और उपदेशों को समझ लेता है, उस ब्राह्मण को जो लोग सताते हैं, उनसे वेदवाणी को छीनते हैं, ऐसे व्यक्तियों की सुकीर्ति चली जाती है, उनकी वीरता एवं मंगलमयी लक्ष्मी श्री भी चली जाती है। शान्तिकारक वेदविद्या के रोक देने से अधर्म और अज्ञान बढ़ता है। विद्या के रोक से अविद्या के कारण विपत्तियाँ फैलती है। संसार में बड़े-बड़े उपद्रव फैलते हैं, घोर पाप छा जाता है एवं सब प्राणी कष्ट पाते हैं।

वेदवाणी की प्रवृत्ति से जब वेदों का विज्ञान बढ़ता है, जैसे-जैसे मनुष्य उग्र तप करके वेद का प्रकाश करते हैं, वैसे-वैसे भूल करने वाले पाखण्डियों का नाश होता जाता है, संसार में पापियों का नाश और धर्मात्माओं को आनन्द का प्रकाश प्राप्त होता है। वेदवाणी के शुभ गुण प्रकट होने पर दुष्टों की दुष्टता सर्वथा नष्ट हो जाती है। सब में उत्तम विद्वान् एवं सद्गुण प्रचारक जन को चाहिए कि वे मनुष्यों को वेदवाणी का दान करके संसार का उपकार करें। मनुष्य सब गुणों की खान वेदवाणी के अभ्यास से अपनी सब कामनाएं पूरी करता है। वेदवाणी की प्रवृत्ति से संसार में ऐश्वर्य बढ़ते हैं, धन- सम्पत्ति की रक्षा और वृद्धि होती है। जहां राजा विद्वानों का मान-सत्कार से वेदाविद्या का प्रचार एवं प्रकाश करता है, वह राज्य चिरस्थायी होता है। सदा से विद्वानों ने अनेक शक्तियों की कल्पना करके यही निश्चय किया है कि संसार में शिष्टों की वृद्धि करने वाली और दुष्टों को ताड़ने वाली इस वेदवाणी के तुल्य कोई शक्ति नहीं है। प्रतिदिन की होने वाली प्रातः बेला में स्मरण की जानेवाली वेदवाणी के समान परमेश्वर मनुष्यों के ध्यान, मनन आदि कार्यों से जाना जाता है। वेदवाणी के हितकारी ज्ञान का उपदेश करने वाला एकमात्र परमात्मा ही है। वहीं पृथ्वी और अंतरिक्ष में छिपे हुए प्रकाशमान तीसरे द्यु-लोक को भी भलीभान्ति धारण कर परमपद को प्राप्त कराता है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से मनुष्य उच्च होकर वेदवाणी जानकर पृथ्वी की रक्षा कर सकता है, क्योंकि पृथ्वी को पालने वाली वेदवाणी ही होती है। इसीलिए उसका नाम 'वशा' वश में करने वाली है। 'वशा' अर्थात् कामना योग्य वेदवाणी को निश्चय करके मनुष्य नीति, यथार्थ ज्ञान, तीन उद्योगों (ईश्वर के कर्म, उपासना और ज्ञान) आदि को वेदज्ञ ब्राह्मणों से प्राप्त करके अपनी उन्नति करे एवं संसार को प्रकाशित करे। जो मनुष्य वेदवाणियों के नियमों पर चलकर एवं परमात्मा के दिव्यस्वरूप की भक्ति करके मोक्ष सुख भी पाता है एवं असत्य भी नहीं बोलता, उसे भौतिक औषधियों की आवश्यकता नहीं होती। सर्वव्यापक परमात्मा को साक्षी करके श्रेष्ठ गुणवाली वेदवाणी का उपार्जन करके सब विघ्नों को अपने जीवन से हटा सकता है। स्वयं वेदवाणी के ज्ञान से लाभ प्राप्त करके मोक्षज्ञान और तत्वज्ञानों को जानता चला जाता है। **''अघ्न्ये पदवीर्मव ब्राह्मणस्यामिशस्त्या''** मनुष्यों को चाहिए कि जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी होकर बलवती वेदवाणी को प्राप्त करके संसार में प्रतिष्ठित होवे। ●

सावरकर वाद् प्रचार सभा की नवगठित कार्य कारिणी

बुलन्दशहर। हिन्दू महासभा के सहयोगी संगठन, सावरकर वाद् प्रचार सभा की नई कार्यकारिणी का गठन, २०१६-१७ वर्ष के लिए, इस प्रकार हुआ है:-**संस्थापक** - इन्द्रदेव गुलाटी, **संरक्षक** - डॉ. गिरीशचन्द्र गुप्त, **अध्यक्ष** - रमेशचन्द्र सक्सेना वैदिक, **अतिरिक्त अध्यक्ष** - शैलेन्द्र सत्यव्रत, एडव्होकेट, **कार्यवाहक अध्यक्ष** - कालीचरण आर्य, **उपाध्यक्ष** - वीर सिंह, **महामन्त्री** - राजेश गोयल, **वित्तमन्त्री** - मूलचन्द गोयनका, **संगठन मन्त्री** - महेशचन्द्र विश्वकर्मा, **प्रचार मन्त्री** - ओम प्रकाश, प्रकाश बैण्ड वाले, **निर्विभागीय मन्त्री** - अजय कुमार गर्ग, **आय व्यय निरीक्षण मन्त्री** - महेश कुमार अरोरा।

www.thearyasamaj.org

तब और अब

- ओमप्रकाश बजाज -
कालिंदी कुंज, पिपलिया हाना, इंदौर
चलभाष- ९८२६४-९६९७५

हमारे ही देश में एक वह भी समय था जब पढ़ाने वाले और पढ़ने वालों के बीच गुरु-शिष्य का पवित्र रिश्ता होता था। गुरु का स्थान माता पिता से भी ऊंचा माना जाता था। बहुत पुरानी बात को जाने भी दे तो भी स्वाधीनता प्राप्ति से पहले तक स्थिति नितांत भिन्न थी, आज भी पुराने लोग अपने समय के स्कूल कॉलिज के दिनों को याद करके इस बात की पुष्टि करने में नहीं हिचकिचाएंगे। हमारे यहां १९४७ के बाद से ही शिक्षा की नीति पर विचार-विमर्श चलता चला आ रहा है। भान्ति भान्ति के प्रयोग होते आए हैं, हो रहे हैं। पुरानी शैली को दरकिनार कर दिया गया। नई पुख्ता कोई बन नहीं पायी। हालत यह है कि न इधर के रहे हैं न उधर के, प्रदेश अपनी मनमरजी से, जब जैसी सरकार होती है, परिवर्तन कर डालते हैं, बेशक अच्छी भावना से, अच्छे के लिए किन्तु कुछ भी अच्छा सामने दिखाई नहीं पड़ता। कभी कहीं अंग्रेजी हटा दी जाती है, कभी पुनः लागू कर दी जाती है। कहीं त्रि-भाषायी फारमूला जारी हो जाता है, फिर अचानक वह समाप्त कर दिया जाता है। बेचारे बच्चे विषयों की भरमार तथा बस्ते के नित बढ़ते भार से हलकान परेशान रहते हैं। आज ट्यूशन के बिना पढ़ाई सम्भव ही नहीं रही। वह भी हर विषय के लिए अलग-अलग ट्यूटर अलग-अलग दिशा में अलग-अलग दूरी पर। बेचारा बच्चा चक्करघिन्नी बना रहता है, हमने अपने बच्चों से उनका बचपन ही छीन लिया है। उन्हें खेलने कूदने का अवसर ही नहीं मिल पाता। अपनी करनी का दोष हम मासूम बच्चों के सिर मंढ़ने से जरा भी नहीं हिचकते। उन्हें उच्छृंखल की संज्ञा दे देते हैं। स्कूल टीचर्स से पढ़ाने के अतिरिक्त हर संभव काम लेना आम बात है। हमारे कर्णधारों को इसमें कुछ भी अजीब नहीं लगता। शारीरिक दण्ड देना अपराध बना दिया गया है। बेचारे शिक्षक-शिक्षिकाएं समझ नहीं पाते कि उद्दण्ड छात्रों को वे सम्भालें तो कैसे? स्थिति विस्फोटक हो चली है। मगर हमारे शिक्षा शास्त्री खरगोश की नींद सो रहे हैं। स्कूलों कॉलिजों में शिक्षक पढ़ाने से इतर पॉलिटिक्स में अधिक व्यस्त नजर आते हैं। उन्हें संस्थान में पढ़ाने से कहीं अधिक ट्यूशन पढ़ाने में रुचि रहती है, किसी ने क्या खूब कहा है कि **"आज पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले के बीच मात्र इतना रिश्ता है कि छात्र फीस देता है और शिक्षक पगार लेता है!"** कुछ ही समय पहले राजधानी दिल्ली के एक स्कूल में दो छात्रों ने दिन दहाड़े अपने ही क्लास टीचर की चाकुओं से गोदकर हत्या कर दी। एक शहर ने आज के हालात का इन शब्दों में जायजा लिया था-

'वह बाद-ए-खुदा दर्जा उस्ताद को देते थे।
उस्तादी का अगवा भी अब तो है रवा करना।'

एक समय था कि डॉक्टर हकीम वैद्य का स्थान हमारे मन में भगवान के बाद रहता था। डॉक्टर को अपनी परेशानी बताने भर से आधी बीमारी जैसे दूर हो जाती थी। तब डॉक्टर पर विश्वास होता था। आज डॉक्टरी एक पुण्य का काम नहीं मात्र धंधा बन चुका है। पैसा कमाना भर ही एक मात्र उद्देश्य रह गया है। आंखों देखी बता रहा हूं- डॉक्टर साहिब आला एक को लगा रहे हैं, नब्ज दूसरे की पकड़े हैं, हकीकत तीसरे की सुन रहे हैं, नुस्खा चौथे का लिख रहे हैं! मन में आया कि हे भगवान तू ने इन्हें चार हाथ क्यों न दिये। हर डॉक्टर के यहां भीड़ ही भीड़ कई डॉक्टर ४-४, ५-५ दिन बाद का अपाईमेन्ट देते हैं। बताइए मरीज इस बीच करें तो क्या करें। डॉक्टर बढ़ते जा रहे हैं। भीड़ उनकी तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती जा रही है। इनकी फीस! बस खुदा की पनाह! हर बार जाने पर बढ़ी हुई मिलती है। भान्ति-भान्ति के टेस्ट लिखना सामान्य बात है। याद आती है पुराने दिनों की जब डॉक्टर साहिब अपने अनुभव से रोग का निदान कर लेते थे। तब जगह-जगह पैथॉलॉजिकल लैब्ज कहां नजर आते थे। टेस्टों के बारे में अनेक बातें कही सुनी जाती है कि इनमें लिखने वाले डॉक्टर का परसेन्टेज बंधा होता है। नई-नई महंगी से महंगी दवाइयां लिखना तो आम बात है। ढेरों मेडिकल रिप्रजेंटेटिव तथा उनका पूरा का पूरा ढांचा इसी पर तो टिका रहता है। कहा जाता है कि डॉक्टरों को फॉरेन टूर तक कीमती तोहफे दे देकर हर कम्पनी अपनी नई दवाईयां लिखने को प्रेरित और प्रोत्साहित कहती है। मध्यप्रदेश का व्यापम घोटाला कुछ समय से चर्चा में है। अकसर खबरों में आता रहता है, लाखों रुपये लेकर मेडिकल भर्ती परीक्षा में नकली अभ्यार्थी बिठाकर पास करवाना वह भी बहुत बड़ी संख्या में। अब भला कैसे पता चले कि यह डॉक्टर असली है या घोटाले की पैदावार, अनुसूचित जाति वालों को तो आरक्षण के अंतर्गत काफी कम प्रतिशत से सफल घोषित करना ही होता है, वैसे भी डॉक्टरी पढ़ाई कोई आसान काम नहीं है। फीसें ही लाखों में होती है। कई साल की पढ़ाई का खर्च फिर आज मात्र एम.बी.बी.एस. कर लेने से तो काम नहीं चलता। पोस्ट ग्रेजुएशन, स्पेशेलाइजेशन जरूरी है। फिर बंगला, कार, तामझाम भी आवश्यक होते हैं। डॉक्टर दम्पति अपने बच्चों को भी डॉक्टर ही बनाना चाहते हैं, ताकि धंधा पीढ़ी दर पीढ़ी चलता जाय। इस सब के लिए पैसा, अथाह पैसा पहली जरूरत है ही।

मगर सब कुछ नकारात्मक ही हो, ऐसा भी नहीं है, आज भी ऐसे डॉक्टर हैं जो अपने पेशे के प्रति समर्पित हैं। डॉक्टरी पास करते समय ली गई शपथ को भूले नहीं हैं। मैं जबलपुर के एक डॉक्टर साहिब को जानता हूं जो मात्र रु. २/- फीस वर्षों तक लेते रहे। लोगों के बार-बार जिद करने पर ३ रु. किये। आज भी महज १० रु. लेते हैं। चिल्लर की कमी के कारण जबकि लगभग ८० प्रतिशत केसों में ब्लडप्रेशर भी चैक करते हैं। बहुत कुछ बिगड़ा है मगर सब कुछ नहीं बिगड़ा आज भी ऐसे अपवाद मौजूद हैं जो कहते ही नहीं मानते भी हैं कि 'I Treat HE cures.' ●

www.thearyasamaj.org

अनर्थों से बोझिल मानसिकता

जांगिड कुलभूषण- **रामफलसिंह आर्य**
वरि. उप प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जनपद-मण्डी
चलभाष- ०९४१८४७७७१४

साहित्य और समाज में बड़ा गहन सम्बन्ध होता है। साहित्य में वही होता है जो समाज में प्रचलित है और समाज में वही होता है जो साहित्य में सुरक्षित है। समाज की रीति-नीति, परम्परायें, मर्यादायें, मान्यतायें, व्यवहार आदि वे आधार हैं जिन पर समाज रूपी भवन अवस्थित रहता है। साहित्य वह साधन है जो इस अवस्था को बनाये रखता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक आदि जितने भी क्षेत्र हैं वे सभी हमारी व्यवस्था के अंश हैं और इन सभी से हमारा जीवन सदैव प्रभावित भी होता रहता है। न केवल प्रभावित होता है अपितु हमारी मानसिकता, जिसके आश्रय पर हम अपना जीवन चलाते हैं, उसका निर्धारण भी होता है। सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक आदि व्यवस्थायें कहीं न कहीं हमारे स्वार्थों या आवश्यकताओं से अधिक जुड़ी होती हैं जबकि धार्मिक व्यवस्था हमारी आस्था से अधिक बन्धी होती है। आवश्यकता के साथ नियम की बद्धता अधिक रहती है, जबकि धार्मिक क्षेत्र के अपने नियम होते हुए भी वे आस्था के सामने बौने हो जाते हैं। इसी छूट का लाभ उठाकर मध्यकाल में स्वार्थी दम्भी और समाज का शोषण करने की वृत्ति वाले लोगों ने जिस साहित्य का सृजन किया उसमें उनकी यह मानसिकता तो स्पष्ट रूप से झलकती ही है साथ ही साथ इस उपरोक्त छूट का लाभ भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। क्योंकि संस्कृत उस समय की एक प्रतिष्ठित भाषा होने के साथ-साथ विद्वता की कसौटी भी होती थी अतः संस्कृत भाषा में ही उस साहित्य का निर्माण हुआ। जन सामान्य की इस धारणा ने संस्कृत में जो ग्रन्थ लिखे गये हैं वे ही शास्त्र हैं और शास्त्र कभी झूठे नहीं हो सकते वे सभी के लिये आचरणीय है इस कार्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी कोई गंवार से गंवार एवं शिक्षित से शिक्षित मनुष्य भी उन ग्रन्थों को देखकर एक बार तो चक्कर खा जाता है कि वास्तव में यह तो सब कुछ लिखा हुआ है। एक अन्य कारण उन ग्रन्थों की मान्यता का यह भी बना कि धूर्त एवं चालाक लोगों ने उन ग्रन्थों की रचना अपने नाम से न करके ऋषियों के नाम से की और अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये ऋषियों के बनाये हुए ग्रन्थों में भी प्रक्षेप कर दिया कि जिससे उनकी बात की पुष्टि हो सके। पुराण, गृह-सूत्र, विभिन्न ऋषियों के नाम से स्मृतियां, कर्म-काण्ड के विभिन्न ग्रन्थ, सैकड़ों उपनिषदें आदि न जाने कितना विपुल साहित्य रचा गया जिसमें सीधे और सरल वैदिक धर्म के मार्ग को अत्यन्त दुरूह, पैचीदा और उलझनभरा बना दिया। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि इतने दीर्घकाल तक चलने वाली इस भेड़ चाल में किसी ने भी यह विचारने का यत्न न किया कि जो कुछ इन ग्रन्थों में लिखा है वह विज्ञान, तर्क, सृष्टिनियम एवं बुद्धि की कसौटी पर खरा उतरता भी है या नहीं?

निरंकुशता की इस दौड़ में कोई भी पीछे न रहा और जो कुछ संस्कृत भाषा में लिखा जाता रहा लोग अन्धे बन कर उसे अपनाते रहे जिसके फलस्वरूप समाज में अनेकों कुरीतियों ने जन्म लिया और समाज विकृत हो गया। अर्थों के अनर्थ होने से दूषित एवं विकृत मानसिकता का जन्म हुआ जिसे हम आज तक ढो रहे हैं, जिसका बोझ आज भी समाज को दुःखपूर्ण बनाये हुए है। यह बोझ उस फोड़े के समान है कि जिसका भार भी उठाना पड़ता है और दर्द भी सहना पड़ता है। **विदेशी लोगों ने जिस समय संस्कृत, पढ़ी, उपरोक्त कल्पित ग्रन्थों को पढ़ा तो बहती गंगा में हाथ धोने से वे भी न चूके। भ्रमित बुद्धि के वेदों के भाष्यकारों सायण, महीधर, एवं उव्वट आदि के भाष्यों से उन्हें और अधिक बल मिला और अपनी बात सिद्ध करने में उन्हें अधिक कठिनाई नहीं हुई। भारतीय क्योंकि विदेशियों के चंगुल में थे अतः उनके विद्वान योग्य एवं समर्थ हैं इसके साथ-साथ शिक्षित वर्ग भी उनकी चमक दमक से प्रभावित होकर उनका अनुचर बन गया। पेटार्थी और धूर्त लोगों को समाज से कुछ लेना देना ही न था उनका तो हलवा मांडा ठीक से चलता रहे, पुरोहिताई का कार्य इसी प्रकार से प्रतिष्ठापूर्वक चलता रहे और लोग 'दादाजी' के पांव पड़ते रहें यही मानों अन्तिम एवं परम लक्ष्य था। जो कुछ ब्रह्मदेव**

प्रभु की बात प्रभु ही जाने

टेक-ऋषि मुनी कह गये स्याने प्रभु की बात प्रभु ही जाने।
हम चाहे माने चाहे न माने - प्रभुकी बात...

१. कारण तीन से जगत् बनाया, महतत्व पन्चभूत बनाया।
सत्-चित आनन्द रूप कहाया, अद्भुत यह संसार बनाया।
कर्म भोग आयु जीव न जाने, **प्रभु की बात......**

२ जल पर कैसे जमीं टिकाई- शशि शीतल रवि उष्ण भाई।
सुगन्ध जुदा हर फूल में पाई, मधुर वाणी जीभ काली बनाई।
निराले तेरे हैं कारनामे। **प्रभु की बात......**

३ नर तन कैसे अजब बनाये, अलग-अलग है चेहरे बनाये।
हाथों की रेखा मिल नहीं पाये, भिन्न प्राणी भिन्न रंग बनाये।
कैसे बनाये हैं ताने-बाने। **प्रभु की बात.....**

४ माँ के गर्भ में शिशु बनाया, नहीं हथौड़ा हाथ लगाया।
एक बून्द में जीवन समाया, जन्म-जन्म का कर्म छिपाया।
तू सबके कर्मों की बात जाने। **प्रभु की बात....**

५ जो आत्माएं जन्म ले आये, कर्म भोग कर वो लौट जाये।
लाख कोई तदबीर बनाये, उसकी महिमा जान न पाये।
'अमर' चले ना कोई बहाने। **प्रभु की बात प्रभु ही जाने।**

- अमरसिंह विद्यावाचस्पति, ब्यावर (राज.)

www.thearyasamaj.org

जी कह रहे हैं उसको पलटने की शक्ति तो किसी राजा में भी न थी फिर सामान्य मनुष्य की तो गाथा ही क्या? यदि कोई स्वतन्त्र रूप से सोचना चाहे तो, क्या तुम देवताओं से भी बड़े हो, क्या ऋषि-मुनियों से बड़े हो, क्या तुम्हारे पूर्वज इस सनातन धर्म को न मानते थे, क्या शास्त्र झूठे हैं, आदि-आदि वाक्य सुनने को मिलते जिसका उनके पास कोई उत्तर नहीं होता।

इस सारे वातावरण ने जो कि एक लम्बे समय तक चला, समाज की सोचने की एक ऐसी धारा बना दी जिसने एक कुंठित, दासत्व, अन्धविश्वासी और अन्धश्रद्धा वाली मानसिकता को जन्म दिया। यह एक परीक्षित सत्य है कि **एक झूठ को भी यदि व्यापक स्तर पर बार-बार बोला जाये तो वह सत्य ही प्रतीत होता है। धर्म के नाम पर परोसा जाने वाला अधर्म लोगों के मनों में इस गहराई तक उतरता चला गया कि उन्होंने तर्क को ताक पर रख दिया और बाबा वाक्य प्रमाणम् के अनुसार अपने पूर्वजों के कर्मों को अपनाकर लकीर के फकीर बने रहना ही सर्वोत्तम समझा।**

प्रिय पाठकगण! अब आपके मन में एक चित्र स्पष्ट होता जा रहा होगा कि आज देश में जो नाना प्रकार के मत पन्थ चल रहे हैं उनका मूल कारण क्या है। यह क्रम कहीं पर भी रुका हीं अपितु निरन्तर प्रवाहमान नदी की भांति आज भी चल रहा है और निरन्तर नये-नये मत सम्प्रदाय जन्म ले रहे हैं। सदियों से चले आ रहे इस मानसिक रोग ने समाज की वह शक्ति छीन ली है कि जिसके सहारे उसे आगे बढ़ना था। अपनी मानसिक विकलांगता के कारण लोग यह समझ ही नहीं पा रहे कि उनका हित किसमें है। आप को मेरे शब्द '**मानसिक विकलांग**' पर कुछ आपत्ति हो सकती है परन्तु जिस समाज में लोग अपनी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, व्यवसायिक समस्याओं का समाधान केवल इस बात में पाते हों कि "अच्छा यह बताओ समोसा खाया था?" "जी हां, खाया था।" "कब खाया था" "जी एक सप्ताह पहले खाया था।" "लाल चटनी के साथ खाया था या हरी के साथ?" "जी लाल के साथ खाया था।" "अच्छा जाओ अब हरी के साथ खाओ तुम्हारी सारी समस्याएं दूर हो जाएंगी।" अब ऐसे लोगों को (गुरु और चेले दोनों को) मानसिक विकलांग न कहें तो क्या कहें? जहां पर माता-पिता अपनी सन्तान को तांत्रिकों के कहने पर बलि तक देने को तैयार रहते हों, जहां पर प्रतिदिन नवयौवनाओं का बाबा लोग शारीरिक शोषण करते हों, जहां पर धर्म के नाम पर कुछ भी चल सकता हो, ऐसे समाज को मानसिक विकलांग न कहें तो क्या कहें? यह तो एक बहुत सामान्य सा उदाहरण हमने दिया है जो लोगों की विचारशून्यता दिखाता है अन्यथा समाज में ऐसी बातों की भरमार है कि जहां पर अशिक्षित मनुष्य तो क्या अपितु उच्च शिक्षा प्राप्त एवं उच्च अधिकार प्राप्त लोग भी बुद्धि को ताक पर रखकर अनेकों ऐसे कर्म करते हुए देखे जा सकते हैं जो उनकी अन्धश्रद्धा का परिचय देने के लिए पर्याप्त है।

स्मरण रखना चाहिए कि कोई भी घटना अचानक नहीं होती। अचानक तो दुर्घटनायें हुआ करती हैं। प्रत्येक घटना की भूमिका हमारे मस्तिष्क में विचार के रूप में जन्म ले चुकी होती है और जब हमें विश्वास हो जाता है तो फिर वह घटना क्रियारूप में आ जाती है। इस प्रकार से लोगों की तर्कशून्यता, विचारशून्यता, केवल आज के परिवेश का परिणाम नहीं है अपितु वर्षों से जो भूमिका तैयार हो चुकी है, वही उसका कारण है। उदाहरण के लिये मैं जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्णजी महाराज के जीवन पर व्याख्यान दे रहा था। पौराणिक जगत् में जो उनका प्रचलित रूप है उस पर बोलते हुए मैंने कहा कि श्रीकृष्ण जी महाराज एक अद्वितीय महापुरुष थे। अजेय, यौद्धा बहुत उच्च कोटि के विद्वान, योगी, धर्मात्मा, नीतिवान, कुशल राजनीतिज्ञ, दूरदर्शी, स्पष्टवादी, वेद भक्त, गोभक्त, ईश्वर भक्त आदि-आदि अनेक गुणों से युक्त ऐसे महापुरुष थे जिनकी जितनी प्रशन्सा की जाये, कम है। भागवतादि पुराण बनाने वालों ने उनको कहीं का न छोड़ा। मनमाने दोष लगाकर ईश्वर तो क्या साधारण मनुष्य भी न रहने दिया। जब व्याख्यान समाप्त हुआ तो एक व्यक्ति खड़ा हो गया और बोला कि मेरी कुछ शंकायें हैं। मैंने कहा कि बोलों क्या हैं?कहने लगा कि श्रीकृष्ण तो ईश्वर थे, उनकी सोलह हजार एक सौ आठ रानियां थी, वे सभी के साथ एक ही समय रह सकते थे, क्योंकि जो ईश्वर होता है वह कुछ भी कर सकता है उसे कोई दोष भी नहीं लगता आदि। आप समझ सकते हैं कि ये विचार कहां से उदय हुए। उस व्यक्ति का इसमें उतना दोष नहीं है जितना दोष इन लोगों से उनकी बुद्धि हरने वालों का है। छल से, चालाकी से अर्थों के अनर्थ करके जो कुछ समाज के भोले-भाले लोगों के सामने परोसा, युगों तक परोसा गया, लोगों ने उसका भरपूर स्वाद चखा और यह विष उनके गले से उतर कर उनके रक्त में सम्मिलित हो गया। अब यदि कोई उस विष की चिकित्सा करे तो शल्यक्रिया के समान कष्टदायक लगता है, यह है अनर्थों का बोझ। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इसी वेदना को अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कुछ इन शब्दों में व्यक्त किया है, "**इस देश को रोग हुआ है, जिसका ओषध तुम्हारे पास नहीं**" (अर्थात् मेरे पास है) सत्यार्थ प्रकाश ग्यारहवां सम्मुलास) वह रोग कौन सा है और उनका ओषध क्या है, इस पर फिर कभी स्वतन्त्र रूप से लिखने का यत्न करेंगे। **यहां तो हमारा अभिप्राय यह दिखाने का है कि धूर्त लोगों द्वारा चलाई गई अनुचित बातों ने समाज की मानसिकता ही बदल डाली। जन्मना जाति-पाति, छुआ-छूत, मूर्तिपूजा, भूत-प्रेत, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, चमत्कार, टोने-टोटके, मृतक श्राद्ध आदि-आदि के विकृत साहित्य द्वारा जो जन साधारण की वृत्ति बनी उसके प्रकाश में हम यह बलपूर्वक कह सकते हैं कि यह अर्थों के अनर्थ होने के कारण हुआ।** आश्चर्य इस बात पर होता है कि जब अन्य मत वाले लोग पुराणों आदि का प्रमाण देकर अनेकों बुराईयों का ठीकरा हिन्दुओं के सिर पर फोड़ते हैं तो उनके सिर में जूं तक नहीं रेंगती परन्तु जब आर्य समाज उनको सुधारने के लिये कहता है तो पौराणिक मण्डल तिलमिला उठता है।

जब तक लोगों की बुद्धि पर इन अनर्थों का बोझ रहेगा तब तक श्रेष्ठ समाज का निर्माण स्वप्न ही रहेगा। ●

www.thearyasamaj.org

सरदार पटेल का हास्य विनोद

जांगिड कुल गौरव
- देशराज आर्य - सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
सेक्टर-४, रेवाड़ी, हरियाणा
चलभाष - ०९४१६३३७६०९

गुजरात प्रांत की पवित्र भूमि ने जहां मानवता के उद्धारक भारतीय संस्कृति के संवाहक एवं रक्षक, स्वाधीनता का मन्त्र फूंकने वाले वेदों के प्रकाण्ड पंडित एवं महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्दजी को जन्म दिया वहीं स्वतन्त्र भारत को एक विशाल संघ के रूप में सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण करने हेतु सरदार वल्लभ भाई पटेल को भी जन्म दिया। आर्य समाज स्थापना वर्ष में सरदार वल्लभ भाई पटेल के १८७५ में जन्म के आठ वर्ष बाद १८८३ में महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ। महर्षि दयानन्द केवल गुजरात के न होकर समस्त मानव जाति के भाग्य विधाता बन गये थे। आठ वर्ष की आयु में सरदार पटेल ने महर्षि के दर्शन नहीं भी किये हो तो भी उनके जीवन पर महर्षि के दलितोंद्धार एवं राष्ट्रवादी विचारों का विशेष प्रभाव अवश्य पड़ा होगा। महर्षि दयानन्द जी द्वारा समस्त भारत में अन्ध विश्वास, ढोंग पाखण्ड एवं कुरीतियों के सर्व नाश हेतु चलाये गये विश्वव्यापी अभियान का प्रभाव उस समय के समाज सुधारकों पर न चाहने पर भी पड़ा था। सरदार पटेल तीस वर्ष की आयु में विधुर हो गये थे तथा शेष ४५ वर्ष तक एक संन्यासी के तुल्य जीवन जीया। इन दिनों अनेक शादियां करना आम रिवाज (चलन) था। परन्तु उन्होंने एक महात्मा की तरह पवित्र जीवन व्यतीत किया। पटेलजी दृढ़ निश्चयी, आत्म विश्वासी एवं कर्त्तव्य निष्ठ व्यक्ति थे। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अदम्य साहस के साथ डटे रहते थे तथा सफल हो जाते थे। उनमें ज्वालामुखी जैसी भस्म करने की ताकत थी। परन्तु उन्होंने विस्फोट कभी नहीं किया। वे उच्च कोटि के वकील थे। उनकी दलीलों से जज भी भयभीत रहते थे। पटेल के कठोर व्यक्तित्व में महर्षि दयानन्द सरस्वती की तरह मुक्त हास्य का एक विशेष गुण था। एक कठोर हृदय में जब-तब वातावरण के तनाव मुक्त करने हेतु वल्लभ भाई में हंसी मजाक करने का विशेष गुण था। उनके जीवन की कुछ रौचक हास्य व्यंग की घटनाएं हमारे लिए शिक्षाप्रद एवं मार्गदर्शक हो सकती हैं। वल्लभ भाई पटेल में हाजिर जवाबी एवं मजाक करने का एक अलग ही अन्दाज था। वे सहज भाव से उन्मुक्त ढंग से वार्तालाप के मध्य ही कोई ऐसी हंसी की बात कह देते थे जिससे सारा वातावरण तनाव मुक्त हो जाता था। एक दिन किसी गंभीर वार्तालाप के बीच में मौलाना आजाद ने कहा हां, इस समस्या का यह समाधान तसल्लीबक्स है। पटेल ने तुरन्त कहा, भाईयों अब तक तो हमने मौलाबक्स, अलाबक्स और खुदाबक्स ही सुना था - यह तसल्लीबक्स कहां से आ गया? गांधी जी के आश्रम में एक बार कुछ व्यक्ति उनसे मिलने के लिए आये। संयोग से पटेल जी भी आश्रम में थे तथा वे पटेल से मिले और गांधी जी के बारे में पूछा। पटेल ने उनसे पूछा वे गांधीजी से क्यों मिलना चाहते हैं? उन्होंने कहा कि वे गांधी जी से ब्रह्मचर्य के विषय में कुछ बातें करना चाहते हैं। पटेल ने तुरन्त कहा- वाह! ब्रह्मचर्य के बारे में गांधीजी से क्या बात करोगे? उनके चार बेटे हैं। सभी शादीशुदा हैं। उनकी पत्नी जीवित हैं और उनके साथ रहती हैं, वो ब्रह्मचर्य को क्या जानें? ब्रह्मचर्य की बात मेरे से करो, मेरे केवल दो बच्चे हैं, बहुत वर्ष पहले मेरी पत्नी मर चुकी है, मैने दूसरा विवाह नहीं किया। अतः ब्रह्मचारी तो मैं हूं। उनके ऐसे हास्य विनोद से कौन हंसे बिना रह सका होगा।

एक बार एक व्यक्ति ने गांधीजी की आलोचना करते हुए एक खुला पत्र लिख भेजा और अंत में लिखा **''आपके जमाने में जीवित रहने की बदकिस्मती प्राप्त करने वाला।''** बापू ने पटेल से पूछा कि बताओ इस पत्र लिखने वाले को क्या जवाब दिया जाए? वल्लभभाई ने तुरन्त उत्तर दिया कि उसे लिखो की वह जहर खा ले। बापू ने कहा नहीं - वो मुझे जहर दे दे। पटेल ने कहा इस से उसके दिन तो बदलने से रहे बल्कि तुम्हें जहर देने से उसे फांसी की सजा मिलेगी। तुम दोनों मरोगे, फिर दोनों साथ जन्म लोगे तो फिर वही झगड़ा होगा। अच्छा यही रहे कि वह स्वयं जहर खा ले। आश्रम में रहते समय गांधीजी हर प्रकार की छोटी-मोटी हारी-बीमारी में हर चीज में सोड़ा डालने की बात कहते। मीठा सोड़ा डालकर पीने को कहते। आश्रम में जब कभी कोई विकट समस्या आती और बापू पटेल से उसका समाधान पूछते तो वे झट उत्तर देते कि सोड़ा डालो ना।

एक बार किसी आलोचना में शब्द आये - गांधीजी की रचनात्मक गफलत। महादेव भाई ने बापू से पूछा कि यह रचनात्मक गफलत क्या होती है। पटेल ने तुरन्त जवाब दिया। कि आज जैसे दाल लग (जल) गई थी वैसी होती है। सभी हंसने लगे। एक बार एक व्यक्ति ने बापू को पत्र लिखकर पूछा कि हम तीन मन वजन के शरीर से चलते हैं तो कितनी ही चींटियां मारी जाती है, क्या करें? पटेल ने बापू से कहा कि उसे लिखो की पैर सिर पर रखकर चला करे। एक व्यक्ति ने पूछा कि उसकी पत्नी कुरुप है वह क्या करे? पटेल ने तुरन्त बापू से कहा कि उसे लिखो वह अपनी आंखें फोड़ ले। फिर उसे वह कुरुप नहीं लगेगी। बापू का स्वभाव बचत करने का था। जेल में रहते हुए भी बाजार से मंगाने वाली चीजों पर भी कांट-छांट करते रहते थे। एक दिन पटेल ने कहा इक आप बचत करते रहेंगे और जेल वाले खाते रहेंगे। ये सब हिसाब किताब पूरा कर देंगे। कहावत है - **मियां जोड़े मुठ मुठ, अल्लाह लूटे उठ उठ।** सत्याग्रह के समय महादेव ने बापू से पूछा कताई की तार कैसी होती है? यह अनेक बार टूट जाती है। बापू ने कहा ध्यान रखा जावे तो नहीं टूटती। मेरी तो लंगोटी भी वर्षों तक चलती है। दूसरे के पास होती तो कभी की फट गई होती। पटेलजी सुन रहे थे तुरन्त बोले- ऐसा लगता है लंगोटी को पहनने के बजाय किसी खूंटी पर टांग दिया हो। सभी हंसने लगे। बापू सुबह-शाम नींबू पानी पीते थे। गर्मी के समय नींबू महंगे हो जाते थे। बापू ने पटेल से पूछा कि नींबू के स्थान पर इमली का प्रयोग कर लिया जाए तो कैसा रहे? जेल में इमली के वृक्ष भी काफी है। पटेल ने कहा इमली के पानी से हड्डियां गल जाती हैं। बाय हो जाती है। बापू ने कहा परन्तु जमनालालजी तो पीते हैं। उन्हें कुछ भी नहीं हुआ। पटेल ने कहा जमनालालजी मजबूत हैं। उनकी हड्डियों तक इमली को पहुंचने की राह ही नहीं मिलती। आपके शरीर में तो हड्डियां ही दिखाई देती हैं। इमली इन तक तुरन्त पहुंचकर इन्हें गला देंगी। इस प्रकार वल्लभ भाई पटेल के पास अनेक कहावतों का भण्डार था। वे उनका आपसी बातचीत में दिल खोलकर प्रयोग किया करते थे। ●

www.thearyasamaj.org

वासन्ती होली-नवशस्येष्टि

कृपया होली सादगी के साथ ही नहीं प्राचीन संस्कृति अनुसार मनावें!

विश्वकर्मा कुल गौरव
- आचार्य रामज्ञानी आर्य -
लार चौक, जनपद-देवरिया (उ.प्र.)
चलभाष: ९९५६३२६७५६

भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। इस हमारे देश की यही विशेषता रही है कि यहां छ: ऋतुएं होती हैं। संसार के किसी भी देश में छ: ऋतुएं नहीं होती। सर्दी, गर्मी और वर्षा तीन ही ऋतुएं संसार में पाई जाती हैं। फिर भी सर्दी गर्मी की सन्धि में वसन्तोत्सव प्राय: सभी देशों में किसी न किसी प्रकार मनाया जाता है। यह खुशी का त्यौहार होता है। हमारे देश में अभी वसन्त पन्चमी का त्यौहार मना कर ऋतुराज का स्वागत किया था। प्रकृति की छटा में काफी परिवर्तन आ गया है। वसन्त अपने पूर्ण यौवन पर है। प्रकृति ने धरती पर नव पल्लवों नव विकसित कुसुमों की बहार बिखेर दी है। चारों और प्रफुल्लता का वातावरण नृत्य कर रहा है। वन उपवन नगर ग्रामों में नव जीवन संचार हो रहा है। वृक्षों ने पुराने पल्लव झाड़ना प्रारंभ कर दिये। नव कोमल कलिकायें प्रकट होने लगी। पक्षियों ने भी पुराने पर त्याग नवीन पर ग्रहण किये। पशुओं ने पुरानी रोमावली त्यागकर नवीन रोमावली का चित्र विचित्र परिधान ग्रहण करना प्रारंभ कर दिया है। मानव जीवन में भी एक नया उल्लास उत्साह बिखेरने लगा है। एक शब्द में यदि कहे कि सारी प्रकृति ने ही अथवा पुराना चोला त्यागकर नवीन चोला ग्रहण कर लिया है और समस्त वातावरण में नव-जीवन संचार हुआ है। फाल्गुन पूर्णिमा के अवसर पर प्राचीन आर्यों का एक मुख्य पर्व वासन्ती-होली- नवशस्येष्टि के रूप में अनादि वैदिक काल से मनाया जाता रहा है। इसे वासन्ती होली, होलक, होला, होलिका भी कहते हैं। यह पर्व भी शारदीय नवशस्येष्टि (दीपावली) की भांति अति प्राचीन वैदिक कालीन वसन्त ऋतु में मुख्य गेहूं, जौ चना आदि उपज को यज्ञ में अर्पित करके ग्रहण करने का एक विशेष पर्व है। संस्कृत भाषा का होलक जिसे आज कल होला कहते हैं। अर्थ अधपका भुना हुआ अन्न है। **तृणाग्निभृष्टाद्धि पस्चक्षयाधान्ये होलक होला इतिभाषा (शक कल्पद्रम कोष)** इसी प्रकार भाव प्रकाश में लिखा है कि **अधिपक्व शसीन्यैस्तृणा भृष्टैश्च होलक:** अर्थात् तिनको की अग्नि से भुने हुए अधपके शमीधान्य फल वाले अन्न की बाली को होलक कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि होलका से होलीकोत्सव अथवा होला से होली नाम नव-शस्येष्टि का ही बिगड़ा रूप है। इसलिए होलिका के नाम से कण्डा, लकड़ी, तृण, घांस आदि जला-जलाकर उसमें जबकि नवीन बाली अधभुनी कर होला बनाते और उसी का प्रसाद ग्रहण करते हैं। नवशस्येष्टि यज्ञ ग्रामों में बड़े विशाल रूप से सामूहिक रूप से होता था। और उसमें नवान्न का होला बनाकर सर्व प्रथम उसका आमोद-प्रमोद खुशी का उत्सव मनाते और वसन्ती रंग द्वारा एक दूसरे को रंगकर शिष्टता सभ्यतापूर्वक सभी मतभेद भुलाकर एक दूसरे को गले मिलते थे और संगीत द्वारा इसे प्रदर्शित करते थे। किन्तु पुराणकारों ने इस राष्ट्रीय नवशस्येष्टि होलिका पर्व के नाम पर एक कथा हिरण्यकशिपु की कथित बहिन 'होलिका' की गोद में प्रहलाद को बिठाकर अग्निदाह करा दिया। जिससे होलिका जल गई और प्रहलाद बच गये। उसी आग को देखकर भक्तों ने धूल फैंक कर बुझा दिया और भक्त प्रहलाद भगवान का कीर्तन करते हुए बाहर निकले। यह कथा पदम् पुराण में पाई जाती है। इन पौराणिक भक्तों को पूछे की उक्त नास्तिक राक्षस हिरण्यकशिपु की बहिन जो जल गई और प्रहलाद भक्त को जलाना चाहती है, तो उस होलिका माता की जय कहकर आप नास्तिक राक्षक राज हिरण्यकशिपु के ही अनुयायी और उस दल के ही सिद्ध तो नहीं होते हो । दूसरी ओर राक्षसी होलिका के जल जाने पर राक्षसों ने भक्त प्रहलाद और उसके आस्तिक देवताओं को गालियां दी थी और वहीं गालियां अथवा फूहड़ भाषा में कविताएँ बोलना यह राक्षसों के कृत्य नहीं तो क्या है? आज यज्ञ वेदी पर कूड़ा कर्कट, गन्दगी तथा चोरी से लाया गया काष्ठ लकड़ी महिनों पहिलें इकट्ठा करके उसमें आग लगाना और माह भर जो पैदा हुए कीटाणुओं को जलाकर दुर्गन्ध पैदा कर देना, उसी में जौ की बाले भूनना कहां की बुद्धिमत्ता है? दूसरे दिन धुलहरी के नाम पर धूल, मिट्टी, कीचड़, कोलतार अथवा सड़े नाबदान का मल-मूत्र लेकर विभत्स रंगों द्वारा मुखौटा रंगना कपड़ों को बरबाद करना इस कृत्य का होलिका पर्व से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस अवसर पर भांग, शराब, गांजा अथवा अन्य नशे में धूत हो, माँ-बहिन, भावज आदि-आदि का कभी-कभी गाली, अश्लील बकना इसे खुशी वा होली का प्रदर्शन नहीं कहा जा सकता है। यह सब पुराणों की देन है। भविष्येतर पुराण में इस उक्त प्रकार निर्लज्जता से होली मनाने का वर्णन विस्तार से पाया जाता है। वहां लिखा है कि **गालिदान तथा हास्य ललनवानर्तमुटम।** अर्थात् गाली देना हंसना, बकवास लड़कियों का नाच मनमाने वेष बनाकर वेश्याओं का नाच अपनी इच्छानुसार नि:शंक होकर करना इस प्रकार इस पर्व का वर्तमान कुत्सित रूप अत्यन्त बिगड़ा रूप जो आज समस्त देश में प्रचलित है। यह पुराण अथवा पौराणिक अन्ध विश्वास की देन है। जिसके परिणाम स्वरूप अनेक स्थानों पर प्रति वर्ष झगड़े हो जाते हैं। चलती हुई रेल, मोटरों में ईंट पत्थर मिट्टी फेंकना यह सब कुछ होलिका पर्व का अंग नहीं हो सकता। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि किसी सामाजिक बुराई पर यदि धर्म और नैतिककता की मुहर लगा दी जाये उस अवस्था में उसे दूर करना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में वैदिक आर्यों द्वारा होली आर्य पर्व पद्धति के अनुसार करके शिष्टता, सभ्यतापूर्वक बसन्ती रंग का प्रयोग कुछ अनुचित नहीं कहा जा सकता तथा मनोरंजन के लिए धर्मपूर्वक बड़े-बड़े सम्मेलन करने शिष्टतापूर्वक प्रसन्नता भी व्यक्त की जा सकती है। आइये। हम लोग होली शिष्टतापूर्वक और सभ्यतापूर्वक एक दूसरे गले मिलते हुए पुराने पतझड़ के सदृश वैर वैमनस्य भाव मिटाकर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना जागृत करें। आज के दूषित वातावरण में हमें गंभीरतापूर्वक इन सब पर विचार करना चाहिए और आपको इस अवैदिक दूषित पद्धति में परिवर्तन करना चाहिए। ●

www.thearyasamaj.org

'होली के स्वरूप को जानकर विवेकपूर्वक मनाना समीचीन'

- मनमोहन कुमार आर्य -
१९६ चुक्खूवाला-२ देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष - ०९४१६३३७६०९

भारत वर्ष में फाल्गुन मास की पूर्णिमा को होली का पर्व मनाने की परम्परा काफी पुरानी है। वर्तमान होली का स्वरूप इस दिन रात्रि में सामूहिक रूप से लड़कियों को इकट्ठा करके रात्रि में पण्डितजी के द्वारा मन्त्रोच्चारपूर्वक उसका दहन कर किया जाता है। इसे देखकर आर्य वैदिक ज्ञान में प्रवृत्ति होने के कारण हमें यज्ञ की स्मृति होती है। प्राचीन काल से ही हमारे यहां अमावस्या व पौर्ण मास पर विशेष यज्ञों को करने का विधान है, जिसे पक्षेष्टि यज्ञ कहा जाता है। हम जानते हैं कि महाभारत काल के बाद एक समय ऐसा आया कि जब हमारे ऋषि-मुनियों की परम्परा समाप्त हो गई। ज्ञानी लोगों के समाप्त होने पर अल्प- ज्ञानी पण्डितों ने अपनी अल्पमति व स्वार्थ बुद्धि से प्रेरित होकर धर्म व कर्म को इच्छानुसार तोड़ा व मरोड़ा। इस होली से भिन्न हमारे यहां पशु यज्ञों - अश्वमेघ, पुरुषमेद्य, गौमेध, अजमेध व अविमेध में इन नामों से जुड़े पशुओं को मारकर उनके मांस आदि से आहुतियां देने तक का विधान कर डाला गया। इससे विदित होता है कि होली के वास्तविक रूप में भी कुछ परिवर्तन तो अवश्य ही हुआ है। पौर्ण मास के दिन रात्रि में पूर्ण चन्द्रमा आकाश में दृष्टिगोचर होता है। जिस प्रकार दिन में सारी पृथ्वी सूर्य के प्रकाश से जगमगा उठती है, उसी प्रकार पूर्ण मास के दिन रात्रि में भी पृथ्वी अन्य दिनों में सबसे अधिक प्रकाशमान होती है। समुद्रों में तो इस दिन ज्वार-भाटा भी आता है। चन्द्रमा का सम्बन्ध हमारी औषधियों एवं फलों से है व साथ ही हमारे मन से भी है। मनुष्य का मन ही बन्धन व मोक्ष का कारण होता है। यह हम भली-भांति जानते हैं। बन्धन से मुक्त होने के लिए हमें ईश्वरोपासना व यज्ञ आदि कर्म करने होते हैं और इन्हीं से मोक्ष भी प्राप्त होता है। अत: हमारे यहां यज्ञों व अग्निहोत्रों की परम्परा सृष्टि के आरम्भ से ही रही है। सृष्टि में भी नाना प्रकार के यज्ञ चल रहे हैं। सूर्य की गर्मी से समुद्र व नदी आदि का जल वाष्प बनकर आकाश या वायुमण्डल में ऊपर उठता है। वायु मण्डल के जल से बादल बनते हैं। वह आपस में टकराते हैं तो आकाश में विद्युत चमकती है। वर्षा होती है। वर्षा का जल हमारे खेतों में अन्न की उत्पत्ति में सहायक होता है और यही जल हमारे कुओं, नदियों आदि में भी पहुंचता है। इसको पीकर हमारा शरीर व प्राण स्वस्थ रहते हैं। यह जल और वायु ही हमारे जीवन का आधार है। इस प्रकार से यह जल, वायु व आदित्य मिलकर एक सृष्टि यज्ञ करते हैं। इससे मिलता जुलता ही हमारा अग्निहोत्र यज्ञ भी होता है। जिससे सृष्टि व पर्यावरण को लाभ होने के साथ यज्ञकर्ता को भी आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आदिवैदिक लाभ प्राप्त होते हैं।

होली के दिन रात्रि में होली जलाने की परम्परा है। इसके पीछे कारण यह लगता है कि रात्रि में चन्द्रमा अपनी पूर्ण आभा के साथ आकाश में दर्शन दे रहा होता है। हमारे यहां एक पौराणिक पर्व करवा चौथ मनाया जाता है। इस दिन भी रात्रि को चन्द्रमा के दर्शन कर स्त्रियां व्रत-उपवास तोड़ती हैं, यद्यपि यह पर्व पूर्णिमा को न मानकर इसे शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। हमारे मुस्लिम भाई भी ईद का पर्व चन्द्र दिखने के अगले दिन ही मनाते हैं। इससे यह अनुमान होता है कि पौराणिक काल में चन्द्रमा के दर्शन को भी पुण्यकारी माना जाता था और सम्भवत: इसी कारण होली की रात्रि में जलाने की परम्परा पड़ी। यह परम्परा पूर्णतया पौराणिक है। यहां यह कहना उचित प्रतीत होता है कि चन्द्रमा का गुण सूर्य के प्रकाश को ग्रहण कर उसे रात्रि में पृथ्वी पर पहुंचाना है, जिससे मानव जीवन अनेक प्रकार से लाभान्वित होता है। हमारे यहां नाम के साथ 'चन्द्र' शब्द लगाने की परम्परा भी रही है। इससे लगता है कि हमें चन्द्रमा के गुणों को जानकर उसे अपने जीवन में स्थान देना चाहिए। पूर्ण मास यज्ञ करने का भी सम्भवत: यही प्रयोजन लगता है। यज्ञ व अग्निहोत्र का समय प्रात: सूर्योदय व उसके बाद तथा सायंकाल सूर्यास्त से पूर्व है। परमात्मा ने रात्रि का समय सोने के लिए बनाया है और प्रात: ब्रह्म-मुहूर्त में उठने का विधान हमारे प्राचीन ऋषियों ने किया है। दिन में सोने का निषेध है। अत: रात्रि में समय पर सोएंगे तभी प्रात: ४ बजे उठ सकते हैं। रात्रि में सूर्यास्त के बाद व चन्द्रोदय होने पर होली को जलाना अशास्त्रीय होने से अनुचित है। होली को अधिक से अधिक सूर्यास्त से पूर्व जला लेना चाहिए। हमारी दृष्टि में होली को शास्त्रीय दृष्टि से दिन में लगभग १० व ग्यारह व अधिक से अधिक १२ बजे से पूर्व यज्ञ व अग्निहोत्र की रीति से करना या जलाना ही उचित है। बृहद् यज्ञ होने चाहिए जिसमें यज्ञ सामग्री व घृत का प्रयोग उचित मात्रा में होना चाहिए। एक मुहल्ले में एक होली जले, मुहल्ले के सभी लोग उस होली यज्ञ में सम्मिलित हों, वैदिक विद्वान यज्ञ करायें, वैदिक धर्म व संस्कृति की संसार के सभी मतों से महत्ता विद्वान वक्ता सबको समझायें, इससे होली का पर्व मनाने की सार्थकता प्रतीत होती है। इसी कर्म में यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि होली पर्व का प्राचीन नाम "**वासन्ती नवशस्येष्टि**" है। हमारा शरीर जो हमारी आत्मा को परमात्मा से मिलाने का साधन है, अन्नमय है। इसका पोषण अन्न से होता है। गेहूं अन्न का मुख्य प्रतीक है। हमारे किसान भाईयों ने गेहूं की फसल कुछ महीने पहले बोई थी जो आज उनके खेतों में लहलहा रही है। सारे किसान तो खुश हैं ही, देश का प्रत्येक व्यक्ति भी प्रसन्न व सन्तुष्ट है कि हमें परमात्मा की ओर से एक वर्ष के लिए हमारे शरीर का आधार अन्न प्रदान किया जा रहा है। यह अन्न कुछ ही दिनों में खेत-खलिहानों में तथा वहां से होकर हमारे घरों व बाजार में आ जायेगा। इस अन्न से हमें ऊर्जा, शक्ति, शान्ति, आरोग्य, आयुवृद्धि और न जाने क्या-क्या लाभ होंगे। अत: सब देशवासियों को

www.thearyasamaj.org

जगत्-नियन्ता का धन्यवाद करने का अवसर भी उपस्थित है। हमारे ऋषि-मुनि पारदर्शी विद्वान थे। वह जानते थे कि परमात्मा का धन्यवाद करने का यथार्थ तरीका क्या है? उन्होंने इसके लिए विधियां बनाई जिसे सामान्यतः यज्ञ-अग्निहोत्र कहते हैं। हमारे यहां मुख्यतः ३ प्रकार के यज्ञ होते हैं। पहला अग्निहोत्र यज्ञ नित्यकर्मों में परिगणित है। दूसरे काम्य यज्ञ होते हैं। जो विशेष कामना को रखकर किये जाते हैं, यथा पुत्रेष्टि यज्ञ। तीसरे यज्ञ नैमित्तिक यज्ञ होते हैं। ऐसे यज्ञ जो विशेष कारण से किए जाते हैं। होली या नवशस्येष्टि यज्ञ, नैमित्तिक यज्ञ है जिसे करके ईश्वर का धन्यवाद भली प्रकार से होता है और साथ ही इससे दृष्ट व अदृष्ट लाभ इसको करने वाले व सहयोग देने वालों को प्राप्त होते हैं। इस यज्ञ के बारे में पूर्व लिखा ही गया है, इतना कहना उचित होगा कि आजकल की होली प्राचीन काल में किए जाने वाले इस प्रकार के बृहद् यज्ञों का किंचित विकृत रूप है। हमारे पूर्वजों ने यज्ञ के वास्तविक अभिप्राय को भूल जाने पर भी इसको होली के रूप में सुरक्षित रखा है, इसके लिए वह सब धन्यवाद के पात्र हैं। हमें केवल आज इस पर्व की गहराई में जाकर इसे प्राचीन पद्धति से ही इसे सम्पादित करना चाहिए।

नवशस्येष्टि पर पुनः विचार करते हैं। गेहूं की फसल किसानों के खेतों में लहलहा रही है। फसल का खेतों में लहलहाना किसान के मन में उमंग, उत्साह व जोश भरता है। इससे वह अति प्रसन्नता व उल्लास से भर जाता है। एक वर्ष के खाद्यान्न की उपलब्धि ईश्वर उसे व उसके द्वारा समस्त देशवासियों को करा रहे हैं। इसी कारण से महर्षि दयानन्द ने किसानों को राजाओं का भी राजा कहा है। हमारे राजनीतिज्ञों को यह बात समझनी है। यदि देश में अन्न ही नहीं होगा तो राजा कहां के होंगे? पूर्व मास के दिन आज होली पर हम तेरा तुझ को अर्पण की भावना बनाकर नव अन्न गेहूं के दानों को होली-यज्ञाग्नि में आहूति देकर उसके प्रतीक से स्वयं के जीवन को ईश्वरोपासना में समर्पित कर अग्निमय व अग्नि समान, किंचित उष्ण, चमकदार, प्रकाशमान व ज्ञान से पूर्ण होने का प्रयास करें व सन्ध्योपासन, स्वाध्याय, वेद विषयों का चिन्तन-मनन कर अपने विचारों को निश्चित व स्थिर करें। उनके आचरण करने का संकल्प लें। ईश्वर की उपासना एक मात्र उसके ध्यान द्वारा ही सम्भव है। अन्य किसी प्रकार की पूजा ईश्वर से हमें दूर करती है, ध्यान से हम ईश्वर से निकटस्थ होते हैं। यज्ञ इसलिए करते हैं कि यज्ञ से भी ईश्वर की निकटता प्राप्त होकर, यज्ञ के आध्यात्मिक, अधिभौतिक व आधिवैदिक लाभ प्राप्त होते हैं, हमें भी वह प्राप्त हो सकें।

होली का पर्व वसन्त ऋतु के आगमन पर मनाया जाता है। चैत्र व बैसाख वसन्त ऋतु है। इस अवसर पर पतझड़ की पूर्ण समाप्ति, वनस्पति जगत् ने एक प्रकार से पुराने वस्त्र उतार कर नये वस्त्रों को धारण किया हुआ है, ऐसा अनुभव होता है। वृक्षों पर नये पत्ते, फूलों के पौधें, फूलों से सज-धजकर सुगन्ध प्रसारित करते हुए परमात्मा की स्तुति व उपासना करते हुए लग रहे हैं। परमात्मा की स्तुति व योग उपासना के लिए जैसे साधक यम, नियम व प्राणायाम आदि से तैयारी करता है, उसी प्रकार वृक्ष पौधे भी अपने पतझड़ वाले पूर्व स्वरूप को बदलकर सृष्टिकर्ता ईश्वर का अपने नये स्वरूप जो सुन्दर, आकर्षक, सुगन्धयुक्त, अभद्रता से मुक्त है, सजे-धजे हैं। ईश्वर ने इनमें सुगन्धि व पुष्टिवर्धन किया है। यह सब ईश्वर ने हमें भी उदाहरण देने के लिए किया है जिससे कि हम भी फूलों से शिक्षा लेकर उनके अनुसार स्वयं को संवारे, ईश्वर की स्तुति प्रार्थना व उपासना से। पुष्पों की भांति सुन्दर व सुगन्धित जीवन बनाकर धन्य हो। तभी ईश्वर के धन्यवाद स्वरूप की जाने वाली हमारी स्तुति-प्रार्थना-उपासना सफल होगी।

सृष्टि में एक नियम कार्य कर रहा है। हर प्राणी यथावश्यकता भोगों का भोग करता है। हम शरीर में अपनी श्वांस में प्राण वायु एक सीमित व निश्चित मात्रा में लेते हैं। जल निश्चित मात्रा से अधिक नहीं लेते। भोजन व स्वादिष्ट व्यंजन व मिष्ठान की भी सीमा होती है। आवश्यकता से अधिक लेने पर हानि की सम्भावना रहती है। अतः हमें सांसारिक पदार्थों का आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करना है। कहीं ऐसा न हो कि अधिक अन्न, धन, साधनों के संचय से दुःखद परिणाम हमें प्राप्त हों। भगवान मनु ने चेतवनी दी है कि अर्थ व काम में आसक्त मनुष्य को धर्म अर्थात् सत्याचार, ईश्वरोपासना आदि का ज्ञान नहीं होता और न ही ईश्वर का साक्षात्कार होता है। जो मनुष्य धन व अर्थ की एषणा से भरा है वह धर्म-कर्म, वेदानुसार सफलतापूर्वक नहीं कर सकता। आज के युग की यह बड़ी समस्या है। लोग अन्धाधुन्ध, अविवेकी बनकर, अर्थ संचय में लगे हुए हैं। ऐसे लोग आस्तिक न होकर नास्तिक लगते हैं। उनका वर्तमान व परजन्म बिगड़ रहा है। होली के दिन विवेक से निश्चय कर इसे सन्तुलित, उपादेय बनाये व धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति के अनुरूप जीवन को बनाये जैसा कि सत्शास्त्रों में उल्लेख है।

होली का संदेश है कि हमें अपने जीवन को शुद्ध, पवित्र, आकर्षक, अनेक रंगों व गुणों से विभूषित, सुगन्धित, यशस्वी व कीर्तिमान, आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण, परोपकारमय, भूखों को अन्न प्रदान कर सफल करना है। ईश्वर किसान को आवश्यकता से अधिक अन्न इसलिए देता है कि वह स्वयं भी उससे तृप्त हो व जो अधिक मिला है वह दूसरों के लिए है। यदि उसका उपयोग नहीं करेगा तो यह अन्न समय के साथ उपयोगी न रहकर उपयोगी ही न रह पायेगा, सड़ने लगेगा व इसमें कीड़े लग सकते हैं, और यह भक्षण योग्य नहीं रहेगा। हम जो कार्य करते हैं और उससे जो सफलता मिलती है, उसमें यह सन्देश छुपा होता है कि उस सफलता में अर्जित हुआ धन-पदार्थ-साधन अपनी आवश्यकतानुसार रखकर शेष को देशवासी व समाज को प्रदान कर दें, दान कर दें। वेद-विद्या को संरक्षण, संवर्धन, प्रचार-प्रसार में किया गया व्यय-दान सर्वोत्तम व विशिष्ट होता है। हमें भी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कार्यों में धन-व्यय करना चाहिए। गुरुकुल वेद-विद्या के शिक्षण से जुड़े हैं। वहां सन्ध्योपासना व यज्ञ भी होते हैं तथा उनसे ईश्वरप्रोक्त धर्म व संस्कृति की रक्षा होती है। हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि आज के हमारे सभी स्कूल, गुरुकुलों का रूप ले लें। हमारे देश के सभी स्कूलों में कक्षाओं में पढ़ाई का आरम्भ सन्ध्या व यज्ञ से हो व छुट्टी भी सन्ध्या करके हो। स्कूलों में हम हिन्दी अंग्रेजी के साथ,संस्कृत भी अनिवार्य रूप से पढ़ें। स्कूलों में विज्ञान, गणित, सामान्य विषयों के साथ आध्यात्मिक शिक्षा का भी

www.thearyasamaj.org

यथोचित प्रबन्ध होना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों व सम्पूर्ण वेदभाष्य व वैदिक वांग्मय का सार कक्षा १ से स्नातकोत्तर कक्षाओं तक अध्ययन कराया जाना चाहिए।ऐसे न होने से बच्चों को अच्छे संस्कारों के न मिलने से उनके जीवन में दुष्प्रवृत्तियां स्थान ले रही हैं। यह शिक्षा चरित्र निर्माण में भी सहायक होगी। यदि एमडीएच की फैक्ट्रियों में सभी कर्मचारी प्रातः या पूर्वाह्न में सन्ध्या व यज्ञ कर सकते हैं। (हमनें अनेकों से यह सुना व जाना है) तो विद्यालयों में तो यह कार्य बहुत आसानी से नित्य प्रति हो सकता है। विद्यालयों में यह यज्ञ सभी बच्चों की उपस्थिति में हो तथा सबकी सहभागिता यज्ञ कार्यों में हो। ३० से ४५ मिनट तक का यह कालांश या पीरियड हो सकता है। डीएवी विद्यालयों में शायद् पहले ऐसा होता था और अब भी होता है, ऐसा अनुमान है। विद्यालयों में यह उपयोगी होगा, इससे चरित्र-निर्माण व संस्कार आधारित शिक्षा देने का उद्देश्य पूरा होगा। यदि हममें कुछ भी अच्छे संस्कार हैं तो वह सन्ध्या, यज्ञ व स्वाध्याय से ही आये हैं।

होली के अगले दिन चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को रंगों को शालीनता से लगाना चाहिए। दुर्व्यस्नों, मदिरापान व अभक्ष्य पदार्थों से दूर रहकर, परस्पर मिलकर, मतभेदों को दूर कर, प्रेम व स्नेह के साथ मिलकर पर्व को मनाने के साथ पूरे वर्षभर सबके साथ प्रेम व स्नेह का व्यवहार करने का प्रयास करते रहना समूचित लगता है। होली के अवसर पर सबकों हमारी शुभकामनाएं। ●

दानवीर गुलाटी जी द्वारा विभिन्न संस्थाओं को दान

पारिवारिक पेन्शन प्राप्तकर्ता हिन्दू महासभा बुलन्दशहर और सावरकर वाद् प्रचार सभा के संस्थापक ७३ वर्षीय इन्द्रदेव गुलाटी ने नवम्बर २०१६ में निम्न संस्थाओं को २६००५ रु. की सहायता दी है:-

१ डी.ए.वी. इन्टर कॉलेज शिवपुरी, बुलन्दशहर की स्थापना की १००वीं वर्षगांठ पर दान- १००१ रु.

२ केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के ३८वें वार्षिकोत्सव पर दान- १००१ रु.

३ आर्य समाज गांधीधाम, कच्छ के ६३वें वार्षिक अधिवेशन पर दान-१००० रु.

४ गुरुकुल दयानन्द कल्याण आश्रम रायपुर (ओड़िसा) को वार्षिक दान- १००० रु.

५ अखिल भारत हिन्दू महासभा नई दिल्ली को दान-५०१ रु.

६ विश्व हिन्दू परिषद् नई दिल्ली को दान-५०१ रु.

७ महिला गायत्री परिवार बुलन्दशहर की स्थापना की ५०वीं वर्षगांठ पर दान-५०१ रु.

८ नगर आर्य समाज लक्ष्मीनगर बुलन्दशहर को दान - ५०० रु.

९ गांधी बाल निकेतन कन्या इन्टर कॉलेज बुलन्दशहर की नवीं तथा दसवीं कक्षा की १०० गरीब छात्राओं को स्वैटर वितरण किए -२०००० रु.

वैदिक संसार परिवार ने गुलाटी जी के शतायु-स्वस्थ जीवन की कामना करता है। गुलाटी जी राष्ट्रभक्त, ऐतिहासिक, क्रान्तिकारी ओजपूर्ण रचनाओं के रचनाकार है। आपके द्वारा विभिन्न संस्थाओं को दिए गए सहयोग की वैदिक संसार सराहना करता है तथा साधुवाद देता है। यह भी निवेदन करता है कि अपनी दान सूची में वैदिक संसार को भी शामिल करें। धन्यवाद

-सम्पादक

मिलकर होली पर्व मनाओ

सकल विश्व के सब नर-नारी, मिलकर होली पर्व मनाओ।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओं, छुआ-छूत का रोग मिटाओ।।

नव शस्येष्टि यज्ञ होलिका, जिसे लोग होली कहते हैं।
महापर्व है फिर इस दिन क्यों, मदिरा के दरिया बहते हैं।।

जुआ खेलते महा मूढ़जन, अज्ञानी वे दुख सहते हैं।
चोरी जारी नीच कर्म कर, जीवनभर व्याकुल रहते हैं।।

नव शस्येष्टि महायज्ञ का, नादानों को महत्व बताओ।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओ, छूआ-छूत का रोग मिटाओ।।

फाल्गुण मास पूर्णमासी को, पर्व मनाया यह जाता है।
पिछला वर्ष बीत जाता है, अगला वर्ष निकट आता है।।

पक जाती है फसल रबी की, हर नर-नारी हर्षाता है।
आर्यों का इस महापर्व से, आदिकाल से ही नाता है।।

यज्ञ हवन, पुन्यदान करो सब, स्वर्ग पुनः धरती पर लाओ।।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओ, छुआ-छूत का रोग मिटाओ।।

अच्छी तरह समझ लो प्यारो, पर्व निराला है यह होली।
अब तक जो होली सो होली, सबसे बोलो मीठी बोली।।

मिलो परस्पर गले साथियों, बना-बनाकर अपनी टोली।
मानव हो मानवता धारो, बात मान लो तुम अनमोली।।

परमार्थ के काम करो तुम, सर्व जगत् को सुखी बनाओ।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओं, छुआ-छूत का रोग मिटाओ।।

प्रातः उठकर होली के दिन जगदीश्वर से ध्यान लगाओ।
मात-पिता के चरणों को छू, संध्या करके हवन रचाओ।।

घी सामग्री की आहूतियां, अग्नि देव को भेंट चढ़ाओ।
पर्यावरण सुधारों जग का, प्रदूषण को दूर भगाओ।।

पावन वैदिक धर्म निभाओ, सारे जग में आदर पाओ।
प्रेम-प्यार का रंग वर्षाओ, छुआ-छूत का रोग मिटाओ।।

जुआ खेलना मदिरा पीना, मानव का यह धर्म नहीं है।
उग्रवाद-आतंक मचाना, याद रखों शुभ कर्म नहीं है।।

दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, बनो तपस्वी परोपकारी।
राम, कृष्ण, दयानन्द बनो तुम, गुण गाएगी दुनिया सारी।।

"नन्दलाल निर्भय" अब जागो! जग में नाम अमर कर जाओ।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओ, छुआ-छूत का रोग मिटाओ।।

विश्वकर्मा कुल गौरव
- पं. नन्दलाल निर्भय -
बहीन, जनपद- पलवल, हरियाणा
चलभाषः ९८१३८४५७७४

www.thearyasamaj.org

सर्वे भवन्तु सुखीनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत् ।।

'भारत बदल रहा है, आगे बढ़ रहा है'

- नरसिंह सोलंकी -
मन्त्री आर्य समाज सूरसागर
जोधपुर(राज.)
चलभाष- ९४१३२८८९७९

"आज नगद कल उधार" की उक्ति आज के समय में पूर्ण चरितार्थ होने जा रही है। आज जरूर आंशिक आर्थिक आपातकाल जैसा लग रहा है, लेकिन भविष्य उज्ज्वल है। सारा लेन-देन बिना नगदी (केशलेस) होने जा रहा है। आज किसी पेट्रोल पम्प पर गुन्डों ने हमला कर दिया और लाखों की नगदी लूटकर ले गये, साथ ही किसी को मार दिया, किसी को घायल कर दिया। बैंक के बाहर किसी सख्स को नोट लाने या ले जाते वक्त गोली मार दी और नगदी लूटकर भाग गये। कुछ गुन्डे बैंक में घुस गये व हथियार दिखा कर नगदी लूट ले गये। ऐसे किस्से आये दिन देखने व सुनने में आ रहे हैं। इन सबका एक ही इलाज बिना नगदी के व्यापार होने जा रहा है।

प्राचीनकाल में सुदूर पूर्व में लोग छोटे-छोटे गाँवों व खेतों पर ढाणियाँ (झोपड़े) बनाकर सुरक्षित रूप से रहते थे। उन्होंने कभी नगदी नहीं देखी थी। रोजमर्रा का सामान खरीदने हेतु आसपास के कस्बे में अतिरिक्त अनाज का गठड़ा बनाकर सिर पर ढोकर ले जाते थे और अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति का सामान खरीदकर अथवा बदलवाकर ले आते। साहुकार (दुकानदार) भी इमानदारी से अनाज का बाजार भाव से मूल्यांकन कर दैनिक उपयोग का सामान तेल, चावल, शक्कर, चायपत्ती, नमक, मसाला, दालें, तैयार कपड़े सिले-सिलाये वगैरा सामान दे दिया करते थे। जिसमें चोरी डकैती का भय नहीं रहता था। नगदी में सोना, चान्दी, ताम्बे के सिक्के जवाहरात आदि केवल बड़े शहरों में बदलाव (एक्सचेंज) व भण्डारण हेतु काम आते थे। जिसे बड़ी मजबूत तिजोरियों में बंद करके अथवा जमीन में गाड़कर रखते थे। उस समय बैंक नहीं थे। लेकिन राज्यों के आपसी लड़ाई झगड़े, लूटपाट व असमय व्यक्ति की मृत्यु पर जमीन में गड़ा धन जमीन में ही रह जाता था। आज जितना सोना-चांदी जवाहरात देश के उपयोग में आ रहा है उससे ज्यादा धन जमीन में गड़ा है। कभी-कभी नींव खुदाई आदि में मिलता भी है तो नगण्य।

समय के साथ बदलाव आते गये व लोगों की भावना लालच में आकर येन केन प्रकारेण से धन प्राप्त करना व भंडारण की प्रवृत्ति बढ़ती गई। रिश्वतखोरी, व बेईमानी के तौर तरीके बढ़ते गये। लूटपाट, डकैती, आतंकवाद आम बात हो गई। नकली धन बाजार में उतारकर अर्थ व्यवस्था बिगाड़ने व अवैध हथियारों की बिक्री, मादक पदार्थों का उत्पादन व समाज में अनैतिकता फैलाने के षडयंत्र रचे जाने लगें। आम जनता का जीना दूभर हो गया। चारों और सरकारी अव्यवस्थाओं पर हा-हाकार मचने लग गया।

ऐसे में देश में एक ऐसे प्रशासक का उद्भव हुआ जिसने सारी अव्यवस्थाओं को मिटाने हेतु एक ही रामबाण इलाज "बिना नगदी" (केशलेस) खरीददारी का बड़ा जोखम भरा प्रयोग कर डाला। आज सभी समझदार व्यक्ति नित नये प्रयोग करने में जुटे हुए हैं। आप बाजार से सामान खरीदना चाहते हैं तो बस आपके पास एक डेबिट कार्ड है तो बिना नगदी चुकाये भी चाहे जितना सामान खरीद सकते हैं, शर्त है कि आपके बैंक खाते में आवश्यक रकम जमा हो। भारत के किसी भी हिस्से में आप गये हुए हैं व जितनी नगदी चाहिए आप नजदीक के किसी (एटीएम) में किसी भी समय निकाल सकते हैं। (२४×७)

केशलेस बैंकिंग के कई उपयोगी तौर तरीके सामने आ रहे हैं, जैसे मोबाइल बैंकिंग, इन्टरनेट बैंकिंग, डेबिट/क्रेडिट कार्ड माइक्रो एटीम, रुपे कार्ड, आधार नम्बर बैंकिंग, सिंडई पासबुक, पीओएस द्वारा नगद आहरण सिंड बिल पे इत्यादि। लाखों रुपये के नोट गिनने में आपका और बैंक वालों का कितना समय नष्ट होता है। एवं नोटों के बड़े भारी बंडलों को इधर-उधर ले जाने का खर्च बच जाता है। अब सीधा पैसा खाते में जमा होने या उठ जाने में समय व मेहनत की बड़ी बचत होती है। उसके एवज में वित्तविभाग ने कुछ छूटें प्रदान की है जो इस प्रकार हैः-

(१) पंप पर पेट्रोल-डीजल भरवाने पर ०.७५% छूट (२) नई बीमा पालिसी पर १०% छूट (३) टोल टैक्स पर १०% छूट (४) रेल में खानपान, रिटायरिंग रूम पर ५% छूट (५) २००० रुपये तक सर्विस टैक्स में पूरी छूट (६) रेल यात्रियों का १० लाख का दुर्घटना बीमा मुफ्त (७) मासिक या सीजनल टिकिट पर ०.५% छूट।

समय बदल रहा है और समय के साथ जो आगे बढ़ते हैं वे हमेशा लाभ में रहते हैं। समय किसी का इन्तजार नहीं करता। वेद भी इस बारे में बहुत कुछ कह रहे हैं यथा-

एतोन्वद्य सुध्योभवाम प्र दुच्छुना मिनवामा वरीयः ।
आरे द्वेषांसि सनुतर्दधामायाम प्राञ्चोयजमानमच्छ ।।

ऋग्वेद ५.४.५-२६

अर्थ : (संक्षिप्त) जो मनुष्य विज्ञान को बढ़ाते हुए दुष्टों का निवारण करते हैं और दोषों से रहित हुए सनातन सत्य को धारण करते हैं वे अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

सूक्तोभिर्वो वचोभिर्दे वजुष्टरिन्द्रान्वग्नीअवसे हुव ध्यै ।
उक्थेभिर्हिष्मा कवयः सुयज्ञा आविवासन्तो मरुतो यजन्ति।।

अर्थः जो विद्वान् जन सबके लिए सुख, दुःख, विद्या-विज्ञान का सेवन करते हुए अग्नि आदि की विद्या को सबके लिए देते हैं वे ही उत्तम होते हैं। ●

www.thearyasamaj.org

देवपीयु नष्ट हो जाते हैं

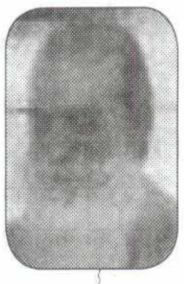

- महात्मा चैतन्यमुनि -
महादेव, सुन्दरनगर
जिला-मण्डी, हिमाचल प्रदेश

संसार में मुख्यत: दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं - देवपीयु और देवबन्धु। इनमें से जो देवबन्धु हैं वे तो देवयान लोक को भी प्राप्त हो जाते हैं मगर जो देवपीयु है वे पूर्णत: नष्ट हो जाते हैं। इस सम्बन्ध में अथर्ववेद के पांचवें अध्याय का अठाहरवां सूक्त मनन करने योग्य है। जहां बताया गया है कि ब्राह्मण की हिंसा करने वाला देवपीयु नष्ट हो जाता है। एक मन्त्र देखें-

देवपीयुश्चरति मर्त्येषु गरगीर्णो भवत्यस्थिभूयान्।
यो ब्राह्मणं देवबन्धु हिनस्ति न स पितृयाणमप्येति लोकम्।।
- अथर्व-५.१८.१३

(देवपीयुः) देवों अर्थात् ज्ञानियों का हिसंन करने वाले **(मर्त्येषु)** मनुष्यों में **(गरगीर्णः चरति)** मानों विष पिए हुए घूमते हैं अर्थात् उसकी अवस्था वैसी ही हो जाती है जो उस व्यक्ति की होती है जिसने गलती से कही विष पी लिया हो। ऐसा व्यक्ति **(अस्थिभूयान् भवति)** हड्डी-हड्डी वाला हो जाता है। अर्थात् हड्डियों का पिन्जर सा ही बन जाता है। **(यः)** जो **(देवबन्धुम्)** प्रभु के मित्र **(ब्राह्मणं हिनस्ति)** ज्ञानी पुरुष का हिंसन करता है, उन्हें किसी प्रकार का भी कष्ट देता है **(सः)** वह देवयान लोक को प्राप्त करने की बात तो दूर रही **(पितृयाणं लोकं अपि न एति)** पितृयाण लोक को भी प्राप्त नहीं कर पाता है।

मन्त्र में दो प्रकार के व्यक्तियों की चर्चा की गई है। अब तनिक विचार करें कि वास्तव में ये देवपीयु और देवबन्धु कौन हैं... देवबन्धु तो वे हैं जो आस्तिक-भाव रखते हैं... प्रभु के मित्र हैं.... ज्ञानी हैं.... सत्यवादी और धार्मिक हैं... ऐसे लोग पितृयान लोक को तो प्राप्त होते ही हैं मगर उससे भी आगे वे देवयान लोक को भी प्राप्त कर लेते हैं। देवपीयु इसके बिल्कुल ही विपरीत है। वे ब्राह्मण अर्थात् ज्ञान व ज्ञानियों का हिंसन करने वाले होते हैं... प्रभु मित्रों से वे द्वैष करते हैं... उन्हें तरह-तरह के कष्ट देते हैं। इस प्रकार का सज्जनों को कष्ट देना मानों इसी प्रकार का कुकृत्य है मानों अन्जानें में व्यक्ति जहर पी गया हो... सज्जनों को सताने वाला एक न एक दिन नष्ट होता ही है... ये वे लोग हैं जो दिव्यगुणों से घृणा करने वाले हैं। इन्हें ही असुर भी कहा जाता है। ऐसा व्यक्ति कुवृत्ति वाला होता है, पतन की ओर जाने वाला होता है, दुरितों से परिपूर्ण होता है, इसे अन्धकार ही अच्छा लगता है, ऐसा व्यक्ति पूर्ण भोगवादी होता है। इसका परिणाम यह होता है कि ऐसे व्यक्ति का चहुंमुखी विनाश हो जाता है। जो राक्षस है, कामी, क्रोधि, लोभी, परस्त्रीगामी, परद्रोही और अदानी है... ऐसा व्यक्ति कुवृत्तियों और कुसंस्कारों के जंगल में भटकता-भटकता अन्तत: हड्डियों का ढांचा मात्र बनकर बिखर जाता है, ऐसा व्यक्ति देवलोक को तो प्राप्त होता ही नहीं है मगर पितृलोक से भी वंचित हो जाता है... अर्थात् मोक्ष का तो वह अधिकारी बनता ही नहीं है बल्कि उसे मानव योनि का मिलना भी दुभर हो जाता है... यजुर्वेद (२-३०) आसुरी वृत्ति वाले के सम्बन्ध कहा है कि जो छैल-छबिला बनकर घूमता हो, अपनी ही मौज को महत्व देता हो, जीवन का उद्देश्य केवल भोग समझता हो, पराए माल से अपने को पुर करने वाला हो और निकृष्ट साधनों से अपने खजानों को भरने वाला हो।

देवबन्धु परमात्मा देवों, और दिव्यगुणों से प्रेम करने वाला होता है... यही सुर, आर्य व देव है... ब्राह्मण व ब्राह्मणत्व को प्रेम करने वाला है... 'वेदपाठी भवेद् विप्रो ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः' जो केवल वेद को पढ़ता है व विप्र और जो ब्रह्म को जान लेता है वह ब्राह्मण है। वही देवबन्धु भी है.. वह ब्राह्मण **(ऋतुज्ञाः)** सृष्टि के नियमों को जानने वाला होता है। वह **(ऋतबद्ध)** उन शाश्वत् नियमों को बढ़ाने वाला है, **(ऋतपाः)** वह उनका पालन करने वाला होता है और **(ऋतेजाः)** वह ऋत की रक्षा करने वाला होता है। धम्मपद में ब्राह्मण की संज्ञा दी गई है कि जो शरीर वाणी मन से बुरा काम नहीं करता है, जो ज्ञानवृद्ध है, जो उचित-अनुचित का ज्ञान रखने वाला है वह ब्राह्मण है। वहीं देवबन्धु है तथा जो इसके विपरीत है वही देवपीयु है। गीता में (अध्याय १६) दैवी तथा आसुरी प्रकृति के लोगों के बारे में चर्चा की गई है। वहां दैवी प्रकृति (दैवी-संपद्) के लोगों के निर्भयता, अन्त:करण की शुद्धि, ज्ञान और योग में निष्ठा, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय, तप सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग शान्ति, दूसरों के दोष न ढूंढना, प्राणियों पर दया, लोभ न होना, स्वभाव में मृदुता (कोमलता), लज्जाशीलता, तेज, क्षमा, धैर्य, पवित्रता, द्वेष न होना, अत्यन्त अभिमान न होना ये छब्बीस गुण बताए गए हैं। यही दैवी सम्पदा वाले लोग परमगति को प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत जो आसुरि प्रकृति (आसुरी-संपद्) के लोग हैं वे दंभ (पाखण्ड), दर्प (घमण्ड), अभिमान, क्रोध, पारुष्य (कठोरता) तथा अज्ञान, इन अवगुणों से भरे होते हैं। इसी क्रम में आगे कहा गया है कि जिन्हें प्रवृत्ति-निवृत्ति का ज्ञान नहीं, पवित्रता नहीं, सदाचार नहीं, कामहैतुक है, सृष्टि स्वयं बन गई कोई ईश्वरादि नहीं ऐसी अल्पबुद्धि रखते हैं वे लोग ही नष्टात्मा है, सदा अतृप्त रहने वाले हैं, कामी-क्रोधी, लालची और अपवित्र हैं.... ऐसे मूढ़ प्राणी निम्न योनियों में भटकते रहते हैं। **असुर्यानाम ते लोकाः..** (यजु०४०-३) इस मन्त्र का भाष्य करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी लिखते हैं कि 'जो लोग आत्मा में और जानते, वाणी से और बोलते और करते कुछ और ही हैं वे राक्षस, असुर या पिशाच हैं। इसके विपरीत जो आत्मा, मन, वाणी और कर्म में निष्कपट एक-सा आचरण करते हैं वे देव कहलाते हैं।

शेष भाग पृष्ठ ४२ पर

www.thearyasamaj.org

देश का १३वाँ राज्य उन्तरप्रदेश (भाग-१)

- इन्द्रदेव गुलाटी -
संस्थापक-सावरकरवाद प्रचार सभा
बुलन्दशहर, (उ.प्र.)
चलभाष- ०८९५८७७८४४३

(१) पहले इसका नाम यूनाईटिड प्रोविन्स था तब भी संक्षेप में यू. पी. कहा जाता था।

(२) बाद में नाम बदलकर उत्तरप्रदेश कर दिया गया, फिर भी संक्षेप में यू.पी. ही कहा जाता है।

(३) २००० ई. में इसके पहाड़ी जिलों का अलग राज्य उत्तराखण्ड के नाम से बनाया गया लेकिन नाम वही यू.पी. रहा।

(४) अब इसमें ७५ जिले हैं। आबादी के हिसाब से यह देश का सबसे बड़ा राज्य है। आबादी लगभग २१ करोड़ है।

(५) राजधानी का नाम लखनऊ है। यह पहले नवाबों का शहर रहा था।

(६) राज्य से लोकसभा के लिए ८० सांसद चुने जाते हैं, जो सर्वाधिक हैं। इसलिए इसे सभी दल महत्व देते हैं।

(७) देश के अधिकांश प्रधानमन्त्री इसी राज्य से हुए हैं।

(८) गंगा-यमुना दोनों पवित्र नदियों का अधिकांश भाग यहीं से होकर जाता है।

(९) इलाहाबाद में कुम्भ-अर्द्ध कुम्भ का मेल लगता है। वर्तमान अखिलेश सरकार में संयोग से धर्मार्थ कार्य राज्य मन्त्री और केबिनेट स्तर के हिन्दू मन्त्री हैं फिर भी कुम्भ मेला का प्रभारी शहरी विकास मन्त्री मो. आजम खाँ को बनाया गया, क्यों? किसी भी व्यक्ति ने, किसी भी संस्था ने, किसी भी अखाड़े ने आपत्ति और विरोध क्यों नहीं किया? यह मृतप्राय: समाज का जीता जागता उदाहरण है।

(१०) सपा की अखिलेश सरकार को पांच साल हो गए हैं। जितने साम्प्रदायिक दंगे इस सरकार के कार्यकाल में हुए हैं इतने दंगे पहले कभी नहीं हुए। इसका प्रमुख कारण है कि मो. आजम खाँ दोषी-अपराधी-दंगा शुरू करने वालों का पक्ष लेते हैं और उन्हें बचाते- रिहा कराने में जिला प्रशासन पर परोक्ष रूप से दबाव डालने में माहिर हैं और हिन्दू पिटता है, जलील होता है।

(११) भारत विभाजन के पक्षपाती मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने केरल में मोपलाओं को भरपूर सहयोग करके हिन्दूओं का खून बहाया था। उनकी गलतियों को पुरस्कृत करने के लिए आजम खाँ ने २०० एकड़ भूमि पर जौहर यूनिवर्सिटी बनवाई है। वे उसे राज्यपाल से अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान का दर्जा दिलाना चाहते थे। कई राज्यपाल बदल गए। ८ साल बीत गए उस फाइल पर राज्यपाल ने हस्ताक्षर नहीं किए। श्री नरेन्द्र मोदी व श्री राजनाथसिंह ने डॉ. अजीज कुरैशी को १५ दिनों के लिए अस्थाई राज्यपाल बनवा दिया था, क्योंकि तत्कालीन राज्यपाल अवकाश लेकर चले गए थे। चतुर आजम खाँ ने अगले दिन ही डॉ. अजीज कुरैशी से भेंटकर जौहर विश्वविद्यालय को अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान का दर्जा दिलाने के लिए मोहर लगवाकर हस्ताक्षर करा लिए। इसके लिए स्पष्ट रूप से नरेन्द्र मोदी व राजनाथ सिंह दोषी हैं।

(१२) मायावती सरकार ने अपने मुस्लिम वोट बैंक को मजबूत करने के लिए लखनऊ में उर्दू-अरबी-फारसी को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय बनवाया था जिसका नाम रखा था। मान्यवर श्री काशीराम जी ऊर्दू-अरबी फारसी विश्वविद्यालय।

अखिलेश सरकार ने इसका नाम बदल दिया है। नया नाम है ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू-अरबी व फारसी विश्वविद्यालय।

(१३) मायावती सरकार ने अरबी-फारसी मदरसा बोर्ड परीक्षाओं को यू.पी. बोर्ड इलाहाबाद की परीक्षाओं के समकक्ष का दर्जा दे दिया है, जबकि यह कार्य असंवैधानिक है क्योंकि संविधान की ८वीं अनुसूची की २२ मान्यता प्राप्त भाषाओं में अरबी-फारसी नहीं है किन्तु किसी ने भी इसके विरुद्ध जनहित याचिका उच्च न्यायालय में दायर करके मान्यता रद्द करने की मांग ही नहीं की है।

(१४) विश्वविख्यात इस्लामी शिक्षण संस्था दारुल उलूम सहारनपुर जिले के देवबन्द नगर में है,जिसे १९४७ में बाध्य करके पाकिस्तान भेज देना चाहिए था, जबकि ऐसा नहीं किया गया।

(१५) अखिलेश मुख्यमन्त्री ने नवम्बर २०१५ में घोषणा की है कि लखनऊ में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नाम से प्राविधिक विश्वविद्यालय खोला जाएगा।

(१६) दैनिक जागरण से ज्ञात हुआ है कि गाजियाबाद में डॉ. अब्दुल कलाम के नाम पर विश्वविद्यालय चल रहा है।

(१७) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय १९४७ में पाकिस्तान जा रहा था, लेकिन नेहरू ने ऐसा नहीं होने दिया। मनमोहनसिंह सरकार ने जून २००९ में एक कानून बनाया कि इसकी ५ राज्यों में ५ शाखाएं खोली जाएंगी। जब ये शाखाएं बन जाएंगी तब अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय देश का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय हो जाएगा। इसका सारा खर्चा भारत सरकार उठाती है। बी.ए. तक उर्दू पढ़ना अनिवार्य है।

(१८) सपा सरकार के शासनकाल में अपराध बहुत बढ़े हैं। कानून व्यवस्था की स्थिति से वर्तमान राज्यपाल नाखुश हैं।

(२०) मुलायमसिंह ने कहा है कि राज्य में अपराध अन्य राज्यों से कम हो रहे हैं। मुख्यमन्त्री अखिलेश सदन में स्वीकार कर चुके हैं कि ३-१/२ सालों में पुलिस ६२२ बार पिट चुकी है। जब पुलिस का यह हाल है तो सामान्य जन सुरक्षित कैसे रहेगा? ●

www.thearyasamaj.org

बढ़ो जवानों! तुम्हारे पीछे सारा हिन्दुस्तान है

विश्वकर्मा कुल गौरव
- डॉ लक्ष्मीनिधि
निधि विहार, १७२, न्यू बराद्वारी, पो. साकची, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष ९९३४५२१९५४

भारत के जर्रे-जर्रे में, जाग पड़ी चिनगारियाँ,
बढ़ा काफिला वीर वतन का, कफन लिए कुर्बानियाँ,
नाच रही है तरुण जवानी, तोपों की ललकार पर,
दहल रही दुश्मन की छाती, वीरों के हुँकार पर,
सागर की लहरों पर लहरें, तरुणाई का गान है,
बढ़ो जवानों! तुम्हारे पीछे सारा हिन्दुस्तान है।

राणा की तलवार मचलती और कलियाँ कश्मीर की,
लहू चाटने वाली जिह्वा, लपक रही शमशीर की,
सारा भारत बोल रहा है, इंकलाब की बोलियाँ,
रण-आंगन में नाच रही है, वीर-वतन की टोलियाँ,
आज बना है पाक, देख लो कैसा कब्रिस्तान है,
बढ़ो जवानों! तुम्हारे पीछे सारा हिन्दुस्तान है।

विश्व-शांति के मतवाले, हम आग क्रान्ति की पीते हैं,
शत्रु चुनौती देता है तो, मर-मरकर हम जीते हैं,
और चाहिए खून जिसे, हम देते हैं, मैदान में,
मुट्ठी में है मौत हमारी, जीवन है कृपाण में,
डटा समर में हटा न पीछे, यह भारत की शान है,
बढ़ो जवानों! तुम्हारे पीछे सारा हिन्दुस्तान है।

खप्पर लेकर जब नाचेगी, रणचण्डी आह्लाद से,
गूँजेगा भारत का अम्बर, समरांगण, जय नाद से,
अपना बाण संभालों अर्जुन! गीता की ललकार है
लाख आँधियाँ चले मगर, खुद भारत एक तूफान है,
समरांगण में उमड़ पड़ो, माँ का यह आह्वान् है
बढ़ो जवानों! तुम्हारे पीछे सारा हिन्दुस्तान है।

बढ़ा पाक नापाक हौसला, लेने को कश्मीर को,
शायद भूल गया है, पगला, नलवा की तस्वीर को,
जहाँ खींची हो भारत-सीमा, वहाँ आन की आग है,
वहीं हमारा, पूजा-स्थल, कुरुक्षेत्र; प्रयाग है,
वीर जवानों! तेरे पीछे, गीता और कुरान है,
बढ़ो जवानों! तुम्हारे पीछे सारा हिन्दुस्तान है।

चमक रही बिजली-सी फन-फन, लाल लहू की धार है,
कूद पड़ो मझधार बीच, मत सोचो कहाँ किनारा है,
आज प्रलय हो जाये मगर, हम माँ की लाज बचायेंगे,
हम बलिदानी वीर, वतन का, मस्तक नहीं झुकायेंगे,
भारत माँ के सिंह सपूतों! तेरा लक्ष्य महान है,
बढ़ो जवानों! तुम्हारे पीछे सारा हिन्दुस्तान है। ●

विश्व की प्रमुख समस्या आतंकवाद

- नरसिंह सोनी आर्य -
डागा सेठिया मोहल्ला बीकानेर
चलभाष- ९२५२६१८२६४

सारा विश्व आज आतंकवाद से पीड़ित है। आतंकवाद क्या है? बेगुनाहों को-सोते हुवों को, अस्पताल, स्कूल, धार्मिक स्थल, मंदिर, मस्जिद, भीड़ वाले स्थानों पर छिपकर बम, ग्रेनाईट आदि विध्वंसक हथियारों से हमला कर लोगों को मौत के घाट उतारना दहशत फैलाना ही इनका काम है। इससे इनको क्या मिलता है? क्या वाह-वाही मिलती है या बहादुरी प्रदर्शित होती है? जो भी लोग इसकी चपेट में आते हैं उनके मुख से धिक्कारता ही निकलती है। उनकी आत्माएं उनको बारम्बार धिक्कारती है। यह उनका कर्म मानवता के खिलाफ है। ये मानव होते हुए भी मानव कहलाने के अधिकारी नहीं हैं। हिंसक पशु भी अपनों को मारकर उदर पूर्ति नहीं करता है। क्या दूसरों को दुःख देने से इनको फायदा होता है? वास्तव में कोई फायदा नहीं होता, बदनामी ही होती है। मनुष्य में मनुष्यपन नहीं तो उसका जीना व्यर्थ है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना और

सर्वेभवन्तु, सुखिनः सर्वे सन्तु, निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

की भावना नहीं है तो वह मनुष्य नहीं राक्षस है। उसकी कभी भी सद्गति नहीं होगी, वह दुर्गती के दारूण दुख में ही गोता लगाता रहेगा। जो चोट वह दूसरों पर कर रहा है, वैसी ही चोट उसके ऊपर होगी, तब उसको होश आयेगा। खुदा-ईश्वर किसी को नुकसान पहुंचाने की इजाजत नहीं देता। अगर वह ऐसी इजाजत देता है तो वह खुदा-ईश्वर नहीं है। ईश्वर के सभी बन्दे एक से हैं, वह सभी को एक सी नजर से देखता है। भेदभाव नहीं करता। सभी उसी की सन्ताने हैं। इसीलिए तो कहा है कि तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा, इन्सान की औलाद है, इन्सान बनेगा। अपनी आत्मा के अन्दर झांक कर तो देखो वहां खुदा बैठा है वह सबकी भलाई के लिए ही कार्य करने की इजाजत देता है। उसकी सुनो और अपने कर्म को सुधारकर मानव कल्याण के मार्ग को अपनाओ। ●

www.thearyasamaj.org

गुरुकुल नवप्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

दिनांक ९ से १० फरवरी २०१७

स्थान-नवप्रभात आश्रम परिसर, नौवावाली, जनपद- बरगढ़, उड़िसा

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति में दूरस्थ वनांचल में गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में आर्यजनों की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है इस अवसर पर वैदिक संसार द्वारा वैदिक साहित्य का स्टाल भी लगाया जाएगा। गुरुकुल का निकटवर्ती रेल्वे स्टेशन खरिआर रोड़ (छत्तीसगढ़) जो रायपुर-तितिलागढ़ के मध्य रायपुर से १०५ किमी दूर है।

आमंत्रित विद्वान- स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती, मेरठ, स्वामी संविदानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुरेश्वरानन्द जी सरस्वती, डॉ. सोमदेव शतांशु जी हरिद्वार, आचार्य श्री अंशुदेव जी।

सम्पर्क- आचार्य भगवानदेव जी चलभाष- ८७६३३२४२००

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

दिनांक- २३ से २५ फरवरी २०१७

आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन वीरवार, शुक्रवार, शनिवार २३-२५ फरवरी २०१७ को किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियां अभी के अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्थाओं का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनाये। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

सत्य सनातन वैदिक महोत्सव

दिनांक १५ से १९ फरवरी तक

वेद प्रचार मण्डल आष्टा, जिला-सिहोर (म.प्र.) के द्वारा आष्टा नगर के मानस भवन में पंच दिवसीय वेदज्ञान गंगा का आयोजन वैदिक जगत् की महान विदुषी सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से आयोजित किया जा रहा है समस्त धर्मनिष्ठजन सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक- वेद प्रचार मण्डल, **संयोजक-** अनोखीलाल खण्डेलवाल, **सह-संयोजक-** बाबूलाल झंवर, **सम्पर्क-** ९३०२९३५८७, ९९२६९२८२७७

आर्य समाज खामखेड़ा का वार्षिकोत्सव

दिनांक ५ से ९ मार्च २०१७

आर्य समाज खामखेड़ा बैजनाथ, जिला- सिहोर (म.प्र.) का वार्षिकोत्सव आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति में हर्षोल्लास से मनाया जाएगा। समस्त धर्मनिष्ठ सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान - डॉ. शिवदत्त जी पाण्डेय , सुल्तानपुर (उ.प्र.)
पं. रघुनाथदेव जी शास्त्री, ऐटा (उ.प्र.)
आ. रजनीश जी शास्त्री, भोपाल (म.प्र.)

सम्पर्क- राधेश्याम शर्मा (पुरोहित) ९७५५०४१४००

आर्य समाज रावतभाटा का ५०वाँ वार्षिक उत्सव

दिनांक ११ व १२ फरवरी २०१७

आर्य समाज रावतभाटा का ५० वाँ वार्षिक उत्सव दिनाँक ११ व १२ फरवरी- २०१७ (शनिवार व रविवार) को स्वर्णजयंती समारोह के रूप में मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान आचार्य यशवीर जी (गुरुग्राम, हरियाणा), प्रसिद्ध भजनोपदेशक मोहित कुमार जी शास्त्री (बिजनोर- उ.प्र.) एवं स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (सांसद -सीकर) पधार रहें हैं। इस अवसर पर आर्य समाज रावतभाटा की ५० वर्षों की उपलब्धियों को दर्शाने वाली भव्य स्मारिका का विमोचन किया जायेगा जिसमें संग्रहणीय एवं प्रेरणाप्रद वैदिक-वैज्ञानिक लेखों का प्रकाशन किया जायेगा। विशाल यज्ञ, भजन-प्रवचन, शोभायात्रा, बाल सम्मेलन, महिला सम्मलेन, योग शिविर,जड़ी-बूटी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जायेगा। इस समारोह में ईष्टमित्रों व परिजनों सहित पधार कर ज्ञान यज्ञ का लाभ प्राप्त करें।

सम्पर्क- ओमप्रकाश आर्य (मन्त्री) चलभाष- ९४६२३१३७९७

योग-ध्यान, साधना शिविर

दिनांक ९ से १६ अप्रेल-२०१७ तक

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक ९ से १६ अप्रैल-२०१७ तक निःशुल्क योग-ध्यान, साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे। तथा उपनिषद्-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित ब्र. सत्यप्रकाश नैष्ठिक जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य महात्माजी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्माजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अतः इच्छुक साधक अपना स्थान शीघ्र आरक्षित करें।

सम्पर्क-०९४१९१०७७८८ व ०९४१९१९८४५१ पर तुरन्त सम्पर्क करें।

आर्य समाज रेवाड़ी का वार्षिकोत्सव

दिनांक ८-९ अप्रैल २०१७

लगभग शतायु अवस्था को पूर्ण करने की ओर अग्रसर आर्य समाज रेवाड़ी (हरियाणा) का वार्षिकोत्सव दिनांक ८-९ अप्रैल २०१७ को हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। समस्त आर्यजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान- आ. विजयपालजी झज्जर
युवा संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, गुरुकुल झज्जर
प्रो. ओमकुमार जी.आर्य, रोहतक

सुश्री अंजलि आर्या करनाल तथा आर्य प्रतिनिधि सभा (दयानन्द मठ)। रोहतक के गणमान्य पदाधिकारी भी उपस्थित होंगे।

निवेदक-आर्य समाज रेवाड़ी, **सम्पर्क** देशराज आर्य-चलभाष ९४१६३३७६०९

www.thearyasamaj.org

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए-
''महर्षि दयानन्द सरस्वती''

वैदिक-क्षेत्र चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक १४ जनवरी २०१७ से ११ फरवरी २०१७ तक

जिला आर्य-प्रतिनिधि सभा, फर्रुखाबाद के तत्वावधान में मेला रामनगरिया, पाञ्चालघाट, फर्रुखाबाद में मानव उत्थान विश्व कल्याण एवं वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु आयोजन दिनांक १४ जनवरी २०१७ से ११ फरवरी २०१७ तक आयोजित होने जा रहा है। जिसमें आर्य जगत् से सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान एवं सन्यासी, उपदेशक, महोपदेशक, ब्रह्मचारी, वेदपाठीगण पधार रहे हैं। अत: आप सबसे नम्र निवेदन है कि इस चरित्र निर्माण शिविर में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर भारत वर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों के विचारों को सुनकर धर्मलाभ लें एवं अन्यों को प्रेरित करें।

प्रतिदिन सम्पन्न होने वाले कार्यक्रम

योग शिविर-प्रात: ७ बजे से प्रात: ८ बजे तक

यज्ञ-प्रात: ९.३० बजे से प्रात: ११ बजे तक

भजन व आध्यात्मिक प्रवचन-अपराह्न २ बजे से सायं ५ बजे तक

भव्य शोभा यात्रा- दिनांक १ फरवरी २०१७, प्रात: १०.३० बजे से।

विराट कवि सम्मेलन - दिनांक ५ फरवरी २०१७,

राष्ट्रीय रक्षा, गौ, गंगा, गायत्री एवं महिला सम्मेलन की सूचना यथा समय दी जाएगी।

नोट :- ऋषि लंगर (भण्डारा) हेतु दाल, चावल, चीनी, आटा, सब्जी आदि के अतिरिक्त यज्ञ हेतु घी, सामग्री आदि का दान करके पुण्य के भागी बनें। धन्यवाद।

निवेदक : आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री (प्रधान), मो. ९४५००१८१४१
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा- फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

वैदिक यज्ञ एवं सत्संग

दिनांक ५ से ९ अप्रैल २०१७ तक

आर्य समाज खाटसूर, जिला-शाजापुर (म.प्र.) के वार्षिकोत्सव पर आयोजित आयोजन में समस्त धर्मनिष्ठजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान-पं. नरेशदत्त जी आर्य, बिजनौर (उ.प्र.)
पं. काशीरामजी अनल, कानड़ (म.प्र.)

निवेदक- आर्य समाज, खाटसूर

सम्पर्क- सीताराम आर्य (प्रधान) ९९२६०८६३८७

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस अवसर पर

वृहद वैदिक यज्ञ- सत्संग

दिनांक १९ से २१ फरवरी- २०१७

आर्य समाज पिपलोन कलां, जिला-आगर के संयुक्त प्रयासों से विश्वशान्ति एवं प्राणी मात्र के कल्याणार्थ त्रिदिवसीय वैदिक यज्ञ-सत्संग का भव्य आयोजन आयोजित किया जा रहा है। समापन दिवस २१ फरवरी महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस अवसर पर विशाल शोभायात्रा आर्यवीर दल के अखाड़ों के साथ निकाली जावेगी। समस्त धर्मनिष्ठ जन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान-पं. सत्यपाल जी सरल, देहरादून (उत्तराखण्ड)
बहन मालती प्रजापति, बुरहानपुर (म.प्र.)
पं. काशीराम जी अनल, कानड़ (म.प्र.)

सम्पर्क-विनोद आर्य एवं अशोक आर्य

वैदिक सत्संग का भव्य आयोजन

दिनांक २८ से ३० मार्च २०१७ तक

नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य समाज बरखेड़ा पन्थ, तह.- मल्हारगढ़, जिला- मन्दसौर (म.प्र.) के द्वारा वैदिक सत्संग का भव्य आयोजन किया जा रहा है। उक्त आयोजन में गरिमामयी उपस्थिति हेतु आर्यजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान-कु. अंजलि आर्या- करनाल (हरियाणा)
पं. उपेन्द्र जी आर्य- चण्डीगढ़ (हरियाणा)

सम्पर्क- समरथमल पाटीदार (प्रधान) ९९०७८७३५७७
दिनेश कारपेण्टर (मन्त्री) ९४२५४४१५०७

कियात्मक योगाभ्यास शिविर

दिनांक-२ से ९ अप्रैल २०१७ तक

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पोस्ट- सागपुर, जिला-सांबरकाठा (गुजरात) पिन-३८३३०८७ द्वारा प्रतिवर्ष में दो बार आयोजित किये जाने वाले क्रियात्मक योगाभ्यास की प्रतिक्षा आर्यजनों को रहती है।

इस वर्ष यह शिविर २ से ९ अप्रैल २०१७ तक आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक साधक अतिशीघ्र अपना पंजीयन करवा लेंवे।

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क- ९४२७०५९५५०
Email- vaanaprastaarojad@gmail.com

पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल
महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल,
शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)

प्रवेश सूचना-सत्र २०१७-२०१८

छठीं कक्षा में (आयु- ९ वर्ष से ११ वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल १००/- रुपए) भरकर ३१.०३.२०१७ तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं।
(पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा ०२ अप्रैल २०१७ दिन रविवार को प्रात: ८.०० बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

मंगतराम मेहता-कुलपति
दूरभाष- 9814629410

www.thearyasamaj.org

संगीयमयी वेद कथा एवं १०८ कुण्डिय यज्ञ सम्पन्न

नगर बैरसिया, जिला-भोपाल (म.प्र.) में दिनांक १६ से २० जनवरी २०१७ तक वेदकथा का आयोजन किया गया। आयोजन के प्रारम्भ में भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें आर्यवीर दल पीपलिया नानकर के आर्यवीरों द्वारा शौर्य प्रदर्शन किया गया।

यज्ञ ब्रह्म के रूप में जबलपुर से पधारे पं. सूर्यकान्त जी सुमन ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। प्रातःकाल, दोपहर तथा रात्रि में भजन-प्रवचन-व्याख्यान के सत्र सम्पन्न हुए। सुश्री अंजलि आर्या, पं. सन्दीप आर्य मेरठ, पं. काशीराम जी अनल, पं. आर्य मुनि जी बेरछा तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती शान्तिदेवी जी एवं पं. महेन्द्र पाल जी आर्य के भजन प्रवचनों का लाभ उपस्थितों को प्राप्त हुआ।

लखनऊ से पधारे नयनप्रकाश जी शास्त्री ने धनुर्वेद विद्या के आधार पर धनुर्विद्या का विस्मयकारी प्रदर्शन किया। आयोजन के मध्य तनावपूर्ण स्थिति का वातावरण निर्मित भी हुआ, क्योंकि पं. महेन्द्र पाल आर्य ३३वर्षों पूर्व इस्लाम मत का परित्याग कर वैदिक धर्मी बने हैं। जब वे इस्लाम मतानुयायी थे तो वे मौलाना महबूब अली के नाम से जाने जाते थे, आप कुरान मर्मज्ञ होकर इस्लाम की पोलपट्टी का गूढ़ ज्ञान रखते हैं, जिसके आधार पर वे अपने व्याख्यानों में मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा को स्पष्ट करते हुए इस्लाम तथा कुरान के प्रति लोगों को सचेत करते हैं। इन बातों को सुनकर मुस्लिम मतानुयायी तिलमिला उठे और उन्होंने पुलिस में शिकायत की, जिसे लेकर पुलिस प्रशासन इस प्रकार सक्रिय हो गया जैसे आयोजन स्थल पर कोई आतंकवादी गतिविधियां चलाई जा रही हो। धर्म-संस्कृति के ज्ञान से विहीन, लार्ड मैकाले के मानस पुत्र तथा भारत की मूलधर्म संस्कृति को नेपथ्य में डाल विभेदकारी मत-पन्थों को संरक्षण-पोषण प्रदान करने वाले संविधान से बंधे अंग्रेजी मानसिकता के पुलिस अधिकारियों द्वारा इस तरह बर्ताव किया गया कि बहुत बड़ा आपराधिक घटनाक्रम घटित हो रहा हो, जबकि पं. महेन्द्रपाल उर्फ मौलाना मेहबूब अली चुनौती पूर्वक मंच से कहते की मेरे द्वारा कही गई बात पर किसी को असत्य होने का कोई शक हो तो वह आये और मुझसे चर्चा करें। मैं उसे प्रमाण दूंगा। मेरे अन्तराष्ट्रीय स्तर पर व्याख्यान होते आए हैं और जिसमें दिल्ली और इन्दौर के पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज में हुए व्याख्यान भी शामिल है तथा मेरे व्याख्यान यू-ट्यूब पर भी उपलब्ध है। मैंने तो दुनिया के मुस्लिम विद्वानों से जवाब मांगें हैं वे मेरे प्रश्नों का जवाब नहीं दे पा रहे हैं। इसके उपरान्त भी पुलिस ने दबंगई रवैया दिखलाया और पुलिस के आला अधिकारियों ने पं. महेन्द्रपाल जी की अभिव्यक्ति पर रोक लगाकर उन्हें अपनी बात कहने से बलपूर्वक रोका तथा उन्हें बलपूर्वक मंच से उठाकर ले जाने की धमकी दे डाली, जिसके कारण समापन दिवस की रात्रि का सर्वधर्म सम्मेलन निरस्त किया गया। समापन दिवस के अन्तिम दोपहर सत्र में धर्म विषय को लेकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य के सारगर्भित प्रवचन हुए। इस अवसर पर मथुरा से यज्ञ मुनिजी राममुनिजी, भोपाल से अतुल वर्मा जी, आष्टा से भारतसिंह जी, बाबूलाल जी सोनी, बाड़ी से नामदेव जी, भोपाल से किशनलाल जी सोनी, ललरिया से आर्य मुनि जी तथा उनके सुपुत्र आचार्य ओमप्रकाश जी, सिरोंज से स्वामीजी, गंजबासौदा से शिवचरण पांचाल, सूर्यप्रकाश जी, महेन्द्र जी, श्रीवास्तव जी, खामखेड़ा से भगवत् सिंह जी आदि उपस्थित रहे।

आर्य समाज बैरसिया के तत्वावधान में बस स्टैण्ड के समीप मानस भवन में आयोजन किया गया। मुख्य सूत्रधार के रूप में पं. कमल किशोर जी शास्त्री की सराहनीय भूमिका रही। आयोजन पूर्णरूपेण सफल तथा सोये हुए तथाकथित हिन्दू को जगाने की दिशा में अहम् योगदान देने वाला रहा।

वैदिक संसार इंदौर द्वारा वेद प्रचार वाहन के साथ साहित्यिक सेवा तथा प्रभात आयुर्वेदिक संस्थान देवास द्वारा औषधिय सेवा प्रदान की गई।

भरतसिंह सैनी को सामवेद भेंट

भरतपुर (राज.) निवासी भरतसिंह सैनी की जलदाय विभाग से ४१ साल राजकीय सेवा करने के उपरांत फोरमेन के पद से सेवानिवृत्ति के अवसर पर सैनी का जहां अनेक सामाजिक संस्थाओं द्वारा स्वागत सत्कार व अभिनन्दन किया गया वहीं इन्दौर से पधारे ''**वैदिक संसार**'' पत्रिका के प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक स्व. सुखदेव शर्मा ने भरतसिंह सैनी को वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ ''**सामवेद**'' भेंट किया। साथ ही श्री शर्मा ने उन्हें पीड़ित मानवता की सेवा करने एवं धर्म प्रचार कर समाज में नई चेतना लाने की प्रेरणा दी। सेवा निवृत्ति समारोह के मुख्य अतिथि जिला साक्षरता एवं सतत् शिक्षा अधिकारी अशोक धाकरे थे। विशिष्ट अथिति जलदाय विभाग के उत्तम सिंह जी डिविजन एकाउन्टेंट गोपाल प्रसाद गर्ग, सैनी महासभा अध्यक्ष दयानन्द चौधरी, वैदिक संसार पत्रिका के क्षेत्रीय प्रतिनिधि जगदीश आर्य, दूरदर्शन कलाकार राधाकिशन सैनी, उद्योगपति सुखदेव दाढ़ी वाले, पूर्व तहसीलदार रामसिंह सैनी, सावित्रीबाई फूले राष्ट्रीय जागृति मंच की जिलाध्यक्ष बबली आर्य, जयपुर से मांगीलाल सैनी, महावीरजी से सोनदेई सैनी के साथ अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे का आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से सम्मान

लातूर। महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता एवं लेखक तथा ''**संस्कृति रक्षक मंच**'' के अध्यक्ष डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे विद्याभास्कर द्वारा लिखित तथा अभिव्यक्ति प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित ''**स्वामी दयानन्द ने कहा था**'' इस पुस्तक का लोकार्पण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाईलालसिंह जी के हाथों किया गया। नवी मुंबई वाशी के आर्य समाज में हुए इस कार्यक्रम में डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डेजी को सम्मान-पत्र और पचास हजार की गौरवनिधि देकर सम्मानित किया गया।

श्री मिठाईलाल सिंहजी ने डॉ. लोखण्डे के सामाजिक व साहित्यिक कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि - रेणापूर जैसे एक छोटे से कस्बे में जन्म लेकर उन्होंने संपूर्ण आर्य जगत् में ऋषि दयानन्द और वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार द्वारा अपनी एक नई पहचान बनाई है। उन्होंने वाणी

www.thearyasamaj.org

और लेखनी के माध्यम से सामाजिक सुधार और राष्ट्रीयता को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया है। देश के सैकड़ों गावों में आर्यत्व का प्रचार किया तथा दर्जन से अधिक हिंदी और मराठी भाषा में पुस्तकें लिखी है। वे इसी तरह ऋषि दयानन्द के विचारों को जनसाधारण तक पहुंचाने का कार्य करते रहे उनको हमारा सदैव सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डेजी ने अपने सम्मान के उत्तर में मुंबई की सभी समाजों को आश्वस्तता के साथ कहा कि जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं तब तक मैं भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अहर्निश प्रचार प्रसार करता रहूंगा। मैं पं. लेखराम तो नहीं बन सकता पर उनके पदचिह्नों पर तो चल सकता हूं। मुंबई की समाजों का आशीर्वाद जब मुझ पर है तो मैं क्यों पीछे हटूं? मैंने "**संस्कृति रक्षक मंच**" की स्थापना कर सैकड़ों शिक्षकों, विद्यार्थियों और बुद्धिजीवियों को इस कार्य में लगाया है। हैदराबाद मुक्ति संग्राम का इतिहास (हिन्दी-मराठी) में लिखकर आर्य समाज के योगदान को जन सामान्य तक ले जाने का मैने प्रयत्न किया है। इस समय ५० के करीब शिक्षक और प्राध्यापक मेरे निर्देश पर स्कूलों और कॉलेजों में जाकर आर्यवीरों के बलिदान की गाथा को प्रस्तुत करते हैं। यह कार्य लगभग १५ वर्षों से करता चला आ रहा हूं। मेरे द्वारा हर वर्ष विद्यार्थियों के लिए वक्तृत्व प्रतियोगिता आयोजित की जाती है, जिनमें सैकड़ों नौ जवान भाग लेते हैं। आर्यों का आशीर्वाद ही मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत है। इस प्रकार का आश्वासन और संकल्प उन्होंने मुंबई आर्य समाजों के पदाधिकारियों के समक्ष व्यक्त किया।

यह सत्कार नई मुंबई की वाशी आर्य समाज के सभाग्रह में सम्पन्न किया गया। इस कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई एवं सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी जिनमें अरुणकुमार अबरोल महामन्त्री, राजकुमार ग्रुप कोषाध्यक्ष, डॉ. जिलेसिंह चौधरी, भीमजी भाई रुपाणी, श्रीमती बिरमीदेवी अग्रवाल, हरिपालसिंह, भारत भूषण, शारदा चन्द्र गुप्त, आर्य प्रधान आ.स. सांताक्रूज, आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी बिजनौर (उ.प्र.) आदि उपस्थित थे।

"गांधीधाम- आर्य जगत् का तीर्थ स्थान"

आर्य समाज गाँधीधाम का '६३वाँ वार्षिक अधिवेशन' हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ

आर्य समाज गाँधीधाम (कच्छ-गुजरात) का "६३वाँ वार्षिक अधिवेशन" दि. १६ से १८ दिसम्बर २०१६ तक बड़े हर्षोल्लास से सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के प्रांगण में आयोजित तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः श्रीमती जान्हवीजी (आचार्य कुलम्-हरिद्वार) के आचार्यत्व में "**आत्मकल्याण महायज्ञ**" सम्पन्न हुआ जिसमें स्थानीय व भारतभर से पधारे हुए १०१ यजमानों ने यज्ञ लाभ लिया। यज्ञ के दौरान आचार्या जान्हवीजी ने यज्ञ का महत्व समझाया व यज्ञ करने से जीवन में होने वाले शारीरिक, मानसिक व आत्मिक लाभ के बारे में विस्तृत विवरण दिया। कार्यक्रम में गुजरात के विविध जिलों व राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व महाराष्ट्र और विदेश से ५०० से अधिक प्रतिनिधि पधारे।

कार्यक्रम की शुरुआत ओम ध्वजारोहण से की गई जिसे स्वामी श्रद्धानन्दजी एवं स्वामी शान्तानन्दजी के करकमलों से फहराया गया। समारोह में विविध सामाजिक विषयों पर सम्मेलन आयोजित हुए - समारोह में उपस्थित विद्वानों ने अपने मंतव्य रखे। पं. कमलेशकुमार अग्निहोत्रीजी (अहमदाबाद), पं. सत्यानन्दजी वेदवागीश (गांधीधाम) आचार्य जान्हवीजी (हरिद्वार), स्वामी श्रद्धानन्दजी (पलवल-हरियाणा), स्वामी शांतानन्दजी सरस्वती (कच्छ), पं. धर्मपाल शास्त्री (मेरठ), ने अपनी ओजस्वी वाणी से सारगर्भित विचार प्रस्तुत कर सभी को लाभान्वित किया। पं. नरेशदत्तजी एवं नरेन्द्रदत्तजी (बिजनौर) ने ईशभक्ति के सुमधुर भावपूर्ण भजनों से सभी को भावविभोर कर दिया। **स्वामी श्रद्धानन्दजी ने अपने अनुभवों से आर्य समाज गांधीधाम को आर्यजगत् का तीर्थस्थान बताया।**

मुंबई के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुनील मानकटालाजी के हस्तों आर्य सेवा दल की स्थापना की गई- इस निःशुल्क आर्य सेवा दल में नगर के ५०० सदस्य रहेंगे जो कच्छ एवं आसपास के क्षेत्र में कुदरती आपदाओं में राहत, बचाव व सेवा कार्य करेंगे।

अमेरिका के मिशिगन स्थित डॉ. चमनलाल गुप्ताजी (जो वैदिक विद्वान, रिटायर्ड प्रिन्सिपल हैं) की पुस्तक '**हिन्दुत्व**' की भारतीय आवृत्ति का विमोचन चन्डीगढ़ से पधारी हुई उनकी बहन सुदेश गुप्ताजी के करकमलों से हुआ। यह पुस्तिका आर्य समाज गांधीधाम द्वारा प्रकाशित की गई है।

गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री हसमुखभाई परमार (टंकारा), बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रणजीतसिंह परमार (राजकोट), गुजरात नड़ियाद के पूर्व सांसद व आर्य समाज गांधीधाम के संरक्षक डॉ. के.डी. जेसवाणीजी विशेषरूप से इस अवसर पर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में समय-समय पर डॉ. के.डी. जेसवाणीजी, डॉ. महेश पारीखजी, श्री अखिलेशजी, श्री मोहनभाई जांगिड, श्री जयंतीभाई कोरिंगा ने आर्य समाज गांधीधाम के सेवाकार्यों के बारे में अपना वक्तव्य दिया।

पधारे हुए महानुभावों को आर्यसमाज गांधीधाम द्वारा संचालित प्रकल्पों जीवनप्रभात, डी.ए.वी. स्कूल वॉकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, ऑक्सीजन बैंक, श्रद्धानन्द पुस्तकालय और कंडला बंदरगाह की यात्रा करायी गई। प्रधान श्री वाचोनिधि जी आचार्य ने आर्य समाज की स्थापना के १९८६ से लेकर आज तक के ३० वर्ष के इतिहास का संक्षिप्त विवरण दिया और मुख्य पहलुओं पर बनायी वीडियो बताई गई।

आर्य समाज गाँधीधाम द्वारा संचालित जीवनप्रभात (निराधार बालकों का आश्रय स्थान) के बच्चों ने और डी.ए.वी. स्कूल के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें देशभक्ति के गीत, विविध प्रेरणात्मक प्रसंग, भारतीय संस्कृति की महत्ता दर्शाते प्रसंग इत्यादि मुख्य रहे। बच्चों के कार्यक्रम की सभी ने प्रशंसा की व पुरस्कार भी दिये।

कार्यक्रम के अंत में आर्य समाज के प्रधान वाचोनिधि आचार्य ने सभी पदाधिकारियों, डी. ए.वी. स्कूल के स्टाफ, दानदाताओं, विद्वतजनों, कार्यकरों और व्यवस्था में सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। बाहर से पधारे एवं उपस्थित सभी महानुभवों का हार्दिक आभार प्रकट किया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

इस अवसर पर वैदिक संसार इन्दौर वेद प्रचार वाहन के साथ वृहद श्रृंखला में वैदिक साहित्य लेकर उपस्थित हुए तथा वैदिक साहित्य और महापुरुषों के चित्रों की विशाल प्रदर्शिनी लगाकर आयोजन की शोभा में अभिवृद्धि कर उपस्थितों को साहित्य सुलभ करवाया।

www.thearyasamaj.org

विशाल १९वां राष्ट्रकथा शिविर सम्पन्न

श्री वैदिक मिशन ट्रस्ट, प्रान्सला, जिला- राजकोट के प्रमुख सूत्रधार श्रीमान् धर्मबन्धु जी द्वारा आयोजित दिनांक २४ दिसम्बर से १ जनवरी २०१७ तक भव्य एवं विशाल राष्ट्रकथा शिविर विविध लक्ष्यों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उपरोक्त, आयोजन में देश के लगभग सभी राज्यों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। दूरस्थ राज्यों, आसाम, मणिपुर, जम्मू-कश्मीर, छत्तीसगढ़ से शिविर में उपस्थिति विशेष आकर्षण तथा शिविर को राष्ट्रकथा का स्वरूप देते हुए सार्थक थी। लगभग दस हजार छात्रा-छात्राएँ शिविर में सम्मिलित हुए।

प्रातः ५ बजे से विभिन्न आसन-प्राणायाम, व्यायाम तथा आत्मरक्षार्थ शिक्षण हेतु छात्र-छात्राओं के पृथक-पृथक स्थान पर सत्र आयोजित किए गए। प्रातः ८ बजे पं. ओमप्रकाश शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ पश्चात् प्रेरणादायी उद्‌बोधन सत्र भोजनावकाश पश्चात् २ बजे से पांच बजे तक, देश के दूरस्थ स्थानों से पधारे गणमान्य महानुभावों के द्वारा विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान किया गया। रात्रिकालीन सत्र में सांस्कृतिक आयोजन सम्पन्न हुआ। छात्र-छात्राओं ने अपनी-अपनी प्रान्तीय भाषाओं में प्रभावी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। शिविर की गतिविधियों के प्रति छात्र-छात्राओं का उत्साह देखते ही बनता था।

सभी सत्रों का प्रारम्भ पं. भानुप्रकाश जी शात्री, बरेली के सुमधुर राष्ट्रगीतों के माध्यम से तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुणानुवाद से होता था।

कार्यक्रम के संचालक के रूप में श्री धर्मबन्धु जी, स्वामी सुरेन्द्रनन्द जी सरस्वती तथा जनरल मेहता साहब के द्वारा सुव्यवस्थित शिविर को संचालित किया गया।

शिविर स्थल पर इसरो केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तटरक्षक बल, नौसेना, त्वरीत कार्य बल, नेशनल आपदा राहत एवं बचाव बर्स द्वारा प्रदर्शनी लगाकर अपनी कार्यशैली तथा अपने द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले उपकरणों की जानकारी से शिविरार्थियों को अवगत करवाया गया। आयोजन की गरिमा तथा भव्यता का आंकलन इसी से किया जा सकता है कि आयोजन में झारखण्ड, मणिपुर, गुजरात के राज्यपाल महोदय, केन्द्रीय विदेश राज्यमंत्री वी.के. सिंह, इसरो गुजरात के चेयरमेन बच्चों के प्रति विशेष आत्मीयता रखने वाले शक्तिमान सीरियल के अभिनेता मुकेश खन्ना, ओलम्पिक खेलों में भारत का मस्तक ऊँचा करने वाली दीपा कर्माकर, आतंकरोधी संगठन के प्रमुख मन्दिर सिंह जी बिट्टा सहित सुरक्षा एजेंसियों के अनेक प्रमुख, गणमान्य वैज्ञानिक, राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी सम्मिलित हुए और विद्यार्थियों को प्रेरणादायी मार्गदर्शन दिया। समय-समय पर विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं को शान्त भी किया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुरुष एवं महिला सदस्य, नौसेना, तटरक्षक बल, नौसेना, त्वरीत कार्यबल तथा एन.डी. आर.एफ. के सुरक्षा अधिकारी एवं जवान वृहद संख्या में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम हेतु मुख्य पाण्डाल लगभग ५० हजार की क्षमता का वर्षा तथा सर्दी से पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने वाला था। जिसमें विशाल मन्च तथा पाण्डाल में चार बड़ी-बड़ी डिस्प्ले स्क्रीन लगी हुई थी। जिससे पाण्डाल के अन्तिम छोर का व्यक्ति भी ठीक प्रकार से देख-सुन सके।

मुख्य रूप से शिविर का आयोजन राष्ट्र निर्माण की भावना को लेकर विद्यार्थियों पर केन्द्रीत था। लगभग १०हजार छात्र-छात्राओं की उपस्थिति, सुरक्षा एजेंसियों के सदस्यों की उपस्थिति इसके अतिरिक्त दूरदस्थ स्थानों से उपस्थित दर्शक, कार्यकर्ताओं तथा प्रान्सला गांव एवं समीपवर्ती क्षेत्रों के लिए एक प्रकार से मेले का वातावरण बना हुआ था। लगभग २०-२५ हजार सदस्यों के लिए बृहद भोजन, प्रातराश व्यवस्था सुव्यवस्थित रूप से की गई। शिविरार्थियों के लिए सीमेन्टेड प्लेटफार्म पर वर्षा एवं सर्दी से बचाव हेतु पर्याप्त तम्बू लगाए गये। ओढ़ने-बिछाने के लिए पर्याप्त बिस्तर, शौचालय-स्नानागार की पर्याप्त व्यवस्था के साथ, पीने के लिए पानी-दूध, चाय-छाछ आदि की व्यवस्था प्रबन्ध था। किसी भी वस्तु की कहीं कोई कमी नहीं थी। गणमान्य अतिथियों के आवास हेतु पर्याप्त पक्की- कुटियाएं थी। उनके भोजन की व्यवस्था आश्रम के स्थायी भोजनालय में थी, किन्तु भोजन सबका एक साथ एक जैसा ही बनता था। भोजन में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। भोजन सबके लिए प्रत्येक समय उपलब्ध रहता था। भोजन खत्म होने वाली कोई बात नहीं रहती थी। महिला एवं पुरुष वर्ग दोनों के लिए भोजन की पृथक-पृथक व्यवस्था थी। टैंकरों से दूध की सप्लाई होती थी। छाछ वहीं पर ताजा बनाई जाती थी। अतिथियों के लिए ताजा मक्खन और गुड़ परोसा जाता था। आटे की पिसाई हेतु भोजनालय में चक्की चलती रहती थी। भोजन सुस्वादिष्ट तथा पौष्टिकतायुक्त समय पर तैयार रहता था। पूड़ी-पपड़ियों का कोई काम नहीं था। पूरे शिविर काल में सभी के लिए रोटियों का व्यवस्थित प्रबंध था। भोजन बनाने-परोसने तथा खाने के लिए बैठने की व्यवस्था वृहद आयोजनकर्ताओं के लिए सिखने लायक थी। कहीं कोई भीड़-भाड़ नहीं, कोई चिख-पुकार, छीना-झपटी नहीं। एक विस्मरणीय ऐतिहासिक आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसके लिए सम्मानीय धर्मबन्धुजी की दूरगामी सोच तथा वसुधैव कुटुम्बकं की भावना को इसका श्रेय जाता है, इस के लिए वे बधाई के पात्र हैं।

शिविर में वैदिक संसार ने वैदिक साहित्य का वृहद स्टाल लगाया, जिसका लाभ शिविरार्थियों, सुरक्षा अधिकारियों एवं जवानों के साथ-साथ दर्शकों, छात्र-छात्राओं के साथ आने वाले अध्यापक वर्ग ने भी उठाया।

प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज ब्यावर के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. अमरसिंह विद्यावाचस्पाति द्वारा विगत मासों का प्रचार कार्यक्रम फतहपुर रोशनाई कानपुर, बहेड़ी, उ.प्र., सोनीपत से १४, चन्डीगढ़ से १६ हरि मण्डावली नई दिल्ली, ब्यावर, जयपुर, जोधपुर में प्रभावी कार्यक्रम रहा। दि. २३ से २५ भुवनेश्वर उड़ीसा, जनवरी ३०-३१ हैदराबाद, १२-१३

www.thearyasamaj.org

बूवानिया अजमेर, १६-१७ जनवरी पन्थ बरखेड़ा में कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

वेद कथा का आयोजन सम्पन्न

ग्राम- मांगरोल, तह.- निम्बाहेड़ा, जिला- चितौडगढ़ (राज.) में पंच दिवसीय वेद कथा का प्रारम्भ आर्य जगत् की विभूति सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से ग्राम में प्रथम बार प्रारम्भ हुआ। प्रात:काल देवयज्ञ, भजन-उपदेश पश्चात् रात्रिकालीन सत्र में सर्दी के व्यापक प्रकोप के उपरान्त भी ग्रामवासियों और समीपस्थ अन्य ग्रामों के निवासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। ग्रामीणों के आग्रह पर पंच दिवसीय आयोजन को बढ़ाकर सप्तदिवसीय किया गया। इस अवसर पर पतंजलि योग समिति निम्बाहेड़ा के सक्रिय सदस्यों ने प्रात: ५ बजे से योग की कक्षाएं भी लगाईं जिसमें भी ग्राम के युवक-युवतियों ने भाग लिया तथा योग कक्षाओं तथा वैदिक यज्ञ को अनवरत् चलाने का संकल्प व्यक्त किया। सुश्री अंजलि आर्या की प्रेरणा से अनेक प्रबुद्धजनों ने दुर्गुण-दुर्व्यसनों का त्याग कर स्वाध्याय, यज्ञ, सन्ध्या आदि का प्रण किया।

इस अवसर पर वैदिक संसार इंदौर द्वारा वेदप्रचार वाहन के साथ साहित्य सेवा तथा प्रभात आयुर्वेदिक संस्थान देवास द्वारा औषधिय सेवा प्रदान की गई। दिनांक १ जनवरी से प्रारम्भ आयोजन का समापन ७ जनवरी को किया गया। आयोजकों द्वारा आयोजन की उत्कृष्ट व्यवस्थाएं की गई। इस अवसर पर अनेक मुस्लिम परिवारों के सदस्य तथा क्षेत्रिय सांसद व गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

वेदानुकुल संन्यास आश्रम की दीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न

ग्राम खाटसूर में दिनांक १४.११.२०१६ को वेद मंदिर ग्राम खाटसूर में श्री पूज्यनीय डॉ. ओमानन्दजी सरस्वती चंदूखेड़ी उज्जैन एवं श्री सतपालजी शास्त्री निवासी बेरछामंडी द्वारा श्री राजारामजी आर्य निवासी ग्राम खाटसूर को संन्यास आश्रम की दीक्षा दी गई तथा उपरोक्त विद्वानों द्वारा श्री राजाराम जी आर्य का नाम स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती नामांकित किया गया। अब यह नाम समाज में प्रचलित रहेगा। इस कार्यक्रम में आर्य समाज प्रधान की श्री सीताराम जी आर्य, श्री रामचन्द्र जी आर्य निवासी ग्राम पगरावदकलां, श्री धर्मसिंह जी आर्य निवासी ग्राम खाटसूर एवं परमपूज्य आर्य मुनी जी ग्राम बेरछा व अन्य ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

साप्ताहिक सामवेद पारायण यज्ञ संपन्न

पिपलियामंडी। स्थानीय आर्य समाज द्वारा ८ जनवरी से प्रारंभ हुवे सामवेद पारायण के सातवें दिन आर्य भवन में भजन व उपदेश हुवे जिसमें वेदाचार्य स्वामी श्रद्धानंद जी ने कहा की वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में मिलता है। आत्मा को जाने बगैर मुक्ति संभव नहीं। बाइबिल ग्रंथों का संग्रह और कुरआन शरीफ मानव रचयित ग्रन्थ है किन्तु वेद की उत्पत्ति ब्रह्म द्वारा हुई है और वह स्वयं प्रमाण है। वेदों से बड़ा कोई शास्त्र विश्व में नहीं। इसमें कट्टरपंथी बनने के विचार नहीं मिलते बल्कि मनुष्य होने की प्रेरणा मिलती है। स्वामीजी ने आगे कहा कि त्योहारों के साथ साथ प्रतिदिन अंश मात्र ही सही लेकिन दान करना चाहिए क्योंकि दान से बड़ा मित्र कोई नहीं होता। क्रोध की अवस्था में विवेक नष्ट हो जाता है इसलिए मानव को अपने जीवन में कर्तव्यों का बोध होना चाहिये। आपने कहा कि महर्षि दयानंद के रचयित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में ३७७ ग्रंथ समाहित है। और स्वतंत्रता के आंदोलन में भी रणबांकुरे अपने थैलों व जेबों मे वेद साहित्य रखते थे जिससे उन्हें राष्ट्रवाद की प्रेरणा मिलती थी। महर्षि दयानंद को १७ बार विषपान कराया गया और उन पर ४० बार प्राणघातक हमले भी किये गए किन्तु वे अपने विचारों से तनिक भी नहीं डिगे। आपने कहा कि परमात्मा एक, निराकार और सर्वव्यापी है। मनुष्य को लोभ नहीं करना चाहिए क्योंकि लोभ हमेशा छलता है और त्याग सदैव फलता है। स्वामीजी ने ये भी कहाकि दुराचारी, पाखंडी और अयोग्य लोगों का कभी सत्कार नहीं करना चाहिये। धर्मात्मा, परोपकारी, सदाचारी और विद्वान् व्यक्ति ही अतिथि होने के हकदार होते है। हरियाणा की सुप्रसिद्ध वेद भजन गायिका अंजलि आर्या ने काफी प्रेरणादायी भजनों की प्रस्तुति देकर खूब दाद बटोरते हुवे कहा कि परमात्मा पूर्ण है और उसकी रचना व ज्ञान भी पूर्ण है। नारी शक्ति ही सृष्टि का आधार है।

आपने कहा कि इस दौर में तांत्रिकवाद हावी है जो प्राणीमात्र के लिए घातक है। प्रतिदिन टेलिविजन पर दिखाई जाने वाली दिखावटी लीलाओं पर तंज कसते हुवे अंजलि ने कहा कि अनगिनत ढोंगी पाखंडी बाबाओं ने धर्म के नाम पर अपना कारोबार चला रखा है। गेरुआ वस्त्रों में आज कई सत्यानाशी समाज की साख पर बट्टा लगाने का काम कर रहे है आपने आशाराम, रामपाल और नित्यानंद जैसे लोगों को ढोंगी बताया और कहा कि संन्यासी तो चलती फिरती अग्नि होता है। तथाकथित बाबाओं ने श्रीकृष्ण जैसे योगी को भोगी बताकर उन्हें चूड़ी बेचने वाला तक बता दिया जो शर्मनाक बात है। इस युग में हम सब राम और कृष्ण को मानते हैं लेकिन राम व कृष्ण की नहीं मानते यही विनाश का कारण है। आपने कहा कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का मिशन सर्वप्रथम महर्षि दयानंद ने ही प्रारम्भ किया था।आडंबरों, कुरीतियों व रूढ़िवादियों को त्यागने तथा बाल विवाह व सतीप्रथा बंद करने के साथ ही विधवा विवाह कराने जैसे क्रांतिकारी राष्ट्रहित कार्यक्रम चलाकर महर्षि ने अपने जीवन को सार्थक किया। उन्होंने ईश्वर की शरण में आ, पहले भगवान को जानिये, और सारे जग को जगा रहा ऋषिवर नाम तुम्हारा जैसे भजनों पर उपस्थित श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो गये।

अंतिम दिवस रविवार को सुबह भी भजनोपदेशक सहित ५१ कुंडीय यज्ञ के माध्यम से कई आहुतियां दी गई। इस धार्मिक आयोजन में बतौर अतिथि सम्मिलित हुवे मप्र शासन के पूर्व मंत्री श्री नरेंद्र नाहटा महर्षि दयानंद द्वारा समाज सुधार की दिशा में किये गये कार्यों को अतुलनीय बताया और वेदों की महत्ता को स्वीकारते हुवे कहा कि वेद मन्त्र और वेदों की ऋचाएं हमारे जीवन और आचरण में होनी चाहिये तभी हमारा ये मनुष्य योनि में आना सार्थक होगा। श्री नाहटा ने ऐसे सर्व कल्याणकारी कार्य के लिये आयोजक मंडल व आर्य समाज पिपलिया मंडी की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की। अतिथि भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष श्री मानसिंह माछोपुरिया ने भी कहा कि वैदिक संस्कृति ही प्राचीन संस्कृति है।

सुखद स्मृतियों को समेटे हुए आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। वैदिक संसार इन्दौर अपने वेद प्रचार वाहन के साथ पहुंचा तथा वृहद वैदिक साहित्य एवं महापुरुषों के चित्रों की प्रदर्शनी लगाकर उपस्थितों को साहित्य सुलभ करवाया। देवास के प्रभात आयुर्वेदिक संस्थान के संचालक श्री प्रेमनारायण पाटीदार भी अपने उत्पादों के साथ उपस्थित रहे। ●

www.thearyasamaj.org

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

दिनांक २१ नवम्बर २०१६ से २० जनवरी २०१७ तक

हमारे सम्माननीय प्रतिनिधि

श्री शंकरलाल जी शर्मा

जांगिड ब्राह्मण कुल गौरव श्री शंकरलाल जी शर्मा, सुपुत्र स्मृति शेष श्री बद्रीनारायण जी शर्मा, निवासी- राधा गोविन्द कालोनी, डहर का बालाजी, जयपुर (राज.), चलभाष- ९४१३२३६८४८

आप उच्च सामाजिक सरोकारों से जुड़े हुए ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ता से समर्पित हैं। दैनिक यज्ञ करना आपके जीवन का अंग बन चुका है। जांगिड ब्राह्मण कुल परिवार में ग्राम-चान्दास, तह.- आमेर, जिला- जयपुर (राज.) जो कि ८० प्रतिशत मुस्लिम बहुल है में जन्में शर्माजी की वर्तमान आयु ८३ वर्ष है। आपका शासन- खुड़ानिया है। आप आई.टी.आई. में वरिष्ठ अनुदेशक पद पर सेवारत रहे। अपने सेवाकाल के समय आप श्री गंगानगर, सीकर आदि में पदस्थ रहे। सीकर में आप अधिकांश समय तक पदस्थ रहे। आप जांगिड ब्राह्मण कुल गौरव, जांगिड संस्कृत वैदिक विद्यालय फतेहपुर शेखावटी के संस्थापक तथा पंचपुत्र पत्रिका के सम्पादक स्मृतिशेष पं. हरिकेशदत्त शास्त्री जी के प्रेरणा से वैदिक धर्म सिद्धान्तों से जुड़े। आपने ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजित होने वाले सांख्य दर्शन तथा योग दर्शन के आठ शिविरों में उपस्थित रहकर दर्शन शास्त्रों का ज्ञान अर्जित किया है। आप राजस्थान की प्रथम स्थापित आर्य समाज किशनपोल बाजार, जयपुर के सक्रिय सदस्य हैं। आप उपरोक्त आर्य समाज में कोषाध्यक्ष, पुस्काध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। वर्तमान में आप उप प्रधान पद पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आप जुझारू, कर्मठ, सेवाभावी, मिलनसार, व्यक्तित्व के धनी सक्रिय व्यक्ति हैं। आप प्रत्येक समय अपने आपको किसी न किसी कार्य में लगाये रखते हैं तथा जो भी जिम्मेदारी लेते हैं उसे प्राण-प्रण से पूरा करते हैं। आप अपने सेवाकाल के समय जहां कहीं भी रहे आर्य समाज और जांगिड ब्राह्मण परिवार की संस्थाओं दोनों से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। आप जांगिड शाखा सभा सीकर के मन्त्री रहे तथा जांगिड ब्राह्मण सेवा समिति डहर के बालाजी में सलाहकार तथा निर्वाचन अधिकारी की सेवाएं दे चुके हैं। अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के तत्कालीन प्रधान श्री ओमदत्त जी शास्त्री के समय में आपने विश्वमित्र अंगिरस जी के साथ महासभा के अनेक संरक्षक सदस्य सीकर क्षेत्र में बनाए तथा महासभा के तत्कालीन प्रधान छोटेलाल जी शर्मा जब सीकर विद्यापीठ में रहे तब आपसे उनका जीवन्त सम्पर्क बना रहा।

आप शारीरिक रूप से समाज सेवा करने के साथ-साथ सामाजिक व्यवस्थाओं तथा वैदिक संसार को मुक्त हस्त से दान भी देते रहते हैं। आप स्वाध्यायशील व्यक्ति होकर लेखन में भी आपकी रुचि है। आपकी धर्म पत्नी श्रीमती विमलादेवी शर्मा (ग्राम चान्दास की पूर्व सरपंच) है तथा आपके चार सुपुत्र श्री चन्द्रशेखर शर्मा, श्री पुष्पेन्द्र शर्मा, श्री महेन्द्र शर्मा तथा श्री देवेन्द्र शर्मा होकर आपके पोते-पोतियों से भरापूरा सुसंस्कारित परिवार है।

आप मोहन कृति आर्ष पत्रकम् से भी लगाव रखते हैं। वैदिक संसार के प्रति आपकी गहन आत्मियता है। आपके प्रयासों से वैदिक संसार जयपुर के अनेक परिवारों में पहुंच रहा है। जिसमें बहुल रूप से जांगिड परिवारों को वैदिक संसार का लाभ प्राप्त हो रहा है तथा प्रत्यक्ष रूप में भी आप वैदिक सिद्धान्तों की प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। आपने जांगिड ब्राह्मण सेवा समिति द्वारा आयोजित ५१ जोड़ों के सामूहिक विवाह में सभी जोड़ों को अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश, आदर्शनित्यकर्म विधि, आर्येद्दिश्य रत्नमाला भेंट की थी। महर्षि दयानन्द रचयित ग्रन्थों को जन-जन के हाथों में पहुंचाना आपके जीवन का अंग है। ८३ वर्ष की आयु अवस्था के उपरान्त भी आपकी सेवा भावना में शिथिलता नहीं आयी होकर वृद्धि हुई है। वैदिक संसार परिवार आपके स्वस्थ शतायु जीवन की कामना करता है। आपके द्वारा वर्तमान में वैदिक संसार के बनाये गये सदस्य निम्नानुसार हैं-

आजीवन- राजस्थान, जिला- जयपुर: श्री हनुमानलाल शिव सहाय जी , (अर्द्धवार्षिक) डहर का बालाजी जयपुर, श्री धर्मराज सुपुत्र श्री बी.एल. जांगिड-मानसरोवर जयपुर, श्री चन्द्रदत्त हनुमान प्रसाद जी जांगिड-सीकर रोड जयपुर।

आजीवन- राजस्थान, जिला- पाली: श्री ओमप्रकाश मदनलाल जी शर्मा- जैतारण।

त्रैवार्षिक- राजस्थान, जिला-जयपुर: श्री रामोतार घासीराम जी सीलक, झोटावाड़ा जयपुर, श्री बेनीप्रसाद चिरंजीलाल जी जांगिड-अम्बावाड़ी जयपुर, श्री ओमप्रकाश सुवालाल जी शर्मा- सीकर रोड जयपुर, श्री मनोहरलाल गोरधन काल जी जांगिड- चांदास, श्री नरेन्द्र मोतीराम जी शर्मा- डहर का बालाजी जयपुर, श्री मदनलाल गंगारामजी जांगिड- डहर का बालाजी जयपुर, श्री रामस्वरूप कान्हाराम जी शर्मा- सीकर रोड जयपुर, श्री सूरजमल कान्हाराम जी शर्मा-सीकर रोड जयपुर, श्री सीताराम नारायण जी शर्मा- सीकर रोड जयपुर, श्री रामेश्वर प्रसाद जगन्नाथ प्रसाद जी शर्मा-लोहामण्डी जयपुर, श्री शंकरलाल रूड़मल जी जांगिड- डहर का बालाजी, जयपुर, श्री राजेश कुमार जीवनराम जी शर्मा-सीकर रोड जयपुर, श्री गजानन्द भूरजी गोगोरिया-सीकर रोड जयपुर, श्री महावीर सिंह वासुदेवजी गुप्ता- झोटवाड़ा जयपुर, श्री रामसहाय ओमदत्त जी शर्मा-झोटवाड़ा जयपुर।

वार्षिक- राजस्थान, जिला- जयपुर: श्री रामकृष्ण रामनारायण जी शर्मा, डहर का बालाजी जयपुर, श्री महेन्द्र कुमार दामोदरलाल जी शर्मा-गलता गेट जयपुर, श्री राकेश ब्रजमोहन जी जांगिड, बैनाड़ रोड जयपुर, श्री लालचन्द कल्याणमल जी जांगिड-डहर का बालाजी जयपुर।

आभार-शुभेच्छा

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री शंकरलाल शर्मा जयपुर, श्री जगदीश जी सैनी भरतपुर तथा श्री नन्दनसिंह जी रावत कोटद्वार तथा अन्य सहयोगी दानदाता महानुभावों द्वारा वैदिक संसार को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जो सहयोग किया जा रहा है उसके लिए मैं आप सभी का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ तथा शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ कि आप महानुभाव अधिक से अधिक धनवान, आयुष्यमान, विद्यावान, धर्मात्मा, यशस्वी, पुरुषार्थी, प्रतापी, परोपकारी तथा दानी बनें। जिससे और अधिकाधिक पवित्र कार्य कर अन्तःकरण की पवित्रता में वृद्धि करते हुए पुण्य और यश को प्राप्त कर मोक्ष मार्ग के पथिक बने। पुनः आप सभी का धन्यवाद-हार्दिक आभार.... – **सुखदेव शर्मा**, प्रकाशक वैदिक संसार

www.thearyasamaj.org

श्री जगदीश जी आर्य

सैनी कुल गौरव श्री जगदीश जी आर्य सुपुत्र श्री सोहनलाल जी सैनी, निवासी- सैनी मोहल्ला, कुम्हेर गेट, भरतपुर (राज.) चलभाष- ८०५८५६४२२०।

आप एक जोशीले, युवा, कर्मठ जुझारू तथा सक्रिय व्यक्ति हैं। आपकी धर्म पत्नी श्रीमती बबली आर्या भी वरिष्ठ समाज सेविका हैं, जिन्हें सामाजिक सेवा कार्यों के कारण शासकीय एवं गैर शासकीय स्तर पर अनेक बार पुरस्कृत किया जा चुका है, जिनका प्रेरणास्पद विस्तृत विवरण आगामी अंक में प्रकाशित किया जावेगा। आपका परिवार एक आर्य (श्रेष्ठ) परिवार है आप आर्य समाज से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। आप वैदिक संसार से वर्ष २०१२ में दिल्ली में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में सम्पर्क में आए। आपके परिवार में आर्य संन्यासियों, विद्वानों आदि अतिथियों का आगमन होता रहता है। आप दोनों पति-पत्नी आर्य समाज, सैनी परिवार तथा अन्य अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े होकर समाज से अज्ञान के अन्धकार को दूर कर परोपकारी कार्यों में अपना जीवन सार्थक कर रहे हैं। वैदिक संसार के प्रति आपका गहन स्नेह है। भरतपुर के क्षेत्र में आपके प्रयासों से वैदिक संसार अनेक परिवारों में पहुंच कर वैदिक सिद्धान्तों का लाभ प्रदान कर रहा है। आपके द्वारा गत दो वर्षों में बनाये गए सदस्य निम्न हैं।

राजस्थान, जिला- भरतपुरः श्री तेजसिंह पातीरामजी शास्त्री- भरतपुर (त्रैवार्षिक), श्री हीरासिंह देवीसिंह जी आर्य- भरतपुर (त्रैवार्षिक), डॉ. दयालशंकर जी शर्मा भरतपुर (त्रैवार्षिक), श्रीमती गीता देवी सतीशचन्द्र जी मित्तल-भरतपुर (वार्षिक), श्रीमती सुमित्रा ओमप्रकाश जी आर्य- भरतपुर (त्रैवार्षिक), श्रीमती मनोरमा त्यागी- भरतपुर (त्रैवार्षिक), श्री गोविन्द प्रसाद जी आर्य- बयाना (वार्षिक), श्री आदर्श कुमार जीवनलाल जी - भरतपुर (त्रैवार्षिक), श्री चुरामन कृष्णलाल जी आर्य-भरतपुर (वार्षिक), आर्य समाज-भरतपुर (द्विवार्षिक), श्री भरतसिंह भजनलाल जी सैनी, भरतपुर (वार्षिक), श्री उदयभान गिर्राजसिंह जी निडर- भरतपुर (वार्षिक), स्वामी सन्तोषानन्द जी सरस्वती- भुसावर (वार्षिक)।

जिला-धौलपुरः श्री राकेश जी मोदी प्राचार्य-बाड़ी।

श्री नन्दनसिंह जी रावत

क्षत्रिय कुल गौरव श्री नन्दनसिंह जी रावत, सुपुत्र श्री मोहनसिंह जी रावत निवासी- सत्येन्द्र नगर, नजीबाबाद रोड, कोटद्वार, जिला- पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) चलभाष- ९४१०५०९३३९

आप वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित सेवाभावी व्यक्ति हैं आप १९७६ में माध्यमिक शिक्षा के दौरान वैदिक धर्म से जुड़े। आप एन.सी. वैदिक इण्टर कालेज आगरा के विद्यार्थी होने से वैदिक धर्म के सम्पर्क में आए। वर्तमान में आप ५८ वर्ष आयु के होकर वन विकास निगम उत्तराखण्ड में स्केलर के पद पर सेवारत हैं तथा आर्य समाज कोटद्वार के सदस्य हैं एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा गढ़वाल के कोषाध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं प्रदान कर आर्य जगत् की सेवा कर रहे हैं। आपको स्वर-ताल का मौलिक ज्ञान भी है। जिसका उपयोग आप परमात्मा के गुणानुवाद तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर गीत-भजन प्रस्तुत करते हैं। आप वैदिक संस्कारों को सम्पादित करवाने हेतु भी सेवाएं देते हैं। आप अखिल भारतीय पंचाग सुधार समिति के सक्रिय प्रचारक भी हैं। आपकी धर्म पत्नी श्रीमती उर्मिला रावत (गृहिणी) है। आपके दो सुपुत्र चि. भवभूति रावत तथा चि. दिव्यांश रावत तथा एक सुपुत्री कु. सुमेधा रावत हैं। आप वैदिक संसार के प्रति गहन आत्मियता रखते हैं। आपके सहयोग से ही वैदिक संसार दूरस्थ उत्तराखण्ड के अनेक परिवारों में पहुंचकर वैदिक सिद्धान्तों का लाभ जन-जन को पहुंचा रहा है। आपके द्वारा वैदिक संसार के बनाए गए वार्षिक सदस्य निम्न हैं-

उत्तराखण्ड, जिला-पौड़ी गढ़वालः श्री सुरेशचन्द्र जी राणा- छोटी गोदी (दुगड्डा) (त्रैवार्षिक), श्री राजेन्द्र सिंह जी आर्य- शिवपुर, श्री आशुतोष जी वर्मा- कोटद्वार स्मृति शेष श्री खुशहालसिंह जी दीवान- ग्रास्टन गंज, आर्य समाज- ध्रुवपुर, श्री मनमोहनसिंह जी- घमण्डपुर, पं. धीरजलालजी आर्य-खूनीबड़, श्री जितेन्द्र कुमार लालमणि जी-उत्तरी झण्डी चौड़ , श्री मदनलालजी आर्य-शिवपुर, श्री रविन्द्रकुमार जी काण्डा, सुश्री कल्पेश्वरी देवी- पंचपुरी, श्री वासुदेव विमल जी-सेरा मल्ला पट्टी सावली, श्री महेश घिल्डियाल जी-कोटद्वार, श्री सूरवीरसिंह जी खेतवाल- ध्रुवपुर, श्री चन्द्रभानु प्रकाशजी-पोखड़ा, श्री बृजमोहनसिंह जी नेगी- कोटद्वार, सुश्री मंजूदेवी जी-कोटद्वार, श्री औतारसिंहजी नेगी- उमरावपुर, श्री उमानन्द जी खेतवाल- शिवपुर।

हरियाणा, जिला- गुड़गांवः श्री वीरेंन्द्र सिंह जी रावत- गुड़गांव।

उत्तरप्रदेश, जिला- बिजनौरः श्री धर्मवीरसिंह जी- बिजनौर। श्री विजयप्रसाद जी-नगीना। (सभी वार्षिक)

वैदिक संसार के अन्य सहयोगी महानुभाव निम्न है

आजीवन-गुजरात, जिला-बड़ौदाः श्री बनवारीलाल बजरंगलाल जी शर्मा, दन्तेश्वर बडौदा।

जिला-अहमदाबादः श्री महावीरप्रसाद पालारामजी जांगिड-मेघाणी नगर अहमदाबाद, श्री सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल, प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा-अहमदाबाद।

राजस्थान, जिला कोटाः श्री सांवरमल लालचन्द जी जांगिड-इन्दिरा कालोनी कोटा, श्री विद्याप्रकाश मनोहरलाल जी जांगिड-अग्रसेन नगर कोटा।

स्वैच्छिक अनुदान

राजस्थान, जिला जयपुरः श्री पुरुषोत्तम दास हरिकिशन जी गोठवाल-कबीर मार्ग जयपुर।

जिला-कोटाः श्री अर्जुनदेव रामलाल जी चड्ढा, प्रधान-जिला आर्य प्रतिनिधि सभा-कोटा, श्री चन्द्रमोहन बसन्तीलाल जी शर्मा-कोटा, श्री राजेन्द्र कुमार जी सक्सेना-कोटा। श्री शिवनारायण मांगीलाल जी उपाध्याय-कोटा।

गुजरात, जिला-अहमदाबादः श्री ओमप्रकाश गणपत जी शर्मा-नरोड़ा अहमदाबाद।

त्रैवार्षिक

राजस्थान, जिला-जयपुरः श्री हरिबक्श जी जांगिड-सिन्धी कालोनी जयपुर।

जिला- चितौड़गढ़ः श्री कैलाशचन्द्र भागीरथ जी जाट-मांगरोल, श्री रामनारायण कालूराम जी जाट-लक्ष्मीपुरा (मांगरोल)।

गुजरात, जिला-बडौदाः श्री सागरमल लालचन्द जी जांगिड-बडौदा।

जिला-अहमदाबादः सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल-नरोड़ा अहमदाबादा, श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा-अहमदाबाद।

उत्तरप्रदेश, जिला-बलियाः श्री लालसाहब विश्वनाथ जी शर्मा-बनकटा बाँय।

उत्तराखण्ड, जिला-देहरादूनः श्री उम्मेदसिंह जी विशारद, वैदिक प्रचारक-गढ़निवास मोहकमपुर।

मध्यप्रदेश, जिला-भोपालः श्री जगदीश रामचन्द्र जी शारड़ा-बैरसिया।

जिला-मन्दसौरः श्रीमती हंसा नरेश जी पाटीदार-पिपलिया मण्डी।

जिला-रायसेनः श्री रामभरोसे गोपीप्रसाद जी आर्य-कामतौन।

www.thearyasamaj.org

वार्षिक

मध्यप्रदेश, जिला -इन्दौर: श्री अनिल जी डाकवाले, सुपुत्र-श्री जी. एन. डाकवाले-इन्दौर-१२, श्री देवनारायण सिद्धनाथ जी सोनी-इन्दौर-१६।

जिला-धार: श्री ओमदत्त जी आर्य-बगड़ीपुरा (सुन्द्रेल)

जिला-मन्दसौर: श्री बद्रीलाल हीरालाल जी लौहार-बूढ़ा, श्री मनुदेव जी आर्य-खेड़ाखदान, श्री प्रधान/मन्त्री जी आर्य समाज-लूनाहेड़ा, श्री ओंकारलाल गंगाराम जी शर्मा-बरखेड़ा पन्थ, श्री दशरथ कुमार आनन्दीलाल जी पाटीदार-खड़पालिया, श्री राकेश रमेशचन्द्र जी पाटीदार-साबाखेड़ा।

जिला-जबलपुर: श्री शिवकुमार दमड़ीलाल जी सत्यार्थी-जबलपुर, श्री योगेन्द्र किशनलाल जी आर्य-आर्य समाज गंजीपुरा, जबलपुर।

जिला-ग्वालियर: श्रीमती भगवतीदेवी-गौसपुरा, ग्वालियर।

जिला-उज्जैन: श्री अरुणकुमार अजयकुमार जी आर्य-उज्जैन।

जिला-रतलाम: श्री सरदारसिंह भूपसिंह जी चौहान-रतलाम।

जिला-भोपाल: श्री योगेन्द्र कुमार हरिशंकर जी आर्य-कोलार रोड़ भोपाल।

जिला-रायसेन: श्री मनीराम आनन्दीलाल जी चौहान-सिकतला, आर्य समाज-बाड़ी, श्री धनराजसिंह जी ठाकुर-हरसिली, श्री राजकुमार जी ठाकुर-घोंट।

राजस्थान, जिला-प्रतापगढ़: श्री छगनलाल जी नागदा-रमावलि।

जिला-चित्तौड़गढ़: मांगरोल दुग्ध उत्पादक समिति-मांगरोल

कर्नाटक, जिला-बेंगलोर: श्री जे.एन. प्रभाकरराव-बसनगुड़ी।

छत्तीसगढ़, जिला-कांकेर: श्री राजाराम अखिलेश जी शर्मा-कांकेर।

हरियाणा, जिला-फरीदाबाद: डॉ. काशीराम जी शर्मा- बल्लभगढ़।

जिला-पानीपत: आचार्य नन्दकिशोर जी-आर्य समाज माडल टाउन पानीपत।

जिला-महेन्द्रगढ़: श्री रामनिवास जी शर्मा-खतरीपुर (नारनौल)। ●

पृष्ठ ३१ का शेष भाग देवपीयु नष्ट...

उपनिषद् में (छा.उ.प.) असुर, मनुष्य और देव तीन प्रकार के लोगों की चर्चा करते हुए उन्हें उपदेश दिया गया है कि असुर दया करें, मनुष्य दान दें और देव वे हैं जो इन्द्रियसंयमी हैं। वास्तव में ब्राह्मण, आर्य व देव के ये श्रेष्ठ गुण और श्रेष्ठ ज्ञान ही हैं जो असुर व देवपीयु उसे नष्ट नहीं कर पाते हैं बल्कि स्वयं ही नष्ट हो जाते हैं-

अव बाधे द्विषन्तं देवपीयुं सपत्ना ये मेऽप ते भवन्तु।
ब्रह्मौदनं विश्वजितं पचामि शृण्वन्तु मे श्रद्दधानस्य देवाः ।।

मैं ज्ञान के द्वार (**द्विषन्तं**) द्वैष करने वाले शत्रु को (**अवबाधे**) अपने से दूर रखता हूँ... द्वैष की भावना को अपने समीप नहीं आने देता, (**देवपीयुम्**) देवों की हिंसक... दिव्य गुणों को नष्ट करने वाली वृत्ति को दूर रखता हूँ (**ये**) जो (**मे**) मेरे (**सपत्नाः**) शत्रु वा रोगरूप शत्रु हैं, (**ते**) वे (**अपभवन्तु**) सब दूर हों। (**विश्वजितम्**) मैं सम्पूर्ण संसार का विजय करने वाले सब शत्रुओं को पराजित करने वाले (**ब्रह्मौदनम्**) ज्ञान के भोजन को (**पचामि**) पकाता हूं अपने में ज्ञान वृद्धि के लिए यत्नशील होता हूं। (**शत्-दधानस्य**) श्रद्धा से युक्त (**मे**) मेरी प्रार्थना को (**देवाः**) ज्ञानी पुरुष (**शृणवन्तु**) सुनें सब देव मुझे ज्ञान भोजन देने का अनुग्रह करें... इनकी कृपा से ही मुझे ज्ञान प्राप्त होगा। इस प्रकार से ज्ञानसंयुक्त होकर ब्राह्मण स्वतः ही देवपीयुओं से अर्थात् दुष्टों से सुरक्षित हो जाता है-

जिव्हा ज्या भवति कुल्मलं वांड्, नाडीका दन्तास्तपसाभिदिग्धाः।
तेभिर्ब्रह्मा विध्यति देवपीयून्हृब्लबलैर्धनुर्भिर्देवजूतैः।.

ऐसे ज्ञान-सम्पन्न ब्राह्मण की (**जिव्हा**) जीभ (**ज्या भवति**) धनुष की डोरी होती है, (**वाक्**) वाणी (**कुलमलं**) धनुष का दंड हो जाती है और (**तपसा अभिदिग्धाः**) तप व तेज से लिप्त (**दन्ताः**) दान्त (नाडीकाः) 'नालीक' नाम बाण हो जाते **हैं**। ये ऐसे बाण हैं जो न-अलीक अर्थात् झूठे नहीं हैं बल्कि अवश्य ही शत्रु को नष्ट करने वाले हैं (**तेभिः**) उनके द्वारा (**ब्रह्मा**) यह ज्ञानी (**देवपीयून्**) देवहिंसकों को (**विध्यति**) बीधता है... नष्ट कराता है (**धनुर्भिः**) धनुषों से बीन्धता है, जो कि (**हृद्बलैः**) हृदय की शक्ति से युक्त है तथा (**दैवजूतैः**) दिव्य शक्तियों से प्रेरित हैं....●

श्री खुशहाल सिंह 'दीवान' जी नहीं रहे

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढ़वाल द्वारा आयोजित शोक सभा में वयोवृद्ध ९७ वर्षीय श्री खुशहाल सिंह दीवान जी ग्रास्टनगन्ज कोटद्वार निवासी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। विभिन्न संगठनों के पदाधिकरियों की उपस्थिति में वैदिक पुरोहित नन्दन सिंह रावत की देख-रेख में वैदिक रीति से मुक्तिधाम कोटद्वार में उनका अन्तिम संस्कार किया गया। उनके पुत्र श्री कन्हैयालालजी ने उनकी चिता को मुखाग्नि दी। शोक सभा को सम्बोधित करते हुए नागरिक मन्व के अध्यक्ष विनोद कुकरेती ने कहा कि दीवान जी जनसरोकारों से जुड़े रहे तथा जीवनभर अन्धविश्वास व सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष करते रहे। भारतीय दलित साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने उनके कार्यों की सराहना करते हुए **उन्हें डॉ. अम्बेडकर नेशनल फेलोशिप अवॉर्ड २०१२ से सम्मानित किया।** १ जनवरी १९२१ में जन्मे दीवान जी ने १९४१ से १९४५ तक **इण्डियन जनरल सर्विस कोर** में सेवा की उसके पश्चात उन्होंने उत्तर प्रदेश पुलिस में सेवारत रहते हुए १९८० में हेड कॉन्स्टेबल दीवान पद से सेवानिवृत्त हुए। वे स्थानीय पेन्शनर वेलफेयर एसोसिएशन के भी सदस्य थे। गत माह ही **पेन्शनर वेलफेयर एसोसिएशन** द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। वे जीवन के अन्तिम दिनों तक स्वस्थ रहे तथा उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन बहुत ही शान से जिया। वे अपने पीछे एक पुत्र तथा तीन पुत्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गये हैं।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा गढ़वाल के प्रधान सुखदेव शास्त्री ने कहा कि दीवानजी महर्षि दयानन्द व डॉ. अम्बेडकर के अनन्य भक्त थे, तथा हमेशा उनके विचारों पर चलते रहे, शोक सभा में परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वे दिवंगत आत्मा को शान्ति व शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे, शोक सभा में श्री दर्शनलाल चौधरी, लक्ष्मीनारायण चावला, रघुवीर सिंह रावत, डॉ. सवलसिंह, राकेश भट्ट, राजेन्द्र सिंह आर्य, हरीश मदूला, सूरवीर खेतवाल, राजेन्द्र सिंह नेगी, सन्तन सिंह, शम्भू प्रसाद, अनीता देवी, इन्दू देवी, ज्योति आदि उपस्थित रहे। दीवान जी वैदिक संसार पत्रिका के वार्षिक ग्राहक भी थे। **इस अवसर पर उनके पुत्र द्वारा वैदिक संसार पत्रिका व आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढ़वाल को पांच-पांच सौ रुपये का सात्विक दान दिया गया।**●

आर्य जगत् की विविध गतिविधियों की चित्रावली

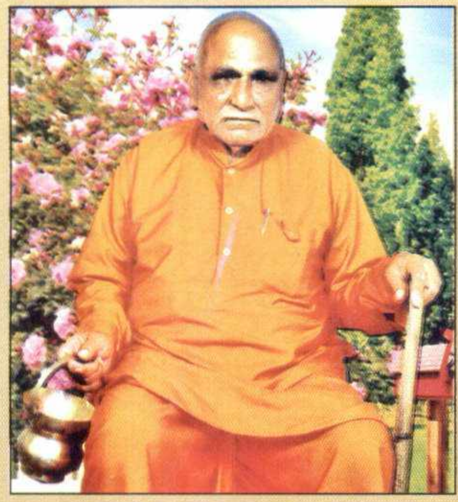

श्री राजाराम जी आर्य खाटसूर जिला-शाजापुर (म.प्र.) ने संन्यास दीक्षा लेकर स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती नाम पाया

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी, लातूर का सम्मान मुंबई में करते हुए प्रधान श्री मिटाईलाल सिंह जी, अरूण कुमार अबरोल व गणमान्य पदाधिकारी

आर्य समाज गान्धीधाम के ६३वें वार्षिकोत्सव पर डॉ. के.डी. जेसवानी जी, नड़ियाद का सम्मान आचार्य वाचोनिधि जी एवं साथियों द्वारा

आर्य समाज गान्धीधाम के पदाधिकारियों द्वारा मुम्बई के उद्योगपति सुनील मानकटाला जी का सम्मान

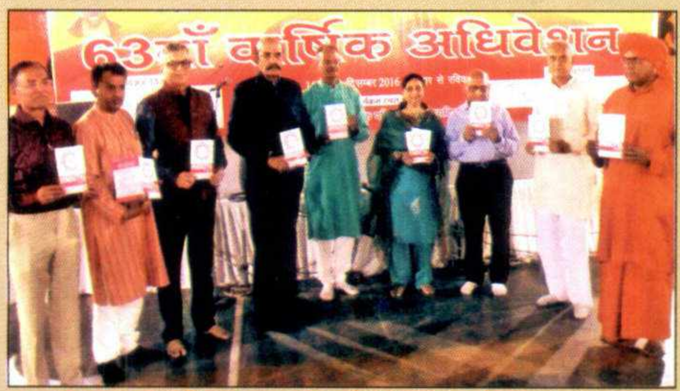

आर्य समाज गान्धीधाम के ६३वें वार्षिकोत्सव पर हिन्दुत्व पुस्तक का विमोचन गणमान्यजनों द्वारा

भरतसिंह जी सैनी भरतपुर को सेवानिवृत्ति पर सामवेद भेंट करते वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा

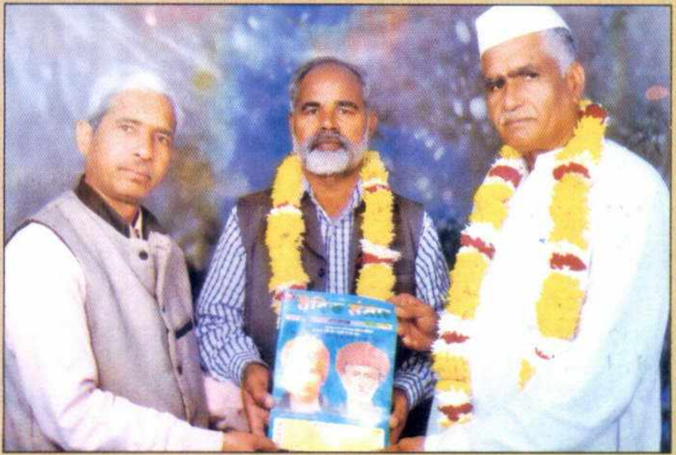

भरतसिंह जी सैनी को वैदिक संसार की प्रति भेंट करते वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा एवं प्रतिनिधि जगदीश आर्य, भरतपुर

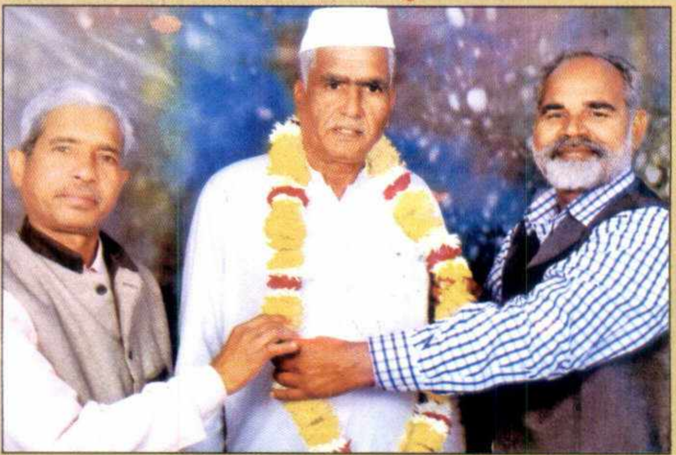

वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का भरतपुर नगर आगमन पर भावभीना सम्मान करते भरतसिंह जी सैनी एवं जगदीश जी आर्य

www.thearyasamaj.org

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उनति करना- महर्षि दयानन्द सरस्वती

नवीन दर्शन योग साधना आश्रम का निर्माण कार्य प्रगति की ओर अग्रसर

मान्यवर, सादर नमस्ते।

अभ्युदय (लौकिक उपलब्धियां) और निःश्रेयस (मोक्ष) वैदिक भारतीय संस्कृति की विरासत है और इसको आत्मसात् किए बिना मानव जीवन की सफलता असम्भव है। अतः इसकी रक्षा और वृद्धि हम सबका एक अनिवार्य कर्त्तव्य बन जाता है। इसी उद्देश्य से दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, गुजरात की ओर से 'दर्शन योग साधना आश्रम' के नाम से एक नई और विशिष्ट योजना का शुभारम्भ गीता प्रादुर्भाव की पुण्यभूमि कुरुक्षेत्र, हरियाणा से किया जा रहा है। वहां तीन बीघा भूमि है उसमें ४ साधना कुटिरों का निर्माण कार्य चल रहा है। इस भूमि का क्रय एवं भवन निर्माण हम अपने सीमित संसाधनों से करा रहे हैं। निकट भविष्य में उसमें उच्च स्तरीय साधना का अनुष्ठान आरम्भ हो जाएगा।

अब तक इस पुनीत कार्य में लगभग ३० लाख रुपए राशि व्यय हो चुकी है। आगे साधना आश्रम की प्रारम्भिक आवश्यकताओं हेतु न्यूनतम लगभग ४० लाख रुपए की अपेक्षा रहेगी। हमारा प्रयास यह भी है कि यह लाभ सर्वसाधारण को भी मिले। अतः इसके लिए भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न स्तरों पर साधना आश्रम का निर्माण करने की हमारी योजना है। जिसमें आयुष्मान पुरुषों, माताओं को ऐसा विशेष वातावरण-युक्त स्थान मिलेगा, जहां पर वे निश्चिन्त होकर पूरे मनोयोग से आजीवन या लम्बी साधना कर सकेंगे। इसके साथ नई पीढ़ी को भी विद्या प्राप्ति हेतु समुचित वातावरण उपलब्ध हो सकेगा। अन्य साधारण धार्मिक जनों के लिए भी निरन्तर कार्य होते रहेंगे।

इस अभीष्ट लक्ष्य की सिद्धि के लिए सामूहिक साधना कक्ष, कार्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, स्वागत कक्ष, भोजनालय, यज्ञशाला, अतिथिशाला, गौशाला, कर्मचारी गृह, साधक कुटिर, आचार्य निवास, नलकूप, कृषि यन्त्रालय, पुष्प वाटिका, औषधि वन आदि के लिए पर्याप्त स्थान और भवन की आवश्यकता है। सुहृद आर्य महानुभावों! इसमें आपका मनोबल, कार्यबल तथा अर्थबल का श्रद्धा और स्नेह सहित सहयोग अपेक्षित है। आप प्रथम अपने हृदय में इस योजना को स्थान दें, तदुपरान्त यथा सामर्थ्य सहयोग देकर इस पुनीत कार्य को सफल बनावें। इसके लिए हम आपके नितान्त आभारी रहेंगे।

विपश्यी	ब्रह्मविद्	दिनेशकुमार
स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक प्रबंधक न्यासी	स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती न्यासी	आचार्य दिनेश कुमार न्यासी

ट्रस्ट कार्यालयः दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) मो. ९४०९४१५०११

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'अग्निव'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स २४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गणेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७